मुझको बू है ॥ रँगूं प्रेम से तेरे दिल का य चोला ॥ जिसे ज्ञान से अब किया कुछ रफू है ॥ न पाला पड़े नफसे शैतांसे मुझको तेरे दास की अब यही आरजू है ॥ ८०१ ॥

प्रभू प्रेम एक शरबते दिलकशा है ॥ गुनह के मरीजों कि नांदर दवा है ॥ जो प्रेम एक बारी सिदक दिलसे पीया ॥ गुनह के मरज से तो हुकमन सफाहै॥सिदक दिल से इक बार पी कर तो देखो खुदा के लिये मेरी यही इलतजा है ॥ फँसा जोगुनह में निकलता है मुश्किल ॥ य जालम बुरी रूह के हक में वबा है ॥ जो निकला नफस की गुलामी से यारो ॥ उसे मरहबा मरहबा मरहबा है ॥ फिदा हूं हरंदाज पर उसके मैं भी ॥ खुदा को ही जिसने दिल अपना दिया है ॥ गनी होगया जब मिला जिस गदा को ॥ प्रभू प्रेम क्या नुस्खये कीमियाँ है फदा तूभी विश्वासी हो अब खुदा पर ॥ न ला काम गफलत् को अब देर क्या है ॥ ८०२ ॥

अजब तेरा कानून देखा खुदाया ॥ जहां दिल दिया फिर वहीं तुझकोपाया ॥ न यां देखा जाता है मंदिर व मसजिद फकत यह कि तालब सिदक दिल से आया ॥ जोतुझपै फिदा दिल हुआ एक बारी ॥ उसे प्रेम का तूने जलवा दिखाया ॥ तेरी पाक सीरत् क आशक हुआ जो ॥ वही रंग रँगा फिर जो तूने रँगाया ॥ है गुमराह जिस दिल में बाकी खुदी है ॥ मिला तुझसे जिसने खुदी को गँवाया ॥ हुआ तेरे विश्वासी को तेरा दरशन ॥ गदा को दुरे बेबहा हाथ आया ॥ ८०३ ॥

जलवए हक जहां जिस दिल में नमूदार हुआ ॥ खुद को सदकह किया रुसवा सिरे बाजार हुआ ॥ जिसने पाया नहीं मुमकिन कि वह खामोश रहे ॥ खुद बखुद जलवए हक बाइसे इजहार हुआ ॥ काशिश उलफते दुनिया है बहुत सद्दे राह ॥ जिसने दफा इसको किया वही खबरदार हुआ ॥ भक्ती और प्रेम के फूलों से सजा गुलशने दिल ॥ इक नये तरज क गुलदस्तए बेखार हुआ ॥ डूबा वह दिल जो फँसा उलफते

दुनियावी में ॥ जिसने दिल हक को दिया वही बशर पार हुआ ॥ तूभी विश्वासी शरण ले उसी हकतालाकी ॥ जिसको लेकरही हर एक पापी का उद्धार हुआ ॥ ४०४ ॥

ग़ज़ल।

समझ बूझ दिल खोज पियारे आशक होकर सोना क्या ॥ जिन नेनौं से नींद गँवाई तकिया लेफ बिछौना क्या ॥ रूखा सूखा राम क टुकड़ा चिकना और सलोना क्या ॥ कहत कमाल प्रेम के मारग शीश दिया फिर रोना क्या ॥ ४०५ ॥

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ॥ क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ॥ झूठे जग में दिल ललचाकर असल वतन् क्यों छोड़ दिया ॥ कौड़ी को तू खूब सँभाला लाल रतन् क्यों छोड दिया ॥ जिहिं सुमिरन ते अति सुख पावें सो सुमिरन क्यों छोड दिया॥खालसइक भगवान भरोसे तन मन धन क्यों छोड दिया॥

राग आसा।

प्रभु को सुमिर सुमिर मन मेरे ॥ पाप कटें सभ तेरे ॥ नाम दान असनान नरार्थे जब प्रीत नहीं मन तेरे ॥ जात पात की बात न पूछें पूछें काज भलेरे ॥ जिन करतार अकाल पछाना सोई जात उचेरे ॥ दो दिनके सुख कारन मूरख पावत उमर बखेरे ॥ गंग यमुन काशी बन जंगल हर घट मों हर नेरे ॥ पर जो उस को ढूंढ़न जावत ऊजड फिरत अँधेरे ॥ सांच त्याग मिथ्या जिन पकडी अति उन दुःख सहेरे ॥ खालस जिन भगवान पछाता हम तिनके हैं चेरे ॥ ४०७ ॥

राग गौरी।

साधो मनका मान त्यागो ॥ काम क्रोध संगत दुर्जन की ताते अह निस भागो ॥ सुख दुख दोनों सम कर जाने और मान अपमाना ॥ हर्ष शोक ते रहै अतीता तिन जग तत्व पछाना ॥ अस्तुति निंदा दोऊ त्यागे खोजे पद निरवाना ॥ जननानक यह खेल कठिन है किनहूं गुरमुख जाना ॥ ४८०

साधो रचना राम बनाई ॥ इक बिनशै इक अस्थिर मानै अचरज लख्यो न जाई ॥ काम क्रोध मोह वश प्राणी हरि मूरत बिसराई झूठा तन सांचा कर मान्यो ज्यों सुपना रैनाई ॥ जो दीसै सो सकल विनाशै ज्यों बादर की छाई ॥ जन नानक जग जानो मिथ्या रहो राम शरनाई ॥ ४०९ ॥

राग कान्हरा ।

तुही एक मेरा मददगार है ॥ तेरा आसरा मुझको दरकार है ॥ किये मैंने अपराध बख्शो सभी नहींजिनका कुछभी तो शुम्मार है ॥ कई पतित तारे सुनाऊं मैं क्या क्या बताने में ब्रह्मा भी लाचार है ॥ भगत राम भी दर तेरे पै पडा तू चाहे तो अबहीं बेडा पार है ॥ ४१० ॥

दोहा–कहा करे रसखान को, कोऊ कुटिल लवार ।
जोपै राखन हार है, माखन चाखन हार ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे तृतीयभागः समाप्तः ॥



ओं तत् सत् परमात्मने नमः ।

अथ रागरत्नाकर ।

चतुर्थभागप्रारंभः

अथ ग्रंथ साहिब के शब्द ।

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होय ॥ नवां खंडां विच जाणिये नाल चले सभ कोय ॥ चंगा नाँउ रखायकै यश कीरति जग लेय ॥ जे तिस नदर न आवई तां बात न पुच्छै केय ॥ कीटां अंदर कीट कर दोसीं दोस धरेय ॥ नानक निर्गुण गुण करे गुणवंत्यां गुण देय ॥ तेहा कोय न सुझई जे तिस गुण कोय करेय ॥ १ ॥

जत्त पहारा धीरज सुनिआर ॥ अहरण मत्त वेद हथियार ॥ भौ खल्लां अग्नि तताउ ॥ भांडा भाउ अमृत तित ढाल ॥ घड़ीये शब्द सच्ची टकसाल ॥ जिनको नदर करम तिन कार ॥ नानक नदरीं नदर निहाल ॥ २ ॥

पवन गुरू पाणी पिता माता धरति महत्त ॥ दिवस रात दोय दाई दाया खेलै सकल जगत्त ॥ चंगिआइयां बुरिआइयां वाचै धर्म हजूर ॥ करमी आयो आपणी के नेडै के दूर ॥ जिन्हीं नाम ध्याइया गये मुशक्कत घाल ॥ नानक ते मुख उज्जले केती छुट्टी नाल ॥

राग आसा ।

सो दर तेरा केहा सो घर केहा जित बहि सर्व समाले ॥ वाजेतेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहिं केते तेरे गावणहारे ॥ गावण तुधनूं पवण पाणी बैसंदर गावै राजा धर्म द्वारे ॥ गावन तुधनूं चित्रगुप्त लिख जानण लिख लिख धर्म वीचारे ॥ गावन तुधनूं ईश्वर ब्रह्मा देवी सोहन तेरे सदा सवारे ॥ गावन तुधनूं इंद्र इंद्रासन बैठे देवतियाँ दर नाले ॥ गावन तुधनूं सिद्ध समाधी अंदर गावन तुधनूं साध विचारे ॥ गावन तुधनूं

यती सती संतोषी गावन तुधनूं वीर करारे ॥ गावन तुधनूं पंडित पढ़न रिषीश्वर युग युग वेदां नाले ॥ गावन तुधनूं मोहनियां मन मोहन सुरंगा मच्छ प्याले ॥ गावन तुधनूं रत्न उपाये तेरें अठसठ तीरथ नाले ॥ गावन तुधनूं जोध महाबल सूरा गावन तुधनूं खाणी चारे ॥ गावन तुधनूं खंड मंडल ब्रह्मांडा कर कर रखे तेरेधारे ॥ सेई तुधनूं गावन जो तुध भावन रत्ते तेरे भगत रसाले ॥ होर केते तुधनूं गावन से मैं चित्त न आवन नानक क्या बीचारे ॥ सोई सोई सदा सच साहिब सांचा सांची नाई ॥ है भी होसी जाय न जासी रचना जिन रचाई ॥ रंगीं रंगीं भातीं कर कर जिनसीं माया जिनउपाई ॥ कर कर देखै कीता अपणा ज्यों तिसदी बड़िआई ॥ जो तिस भावै सोई करसी फिर हुकम न करना जाई ॥ सो पातशाह शाहां पति साहिब नानक रहण रजाई ॥ ४ ॥

राग गूजरी ।

काहे रे मन चितवै उद्यम जां आहर हरिजी उपरिआ ॥ शैल पत्थर में जंत उपाये तांका रिजक आगे कर धरिआ ॥ मेरे माधोजी सतसंगति मिले सो तरया ॥ गुरु प्रसाद पर्मपद पाया सूके काशट हरया ॥ जननी पिता लोक सुत वनिता कोय न किसकी धरया ॥ सिर सिर रिजक सँबाहे ठाकुर काहे मन भौ करया ॥ ऊडे ऊड आवैं सै कोसां तिस पाछे बछरे छरया ॥ तिन कवन खलावै कवन चुगावै मन में सिमरन करया ॥ सभ निधान दस अष्ट सिधान ठाकुर कर तल धरया ॥ जन नानक बल बल सद बल जाइये तेरा अंत न पारावरया ॥ ५ ॥

राग आसा ।

तूं घटघट अंतर सर्व निरंतर जी हरएको पुरुष समाणा ॥ इकदाते इक भेखारी जी सभ तेरे चोज बिडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हौं तुध बिन अवर न जाणा ॥ तूं पारब्रह्म बेअंत बेअंत जी तेरे क्या गुण आख बखाणा ॥ जो सेवहिं जो सेवहिं तुधजी जन नानक तिन कुरबाणा ॥ ६ ॥

भई प्राप्त मानुष्य देहुरिया ॥ गोविंद मिलनकी यहतेरी बेरिया ॥ अवर काज तेरे किते न काम ॥ मिल साध संगत भज केवल नाम ॥ सरंजाम लाग भव जल तरन के ॥ जन्म वृथा जात रंग माया के ॥ जप तप संयम धर्म न कमाया ॥ सेवा साध न जान्या हरिराया॥कहु नानक हम नीच करम्मा॥शरणपडे की राखो शर्म्मा॥

राग धनाश्री ।

गगन मय थाल रवि चंद्र दीपक बने तारिका मंडला जनक मोती ॥ धूप मलिआन लो पवन चवरो करे सकल बनराय फूलंत जोती ॥ कैसी आरती होय भव खंडना तेरी आरती अनहदा शब्द बाजंत भेरी ॥ सहँस तव नयन नन नयन हैं तोहि को सहँस मूरत नना एक तोही ॥ सहँस पद विमल नन एक पद गंध बिन सहँस तव गंध इव चलत मोही ॥ सब में जोति जोति है सोय ॥ तिसदे चानण सबमें चानण होय ॥ गुर साखी जोत परगट होय ॥ जो तिस भावै सो आरती होय ॥ हरि चर्ण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहिं आही प्यासा ॥ कृपा जल देहु नानक सारंग को होय जाते तेरे नाइँ वासा ॥ ८ ॥

राग गौरी पूरवी ।

करों विनती सुनो मेरे मीता संत टहिल की बेला ॥ ईहां खाट चलो हरि लाहा आगे बसन सुहेला ॥ औध घटे दिन सुरैना रे ॥ मन गुर मिल काज सवारे ॥ यह संसार विकार संशय महिं तरचो ब्रह्म ज्ञानी ॥ जिसहिं जगाय प्यावे यह रस अकथ कथा तिन जानी ॥ जाको आये सोइ बिहाझहु हरि गुरु ते मनाहिं बसेरा ॥ निजघर महल पावो सुख सहजे बहुर न होयगोफेरा ॥ अंतरयामी पुरष विधाते सरधा मनकी पूरे ॥ नानक दास इहै सुख मांगे मोकों कर संतन की धूरे ॥ ९ ॥

राग श्री ।

मोती तां मंदर ऊसरहिं रतनी तां होहिं जड़ाउ ॥ कस्तूरि

कुंगू अगर चंदन लीप आवै चाउ ॥ मत देख भूला बीसरै तेरा चित न आवे नाउ ॥ हरि बिन जीउ जलबल जाउ ॥ मैं आपणा गुरु पूछ देख्या अवर नाहीं थाउ ॥ धरती तां हीरे लाल जड़ती पलँग लाल जड़ाउ ॥ मोहणी मुख मणी सोहे करे रंग पसाउ ॥ मत देख भूला बीसरै तेरा चित्त न आवे नाउ ॥ सिद्ध होवां सिद्ध लाई रिद्ध आखां आउ ॥ गुप्त परगट होय बैसां लोक राखै भाउ ॥ मत देख भूला बीसरै तेरा चित्त न आवै नाउ ॥ सुलतान होवां मेल लशकर तखत राखां पाउ ॥ हुकम हासल करी बैठा नानका सब वाउ ॥ मत देख भूला बीसरै तेरा चित्त न आवै नांउ ॥ १० ॥

जाको मुशकल अति बणे ढोई कोय न देय ॥ लागू होय दुशमना साक भी भज्ज खले ॥ सभो भज्ज आसरा चुक्कै सभ असराउ ॥ चित्त आवै उस पारब्रह्म लगै न तत्ती बाउ ॥ साहिब निताणिआं का ताण ॥ आय न जाई थिर सदा गुरु सबदीं सच जाण ॥ जेको होवै दुर्बला नंग भूख की पीर ॥ दमडा पल्ले ना पवे ना को देवै धीर ॥ स्वार्थ स्वाउ न को करे ना किछु होवै काज ॥ चित्त आवे उस पारब्रह्म तां निश्चल होवै राज ॥ जाको चिंता बहुत बहुत देही व्यापै रोग ॥ गिरिस्तकुटुंब पलेट्या कदे हर्ष कदे सोग ॥ गोण करे कहुं चहुं कुंट का घडी न बैसन होय ॥ चित्त आवै उस पारब्रह्म तन मन शीतल होय ॥ काम क्रोध मोह बस कीया किरपन लोभ प्यार ॥ चारे किलबिष उन अघकिये होया असुर संहार ॥ पोथी मीत कवित्त कछु कदे न करन धरया ॥ चित्त आवे उस पारब्रह्म तां निमिष सिमरत तरया ॥ सासत सिमृत वेद चार मुखाकर बिचरे ॥ तपी तपीसर योगीया तीर्थ गमन करे ॥ खट करमां ते दुगुने पूजा करता न्हाय ॥ रंग न लग्गी पारब्रह्म तां सरपर नरके जाय ॥ राज मिलक सिकदारीआ रस भोगन विस्तार बाग सुहावे सोहणे चल्ले हुकम अफार ॥ रंग तमासे बहु विधि चाय लग रहिया ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म तां सरप की जून गया ॥ बहुत धनाढ्य अचारवंत शोभा निर्मल रीत ॥ मात पिता सुत

भाइयां साजन संग प्रीत ॥ लशकर तरकस बंद बंद जीउ जीउ सगली कीत ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म तां खड रसातल दीत ॥ कायां रोग न छिद्र कछु नां कछु काढ़ा सोग ॥ मिरत न आवी चित्त तिस अह निस भोगें भोग ॥ सभ कछु कीतोन आपणा जीउ निशंक धरचा ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म जम किंकर बस परचा ॥ कृपा करे जिस पारब्रह्म होवै साधू संग ॥ ज्यों ज्यों ओह वधाइये त्यों त्यों हरि सों रंग ॥ दोहां सिरां का खसम आप अवरन दूजा थाउँ ॥ सतगुरु तुठ्ठे पाइया नानक सच्चा नाउँ ॥ ११ ॥

कीता लोड़िये कम्म सो हरि पै आखिये ॥ कारज देय सवार सतगुरु सच साखिये ॥ संतां संग निधान अमृत चाखिये ॥ भय भंजन मिहरबान दास की राखिये ॥ नानक हरि गुण गाय अलख प्रभु लाखिये ॥ १२ ॥

राग माँझ।

पारब्रह्म अपरंपर देवा ॥ अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ दीन दयाल गोपाल गोविंदा हरि ध्यावो गुरुमुख गाती जी ॥ गुरुमुख मधुसूदन निस्तारे ॥ गुरुमुख संगी कृष्ण मुरारे ॥ दयाल दामोदर गुरुमुख पाइये होर तूं किते न भाती जी ॥ निरहारी केशव निरवैरा ॥ कोट जनां जाके पूजें पैरा ॥ गुरुमुख जाके हिरदे हरहर सोई भगत इकाती जी ॥ अमोघ दर्शन बेअंत अपारा॥ वड समरत्थ सदा दातारा ॥ गुरुमुख नाम जपियें तित तरियें गति नानक विरली जाती जी ॥ १३ ॥

राग गौरी।

जाके वश खान सुलतान ॥ जाके वश है सकल जहान ॥ जाका किया सभ कछु होय ॥ तिससे बाहर नाहीं कोय ॥ कहु बेनती अपने सतगुरु पाहि ॥ काज तुम्हारे देय निबाहि ॥ सभते ऊँच जाका दरबार ॥ सकल भगत जाका नाम अधार ॥ सर्व व्यापत पूर्ण धनी ॥ जाकी शोभा घट घट बनी ॥ जिस सिमरत दुख डेरा ढहे ॥

जिस सिमरत जम कछू न कहे ॥ जिस सिमरत होत मूके हरे ॥ जिस सिमरत डूबत पाहन तरे ॥ संत सभाको सदा जैकार ॥ हर हर नाम जन प्राण अधार ॥ कह नानक मेरी सुनी अरदास ॥ संत प्रसाद मोको नाम निवास ॥ १४ ॥

बड़े बड़े जो दीसहिं लोग ॥ तिनको व्यापै चिंता रोग ॥ कौन बड़ा माया बड़िआई ॥ सो बड़ा जिन राम लिव लाई ॥ भूमिआ भूमि ऊपर नित लुझै ॥ छोड चलै तृष्णा नहीं बुझै ॥ कहु नानक इह तत्व विचारा ॥ बिन हरि भजन नहीं छुटकारा ॥ १५ ॥

राग सोरठ ।

अंतर की गति तुमहीं जानी तुझही पास निबेरो ॥ बखश लेहु साहिब प्रभु अपने लाख खते कर फेरो ॥ प्रभुजी तूं मेरो ठाकुर नेरो ॥ हरि चर्ण शर्ण मोहिं चेरो ॥ बेशुमार बेअंत स्वामी ऊंचो गुनीगहेरो॥काटासिलक कीनो अपनो दासरो तौ नानककहा निहोरो॥

जीय जंत सभ तिसके कीये सोईसंत सहाई ॥ अपने सेवककी आपे राखे पूरन भई बड़ाई ॥ पारब्रह्म पूरा मेरे नाल ॥ गुरु पूरे पूरी सभ राखी होवे सर्व दियाल ॥ अनुदिन नानक नाम ध्याये जीय प्राण का दाता॥अपने दास को कंठलाय राखै ज्यों बारिक पितु माता

राग धनाश्री ।

किते प्रकार न तूटो प्रीत ॥ दास तेरे की निर्मल रीत ॥ जीय प्राण मन धन ते प्यारा ॥ हौं मैं बंध हरि देवन हारा ॥ चरण कमल सों लागो नेह ॥ नानक की है विनती एह ॥ १८ ॥

राग गौरी ।

थिर घर बैसो हरिजन प्यारे ॥ सतगुरु तुमरे काज सवारे ॥ दुष्ट दूत परमेश्वर मारे ॥ जनकी पैज रखी करतारे ॥ बादशाहशाह सब वश करदीने ॥ अमृत नाम महारस पीने ॥ निरभय होय भजो भगवान ॥ साधु संगत मिल कीनो दान ॥ शरण पडे प्रभु अंतरयामी । नानक ओट पकड़ी प्रभु स्वामी ॥ १९ ॥

उबरत राजा राम की शरणी । सर्व लोक माया के मंडल गिर गिर परते धरणी ॥ शास्त्र सिमृत वेद विचारे महा पुरुषन यूँ कह्या बिन हरि भजन नाहीं निस्तारा सूख न किनहूं लह्या ॥ तीनभवन की लक्ष्मी जोरी बूझत नाहीं लहरे ॥ बिन हरि भगत कहा थित पावै फिरतो पहरे पहरे । अनक विलास करत मनमोहन पूरन होत न कामा ॥ जलतो जलतो कभूं न बूझत सकल वृथे बिन नामा । हरि का नाम जपो मेरे मीता इहै सार सुख पूरा । साधु संगत जन्म मरण निवारे नानक जनकी धूरा ॥ २० ॥

माधो हरि हरि हरि मुख कहिये । हमते कछु न होवे स्वामी ज्यों राखो त्यों रहिये॥क्या कछु करे कि करनेहारा क्या इस हाथ बिचारे जित तुम लावो तितही लागा तितही पूरण खसम हमारे॥ करहु कृपा सर्व के दाते एक रूप लव लावहु ॥ नानक की विनती हरि पै अपना नाम जपावहु ॥ २१ ॥

ब्रह्मे गर्व किया नहीं जान्या ॥ वेदकी विपत पड़ी पछतान्या ॥ जहिं प्रभु सिमरे तहीं मन मान्या ॥ ऐसा गर्व बुरा संसारे ॥ जिस गुरु मिले तिस गर्व निवारे ॥ बलि राजा माया अहंकारी ॥ जगन करै बहु भार अफारी ॥ बिन गुरु पूछे जाय पिआरी ॥ हरीचंद दान करै यश लेवै ॥ बिन गुरु अंत न पाया भेवै ॥ आम भुलाय आपे मति देवै ॥ दुर्मत हरना कुश दुराचारी ॥ प्रभु नारायण गर्व प्रहारी ॥ प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥ भूलो रावण मुगध अचेत ॥ लूटी लंका सीस समेत ॥ गर्व गिआ बिन सतगुरु हेत ॥ सहँसबाहू मधु कीट महिषासा ॥ हरनाकुश ले नखहु विधासा ॥ दैत सँहारे बिन भगति अभ्यासा ॥ जरासंध कालयवन संहारे ॥ रक्तबीज कालनेमि विदारे ॥ दैत सँहार संत निस्तारे ॥ आपे सतगुरु शब्द वीचारे ॥ दूजे भाय दैत संहारे ॥ गुरुमुख साँचि भगति निस्तारे ॥ बूडा दुरयोधन पति खोई ॥ राम न जान्या करता सोई ॥ जन को दूख पचे दुखहोई ॥ जन्मेजय गुरु शब्द न जान्या॥ क्यों सुख पावे भर्म भुलान्या ॥ इकतिल भूले बहुरि पछुतान्या ॥

कंस केशी चाणूर न कोई । राम न चीन्हा अपनी पति खोई ॥ विन जगदीश न राखै कोई ।॥ बिन गुरु गर्व न मेट्या जाय ॥ गुरु मति धर्म धीरज हरि नाय ॥ नानक नाम मिलै गुण गाय ॥ २२ ॥

अबमोहिं जलत रामजल पाया ॥ रामउदकतन जलत बुझाया॥ मन मारण कारण वन जाइये ॥ सो जल बिन भगवंत न पाइये ॥ जिहिं पावक सुर नर हैं जारे ॥ राम उदक जन जलत उबारे ॥ भव सागर सुखसागर माहीं ॥ पीव रहे जल निखुटत नाहीं ॥ कह कबीर भजु सारँग पानी ॥ राम उदक मेरी तृषा बुझानी ॥ २३ ॥

माधो जल की प्यास न जाय ॥ जल महिं आग्नि उठी अधिकाय ॥ तूं जलनिधि हौं जल की मीन ॥ जल माहिं रहों जलहिं बिन खीन ॥ तूं पिंजर हौं सुअटा तोर ॥ जम मंजार कहा करे मोर ॥ तूं तरुवर हौं पंखी आहिं ॥ मंद भागी तेरो दर्शननाहिं ॥ तुं सतगुरु हों नौतन चेला ॥ कह कबीर मिल अंत कि बेला २४॥

जब हम एको एक कर जान्या॥तब लोगहिं काहे दुखमान्या ॥ हम अपतहिं अपनी पति खोई ॥ हमरे खोज परो मत कोई ॥ हम मंदे मंदे मनमाहीं ॥ सांझपात काहू सों नाहीं ॥ पतिअपति ताकी नहीं लाज ॥ तब जानहुँगे जब उघरेगो पाज ॥ कह कबीर पति हरि परमान ॥ सर्व त्याग भज केवल राम ॥ २५ ॥

अंधकार सुख कभूं न सोइहै ॥ राजा रंक दोऊ मिलि रोइहै ॥ जोपै रसना राम न कहबो ॥ उपजत विनशत रोवत रहबो ॥ जस देखीये तरुवर की छाया ॥ प्राण गये कहु काकी माया ॥ जसजंती महिं जीउ समाना ॥ मुयेमर्म को काकर जाना ॥ हंसासरवर काल शरीर ॥ राम रसायन पिउ रे कबीर ॥ २६ ॥

जो जन परमित परम न जाना ॥ वा तनहीं वैकुंठ समाना ॥ नाजाना वैकुंठ कहाही ॥ जान जान सभ कहहिं तहाहीं ॥ कहन कहावन नहिं पतियैहै ॥ तौमनमानै जांते हौं मैं जैहै ॥ जबलग मन वैकुंठ की आस ॥ तब लग होय नहीं चरण निवास॥कहु कबीर इह कहिये काहि॥साधु संगत बैकुंठाहिं आहि ॥ २७ ॥

अवर मूये क्या सोग करीजे ।। तो कीजे जो आपन जीजे ।। मैं न मरों मरबो संसारा ।। अब मोहिं मिल्यो जियावन हारा ।। या देही परमल महकंदा ।। तासुख बिसरे परमानंदा ।। कुअटा एक पंच पनिहारी ।। टूटी लाज भरै मतिहारी ।। कह कबीर इक बुद्धि बिचारी ।। ना वह कुअटा ना पनिहारी ।। २८ ।।

स्थावर जंगम कीट पतंगा ।। अनिक जन्म कीये बहुरंगा ।। ऐसे घर हम बहुत बसाये ।। जबहम राम गरभ ह्वैआये।।योगी यती तपी ब्रह्मचारी ।। कबहूं राजा छत्रपति कबहूं भिखारी ।। शाकत मरहिं संत सभजीवहिं ।। राम रसायन रसाना पीवहिं ।। कहकबीर प्रभुकी-रपा कीजे ।। हार परे अब पूरा दीजे ।। २९ ।।

चोआचंदन मरदनअंगा ।। सोतन जले काठ के संगा ।। इसतन धन की कवन बड़ाई ।। धरनिपरै उर बार न जाई ।। रात जो सोवहिं दिन करे काम ।। इक क्षण लेहिं न हरिको नाम ।। हाथ तो ढोर मुख खायो तंबोर ।। मरती वार कस बांध्यो चोर ।। गुरु मति रस रस हरि गुन गावे ।। रामहिं राम रमत सुख पावे ।। किरपा करके नाम दृढ़ाई।। हरि हरि बास सुगंध बसाई ।। कहत कबीर चेतरे अंधा ।। सत्य राम झूठा सब धंधा ।। ३० ।।

जमते उलट भये हैं राम ।। दुख बिनसे सुख किये विश्राम ।। वैरी उलठ भयेहैं मीता ।। शाकत उलट सुजन भये चीता ।। अब मोहिं सर्व कुशल कर मान्या ।। शांत भई जब गोविंद जान्या ।। तन में होती कोटि उपाध ।। उलट भई सुख सहज समाध ।। आप पछानै आपै आप ।। रोग न व्यापै तीनों ताप ।। अब मन उलट सनातन हूआ ।। तब जान्या जब जीवत मूआ ।। कहु कबीर सुख सहज समावो ।। आप न डरो न अवर डरावो ।। ३१ ।।

कंचन सों पाइये नहीं तोल ।। मनदे राम लियाहै मोल ।। अब मोहिं राम अपना कर जान्या ।। सहज सुभाय मेरा मन मान्या ।। ब्रह्मा कथ कथ अंत न पाया ।। राम भगति बैठे घर आया ।। कह कबीर चंचल मति त्यागी ।। केवल राम भगति निज भागी ।। ३२।।

जिहिं मरने सभ जगत त्रास्या ॥ सो मरना गुरु शब्द प्रगास्या अब कैसे मरों मरन मनमान्या ॥ मरमर जाते जिन राम न जान्या॥ मरनो मरन कहै सबकोई ॥ सहजे मरै अमर होयसोई ॥ कहकबीर मन भया अनंदा ॥ गया भरम रह्या पर्मानंदा ॥ ३३ ॥

जाके हरिसा ठाकुर भाई ॥ मुक्ति अनंत पुकारन जाई ॥ अब कहु राम भरोसा तोरा ॥ तब काहूका कवन निहोरा ॥ तीन लोक जाके हैं भार ॥ सो काहे नकरै प्रतिपार ॥ कहकबीर इक बुद्धि विचारी ॥ क्या वश जो विषदे महतारी ॥ ३४ ॥

बिन सत सती होय कैसे नारि ॥ पंडित देखो हृदे बिचारि॥प्रीत विना कैसे बधे सनेह॥जबलग रस तब लग नहिंनेह ॥ साहनिसत करै जीय अपने ॥ सो रमैये को मिले न सुपने ॥ तन मन धन गृह सौंप शरीर ॥ सोई सुहागन कहै कबीर ॥ ३५ ॥

विषया व्याप्या सकल संसार ॥ विषया लै डूबी संसार ॥ रेनर नाव चौड़ कत बोडी ॥ हरि सों तोड़ विषयासँग जोड़ी ॥ सुरनर दाधे लागी आग॥ निकटनीरपशु पीवस न झाग ॥ चेतत चेतत निकस्यो नीर ॥ सो जल निर्मल कथत कबीर ॥ ३६ ॥

जिहिं कुल पूत न ज्ञान विचारी ॥ विधवा कस न भई महतारी ॥ जिहिं नर राम भगति नहिं साधी ॥ जन्मत कस न मुयो अपराधी ॥ मुच मुच गरभ गये किन बच्या ॥ बुड भुज रूप जीवे जग मझ्या ॥ कहु कबीर जैसे सुंदर सरूप ॥ नाम विना जैसे कुब्ब कुरूप॥३७॥

जो जन लेहिं खसम का नाउँ ॥ तिनके सद बलिहारे जाउँ ॥ जो निर्मल निर्मल हरिगुण गावै ॥ सो भाई मेरे मन भावै ॥ जिहिं घट राम रह्यो भरपूर ॥ तिनकी पग पंकज हम धूर । जाति जुलाहा मति का धीर । सहज सहज गुण रमैं कबीर । ३८ ।

जिहिं मुख पांचो अमृत खाये । तिहिं मुख देखत लूकटलाये । इक दुख रामराय काटहु मेरा । अगनि दहै अर गरभ बसेरा । काया बिगूती बहु विध भाँती । को जारे को गड़ले माटी । कहु कबीर हरि चर्ण दिखावहु । पाछेते जम क्योंन पठावहु ॥ ३९ ॥

आपै पावक आपै पवन। ॥ जारै खसम तो राखै कवना ॥ राम जपत तन जर क्यों नजाय ॥ राम नामचित्त रह्या समाय ॥ काको जरै काहि होय हान ॥ नटवट खेलै सारंगपान ॥ कहुकबीर अक्षर दोय भाख ॥ होयगा खसम तो लेगा राख ॥ ४० ॥

ना मैं योग ध्यान चितलाया ॥ बिनवैराग न छूटस माया ॥ कैसे जीवन होय हमारा ॥ जब न होय राम नाम अधारा ॥ कहु कबीर खोजहुं असमान ॥ राम समान न देखों आन ॥ ४१ ॥

जिहिं सिर रच रच बांधत पाग ॥ सोसिर चुंच सवाँरहिं काग ॥ इस तन धन को क्या गरवैया ॥ राम नाम काहेन दृढ़ैया ॥ कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥ यही हवाल होहिंगे तेरे ॥ ४२ ॥

अह निसि एक नाम जो जागे ॥ केतक सिद्धि भये लव लागे साधक सिद्ध सकल मुनि हारे ॥ एक नाम कलिपतर तारे ॥ जो हरिहरे सो होहिं न आना ॥ कह कबीर राम नाम पछाना ॥ ४३ ॥

राग सोरठ।

रे जीव निलज लाज तोहिं नाहीं ॥ हरितजकत काहूके जाहीं ॥ जाको ठाकुर ऊँचा होई ॥ सो जन परघर जात न सोही ॥ सो साहिब रह्या भरपूर ॥ सदा संग नाहीं हरिदूर ॥ कमला चरण शरण है जाके कहु जन का नाहीं घर ताके ॥ सब कोऊ कहै जासु की बाता ॥ सो समर्थ निज पति है दाता ॥ कहे कबीर पूरन जम सोई ॥ जाके हिरदय अवर न होई ॥ ४४ ॥

कौन को पूत पिता को काको। कौन मरै को देय संतापो। हरि ठग जग को ठगौरीलाई । हरिके व्योग कैसे जीवों मेरी माई। कौन को पुरुष कौन की नारी। या तत्व लेहु शरीर विचारी। कह कबीर ठग सों मन मान्या। गई ठगौरी ठग पहचान्या ॥ ४५ ॥

अब मोकों भय राजा रामसहाई ॥ जन्म मरण कट परमगति पाई॥ साधू संगत दियो रलाय ॥ पंच दूत ते लियो छुडाय ॥ अमृत नाम जपोंजप रसना ॥ अमोल दास कर लीनो अपना ॥ सतगुरु कीनो परउपकार ॥ काढ लीन सागर संसार ॥ चरण कमल सों

लागीप्रीत ॥ गोविंद बसै निता नितचीत । माया तप्त बुझ्या अंगार ॥ मन संतोष नाम आधार॥ जल थल पूर रहे प्रभु स्वामी ॥ जत पेखों तत अंतरयामी ॥ अपनी भगति आपही दृढाई ॥ पूरब लिखत मिल्या मेरे भाई ॥ जिस कृपा करे तिस पूरनसाज ॥ कबीर को स्वामी गरीबनिवाज ॥ ४६ ॥

राग गौरी ।

हरि यश सुनहिं न हरि गुन गावहिं ॥ बातनही असमान गिरावहिं ॥ ऐसे लोगन सों क्या कहिये ॥ जोप्रभु किये भगति ते बाहिज तिनते सदा डरानेरहिये ॥ आप न देहिं चुरू भर पानी ॥ तिहिं निर्दहिं जिहिं गंगाआनी ॥ बैठत उठत कुटिलता चालहिं ॥ आप गये औरन हूं घालहिं ॥ छाँड कुचर्चा आन न जानहिं ॥ ब्रह्माहूं को कह्यो न मानहिं ॥ आप गये औरनहूं खोवहिं ॥ आग लगाय मंदिर में सोवहिं ॥ अवरन हँसत आप हैं काने ॥ तिनको देख कबीर लजाने ॥ ४७ ॥

जेते यतन करत ते डूबे भवसागर नहिं तराचोरे ॥ कर्म धर्म करते बहु संयम अहं बुद्धि मन जारचोरे ॥ सास ग्रास को दातो ठाकुर सो क्यों मनों बिसारचोरे ॥ हीरा लाल अमोल जन्म है कौड़ी बदले हारचोरे ॥ तृष्णा तृषा भूख भ्रम लागी हिरदय नाम विचारचोरे ॥ उनमत मान रह्यो मन माहीं गुरुका शब्द न धारचोरे ॥ स्वाद लुब्ध इंद्री रस प्रेरेचो मंद रस लेत विकारचोरे ॥ भर्म भाग संतन संगाने कासट लोह उधारचोरे ॥ धावत योनि जन्म भ्रम थाके अब दुख कर हम हारचोरे ॥ कह कबीर गुरु मिलत महारस प्रेम भक्ति निस्तारचोरे ॥ ४८ ॥

एक जोति एका मिली किंवा होयमहोय ॥ जित घट नाम न ऊपजै फूट मरै जन सोय ॥ सांवल सुंदर रामैया मेरा मन लागा तोहिं ॥ साध मिले सिद्ध पाइये कि यह योग की भोग ॥ दुहुं मिल कारज ऊपजै राम नाम संयोग ॥ लोग जाने यह गीत है यह तो

ब्रह्म विचार ॥ ज्यों काशी उपदेश होय मानस मरती बार ॥ कोई गावै को सुनै हरि नामा चित लाय ॥ कहु कबीर संशय नहीं अंत परम गति पाय ॥ ४९ ॥

कालबूतकी हस्तनी मन बौरारे चलित रच्यो जगदीश ॥ काम सुआय गज वश परे मन बौरारे अंकुश सह्यो शीश ॥ विषय वाच हरि राच समझ मन बौरारे ॥ निरभय होय न हरि भज्यो मन बौरारे ॥ गह्यो न राम जहाज मरकट मुष्टी अनाज की मन बौरारे लीनी हाथ पसार ॥ छूटन को संसा परचा मन बौरारे नाच्यो घर घर बार ॥ ज्यों नलनी सूअटा गह्यो मन बौरारे माया यह व्योहार॥

जैसा रंग कुसुंभ का मन बौरा रे त्यों पसरचो पासार ॥ न्हावन को तीर्थ घने मन बौरा रे पूजन को बहु देव ॥ कह कबीर छूटन नहीं मन बौरा रे छूटन हरि की सेव ॥ ५० ॥

अगिन न दहै पवन नहिं मगनै तस्कर नेर न आवै ॥ राम नाम धन कर संचोनी सो धन कतहुँ न जावै ॥ हमरा धन माधव गोविंद धरणीधर यही सार धन कहिये ॥ जोसुख प्रभु गोविंद की सेवा सो सुख राज न लहिये ॥ इस धन कारण शिव सनकादिक खोजत भये उदासी ॥ मन मुकुंद जिह्वा नारायण परै न जम की फाँसी ॥ निज धन ज्ञान भगति गुरु दीनी तासु सुमति मन लागा ॥ जलत अंभ थंभ मन धावत भ्रम बंधन भय भागा ॥ कहे कबीर मदन के माते हिरदय देख विचारी ॥ तुम घर लाख कोटि अश्व हस्ती हम घर एक मुरारी ॥ ५१ ॥

ज्यों कपि के कर मुष्टि चनन की लुब्ध न त्याग दियो ॥ जो जो कर्म कियो लालच सों ते फिर गरहिं परचो ॥ भगति विन बिरथे जन्म गयो ॥ साधु संगत भगवान भजन विन कहीं न सचु रह्यो ॥ ज्यों उद्यान कुसुम प्रफुल्लित किनहूं न घ्राण लियो ॥ तैसे भ्रमत अनेक योनि में फिर फिर काल हयो ॥ या धन योवन अरु सुत दारा पेखन को जो दियो ॥ तिनही माहीं अटक जो

उरझे इंद्री प्रेर लियो ॥ अवध अनल तन तृण को मंदिर चहुं दिशि ठाट ठयो ॥ कह कबीर भवसागर तरण को पैं सतगुरु ओट लियो॥

राग गौरी पूरवी ।

स्वर्ग वास नहिं वाँछिये डरिये न नर्क निवास ॥ होनाहै सो होय है मनहिं न कीजे आस॥रमैया गुन गाइये जाते पाइये परम निधान॥ क्या जप क्या तप संयमो क्या व्रत क्या अस्नान ॥ जबलग जुगति नजानिये भाव भगति भगवान ॥ संपति देखि न हरषिये विपति देख न रोय ॥ ज्यों संपति त्यों विपति है विधि ने रच्या सो होय ॥ कह कबीर अब जान्या संतन हृदय मँझार ॥ सेवक सो सेवा भले जिहिं घट वसहिं मुरार ॥ ९३ ॥

राग गौरी ।

आस पास घन तुलसी क बिरवा मांझ बनारस गाउँ रे ॥ वाका सरूप देख मोही ग्वारनि मोको छोड न आउ न जाउँ रे ॥ तोहि चरण मन लागो ॥ सारंगधर सों मिलै जो बडभागो ॥ वृंदावन मनहरन मनोहर कृष्ण चरावत गाउँ रे ॥ जाका ठाकुर तुहीं सारंगधर मोहिं कबीरा नाउँ रे ॥ ९४ ॥

लख चौरासी जीय योनि में भ्रमत नंद बहु थाको रे ॥ भगति हेत अवतार लियोहै भाग बड़ो वपुरा को रे ॥ तुम जो कहतहो नंद को नंदन नंद सो नंदन काको रे ॥ धरणि अकाश दशोदिशि नाहीं तब यह नंद कहां थो रे ॥ संकट नहीं परै योनि नहीं आवै नाम निरंजन जाकोरे ॥ कबीर को स्वामी ऐसो ठाकुर जाके माई न बापो रे ॥ ९५ ॥

राग गौरी चेती ।

देवा पाहन तारीयले ॥ राम कहत जन कस न तरे ॥ तारीले गनिका बिन रूप कुब्जा व्याध अजामल तारीयले ॥ चरण बधक जन तेऊ मुक्त भये ॥ हौं बल बल जिन राम कहे ॥ दासी सुत जन विदुर सुदामा उग्रसेन को राज दिये ॥ जप हीन तप हीन कुल हीन कर्म हीन नामे के स्वामी तेऊ तरे ॥ ९६ ॥

सतयुग सत त्रेता यज्ञ द्वापर पूजा चार ॥ तीनों युग तीनों दृढ़े कलि केवल नाम अधार ॥ पार कैसे पायबोरे ॥ मोसों कोउ न कहे समुझाय ॥ जाते आवागमन बिलाय ॥ बहुविध धर्म निरूपिये करता दीसै सब लोय ॥ कवन कर्म ते छूटिये जिहिं साधे सब सिध होय ॥ कर्म अकर्म विचारिये शंका सुन वेद पुराण ॥ संसासद हिरदय वसे कौन हरै अभिमान ॥ बाहर उदक पखारिये घट भीतर विविध विकार ॥ शुद्ध कवन पर होयबो शुचि कुंचर विध व्योहार ॥ रवि प्रकाश रजनी यथा गति जानत सभ संसार ॥ पारस मानो तांबो छुये कनक होत नहिंबार ॥ परमपुरुष गुरु भेटिये पूरवलिखल ललाट ॥ उनमन मन मनही मिले छुटकत बजर कपाट ॥ भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काट विकार ॥ सोई वस रस मन मिले गुण निर्गुण एक विचार ॥ अनिक यतन निग्रह किये टारी नटरै भ्रम फाँस ॥ प्रेम भगति नहीं ऊपजे ताते रविदास उदास ॥

राग आसा ।

पवन उपाय धरी सब धरती जल अगिनि का बंध किया ॥ अंधले दहसिर मूंड कटाया रावण मार क्या बड़ाभया ॥ क्याउपमा तेरी आँकी जाय तू सरबे ॥ पूर रह्या लव लाय ॥ जीय उपाय जुगति हथ कीनी काली नथ क्या बड़ा भया ॥ किस तूं पुरुष जोरू कौन कहिये सर्व निरंतर रम रह्या ॥ नाल कुटुंब साथ वरदाता ब्रह्मा भालण सृष्टि गया ॥ आगे अंत नपायो ताका कंस छेद क्या बड़ा भया ॥ रत्नउपाय धरे क्षीर मथ्या होर भखलाये जिअसी कीया ॥ कहै नानक छपे क्यों छप्या एकी एकी वंड दीया ॥ ९८ ॥

राज मिलक जोबन गृह शोभा रूपवंत जो आनी ॥ बहुत द्रव्य हस्ती अर घोड़े लाल लाख बयआनी ॥ आगे दरगहिं काम न आवहि छोड़ चले अभिमानी ॥ काहे एक विना चित लाइये ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि ध्याइये ॥ महा विचित्र सुंदर आखाड़े रण में जिते पवाड़े ॥ हौं मारों हों बंधों छोडों मुखते एव बबाडे ॥ आया हुकुम पारब्रह्म का छोड चल्या एक दिहाडे ॥

कर्म धर्म जुमति बहु करता करनेहार न जानै ॥ उपदेश करै आप न कमावै तत्व शब्द न पछानै ॥ नांमा आया नांगो जासी ज्यों हस्ती खाक छानै ॥ संत सुजन सुनहु सभ मीता झूठा एह पसारा मेरी मेरी कर कर डूबे खप खप मुये गँवारा ॥ गुरु मिल नानक नाम ध्याया साँच नाम निस्तारा ॥ ५९ ॥

जिस नीच को कोई न जानै ॥ नाम जपत सो चहु कुंट मानै ॥ दर्शन मांगों देहु प्यारे ॥ तुमरी सेवा कौन कौन न तारे ॥ जाके निकट न आवे कोई ॥ सकल सृष्टि वाके चरण मल धोई ॥जो प्राणी काहू न आवत काम ॥ संत प्रसाद ताको जापिये नाम ॥ साधु संग मन सोवत जागे ॥ तब प्रभु नानक मीठे लागे ॥ ६० ॥

उक्ति सयानप कछू न जानां ॥ दिन रैन तेरा नाम बखानां ॥ मैं निर्गुण गुण नाहीं कोय ॥ करन करावन हार प्रभु सोय ॥ मूरख मुगध अज्ञान अविचारी ॥ नाम तेरे की आश मन धारी ॥ जप तप संयम कर्म न साधा ॥ नाम प्रभू का मनहिं अराधा ॥ कछु न जानां मति मेरी थोरी ॥ विनवत नानक ओट प्रभु तोरी ॥ ६१ ॥

चरण कमलकी आस प्यारे ॥ यम किंकर नस गये विचारे ॥ तूं चित आवहिं तेरी मया ॥ सिमरत नाम सकल रोग षया ॥ अनिक दूख देवहिं अवरां को ॥ पहुंच न साकहिं जन तेरे को ॥ दरश तेरे की प्यास मन लागी ॥ सहज आनंद वसै वैरागी ॥ नानक की अरदास सुनीजै ॥ केवल नाम हृदय में दीजै ॥ ६२ ॥

आठ पहर निकट कर जानै ॥ प्रभु का कीया मीठा मानै ॥ एक नाम संतन आधार ॥ होय रहे सभकी पग छार ॥ संत रहत सुनो मेरे भाई ॥ वाकी महिमा कथन न जाई ॥ बरतन जाके केवल नाम ॥ अनंद रूप कीर्तन विश्राम ॥ मित्र शत्रु जाके एक समानै ॥ प्रभु अपने बिन अवर न जानै ॥ कोटि कोटि अघ काटन हारा ॥ दुख दूर करन जीय के दातारा ॥ शूरवीर षचन के बली कमला बपुरी संतन छली ॥ तांका संग बाछहिं सुरदेव ॥ अमोघ

दरश सफल जाकी सेव ॥ कर जोर नानक करे अरदास ॥ मोहिं संतहि टहल दीजै गुण तास ॥ ६३ ॥

भगत वच्छल हरि बिरद आप बनाइया ॥ जहिं जहिं संत अराधहिं तहिं तहिं प्रगटाइया ॥ प्रभु आप लिये समाय सहज सुभाय भगत कारज सारिया ॥ आनंद हरि यश महा मंगल सर्व दुःख विसारिया ॥ चमत्कार प्रकाश दह दिस एक तहिं दर्शाइया नानक पिअंपै चरण जंपै भगत वछल हरि बिरद आप बनाइया६४

थिर संतन सुहाग मरे न जावहे ॥ जाके गृह हरि नाहु सो सद ही रावहे ॥ अविनाशी अविगत सो प्रभु सदा नवतन निर्मला ॥ नाहें दूर सदा हजूर ठाकुर दह दिस पूरन सद सदा ॥ प्राण पति गति यति जाते प्रिय प्रीति प्रीतम भावहे ॥ नानक बखाने गुरु वचन जाने स्थिर संतन सुहाग मरै न जावहे ॥ ६५ ॥

कूड़ राजा कूड़ परजा कूड़ सभ संसार ॥ कूड़ मंडप कूड़ माड़ी कूड़ बैसनहार ॥ कूड़ सोना कूड़ रूपा कूड़ पैनणहार ॥ कूड़ कायां कूड़ कप्पड़ कूड़ रूप अपार ॥ कूड़ मीयां कूड़ बीबी खप्प होये खार ॥ कड़ कड़े नेहु लग्गा बिसरया करतार ॥ किसनाल कीजे दोस्ती सभ जगत चल्लणहार ॥ कूड़ मिट्ठा कड़ माख्यो कूड़ डोबे पूर ॥ नानक बखाने विनती तुध वाझ कूड़ो कूड़ ॥ ६६ ॥

जबलग तेल देवे मुख वाती तब सूझे सभ कोई ॥ तेल जले वाती ठहरानी सूना मंदिर होई ॥ रेबौरे तोहिं घरी न राखे कोई ॥ तूं राम नाम जप सोई ॥ काकी मात पिता कहु काको कवन पुर्ष की जोई ॥ घट फूटे कोउ बात न पूछे काढो काढो होई ॥ देहुरी बैठी माता रोवे खाटिया लेगये भाई ॥ लट छिटकाये तिरिया रोवे हंस इकेला जाई ॥ कहत कबीर सुनोरे संतहु भयसागर के ताई ॥ इस बंदे सिर जुलम होतहै जम नाहिं हटे गुसाई ॥ ६७ ॥

हज्ज हमारी गोमती तीर ॥ जहां वसहिं पीतंबर पीर ॥ वाह वाह क्या खूब गावताहै ॥ हरि का नाम मेरे मन भावताहै ॥ नारद शारद करहिं खवासी ॥ पास बैठी बीबी कमला दासी ॥ कंठे माला

जिहबा राम ॥ सहस नाम लै लै करूं सलाम ॥ कहत कबीर राम गुन गावों ॥ हिंदू तुरक दोऊ समझावों ॥ ६८ ॥

कहा श्वान को सिमृत सुनाये ॥ कहा शाकत पै हरि गुन गाये राम राम राम रमे रम रहिये ॥ शाकत सों भूल नहीं कहिये ॥ कौआ कहा कपूर चुगाये ॥ कहिं बिसीयर को दूध पिआये ॥ सतसंगत मिल विवेक बुद्धि होई ॥ पारस परस लोहा कंचन सोई ॥ शाकत श्वान सभ करे कराया ॥ जो धुर लिख्या सो कर्म कमाया अमृत लै लै नीम सिंचाई ॥ कहत कबीर वाको सहज न जाई ६९ ॥

लंका सा कोट समुंद्र सी खाई ॥ तिहिं रावण घर खबर न पाई ॥ क्या मांगों कछु थिर न रहाई ॥ देखतनयन चल्यो जगजाई ॥ इक लख पूत सवालख नातीं ॥ तिहिं रावन घर दिया न वाती ॥ चंद सूरज जाके तपत रसोई ॥ बैसंदर जाके कपड़े धोई ॥ गुरु मति रामहिं नाम बसाई ॥ अस्थिर रहै न कतहूं जाई ॥ कहत कबीर सुनोरे लोई ॥ राम नाम बिन मुक्ति न होई ॥ ७० ॥

कियो शृंगार मिलन के ताईं ॥ हरि न मिले जग जीवनगुसाईं ॥ हरि मेरो पीर हौं हरि की बहुरिया ॥ राम बड़े मैं तनक लहुरिया ॥ धनि पिर एकै संग बसेरा ॥ सेज एक पै मिलन दुहेरा ॥ धन्य सुहागन जो पिय भावे ॥ कह कबीर फिर जन्म न आवे ॥ ७१ ॥

अंतर मैल जो तीरथन्हावे तिस वैकुंठ नजाना ॥ लोक पतीने कछू न होवै नाहीं राम अयाना ॥ पूजोराम एकही देवा ॥ साँचा न्हावन गुरुकी सेवा ॥ जल के मज्जन जे गति होवै नित नित मेंडक न्हावहिं॥ जैसे मेंडक तैसे ओह नर फिर फिर योनी आवहिं ॥ मनों कठोर मरे बनारस नरक न वाच्या जाई ॥ हरि का संत मरे हाढ़ंबहिं सकली सैन तराई ॥ दिन सुरैन वेद नाहीं शास्त्र तहां बसै निरंकारा कह कबीर नर तिसहिं ध्यावो बावरिया संसारा ॥ ७२ ॥

एक अनेक व्यापक पूरक जत देखों तत सोई ॥ माया चित्र विचित्र विमोहत विरला बूझे कोई ॥ सब गोबिंद है सब गोबिंद है गोबिंद बिन नहिं कोई ॥ सूत एक मणि शत सहस जैसे ओत प्रोत

प्रभु सोई ॥ जलतरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन्न न होई ॥ यह प्रपंच पारब्रह्म की लीला विचरत आन न होई ॥ मिथ्या भ्रम अरु स्वपन मनोरथ सत्य पदारथ जान्या ॥ सुकृत मनसा गुरू उपदेशी जागतही मन मान्या ॥ कहत नामदेउ हरि की रचना देखो हृदय विचारी ॥ घट घट अंतर सर्व निरंतर केवल एक मुरारी ॥ ७३ ॥

राग गूजरी ।

मुस मुस रोवै कबीर की माई ॥ यह बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥ तनना बुनना सभ तज्यो है कबीर ॥ हरि का नाम लिख लियो शरीर ॥ जबलग तागा बाहों बेही॥तबलग बिसरै राम सनेही॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥हरि का नाम लह्यो मैं लाहा॥कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ हमरा इनका दाता एक रघुराई ॥ ७४ ॥

जो राज देहिं तो कवन बड़ाई ॥ जो भीख मँगावहिं तो क्या घट जाई ॥ तूं हरि भज मन मेरे पद निरवान ॥ बहुरि न होय तेरा आवन जान ॥ सब तैं उपाई भर्म भुलाई ॥ जिस तूं देवहि तिसहिं बुझाई ॥ सतगुरु मिले तां संशय जाई ॥ किस हौं पूजो दूजो नजर न आई ॥ एकै पाथर कीजे भाउ ॥ दूजे पाथर धरिये पाउ ॥ जे वह देवता वहभी देवा ॥ कह नामदेव हम हरिकी सेवा ॥ ७५ ॥

दूध तो बछरे थनों बिटारचो ॥ फूल भ्रमर जल मीन बिगारचो ॥ माई गोविंद पूजा कहा ले चढ़ावों ॥ अवर न फूल अनूपम पावों ॥ मलयागिर बेढ़े हैं भुजंगा ॥ विष अमृत बसहिं इकसंगा ॥ धूपदीप नैवेदहिं बासा ॥ कैसे पूज करै तेरी दासा ॥ तन मन अरपों पूज चढ़ावों ॥ गुरु प्रसाद निरंजन पावों ॥ पूजाअरचा आहि न तोरी ॥ कह रामदास कवन गति मोरी ॥ ७६ ॥

अंतर मल निर्मल नहिं कीना बाहर भेष उदासी ॥ हृदय कमल घट ब्रह्म न चीन्हा काहे भया संन्यासी ॥ भरमे भूलीरे जैचंदा ॥ नहीं नहीं चीन्हा परमानंदा॥ घर घर खाया पिंड बधाया खिथा मुंदा माया ॥ भूमि मसान की भसम लगाई गुरु विन तत्व न पाया ॥ काय जपोरे काय तपोरे काय बिलोवो पानी ॥ लख चोरासी जिन

उषाई सो सुमिरो निरवानी ॥ काय कमंडल कापड़ियोरे अठसठ काहि फिराही ॥ षदतत्रिलोचन सुनरे प्राणी कण विन गाहुकिपाही ॥

अंतकाल जो लक्ष्मी सुमिरै ॥ ऐसी चिंता में जो मरै ॥सरपयोनि वल वल औतरै ॥ अरी बाई गोविंद नाम मत वीसरै ॥ अंतकाल जो इस्त्री सुमिरै ॥ ऐसी चिंता में जे मरै ॥ वेसवा योनि वल वल औतरै ॥ अंतकाल जो लड़के सुमिरै॥ ऐसी चिंतामें जे मरै ॥ शूकर योनि वल वल औतरै ॥ अंतकाल जो मंदिर सुमिरै ॥ ऐसी चिंता में जे मरै ॥ प्रेत योनि वल वल औतरै ॥ ॥ अंतकाल नारायण सुमिरै ऐसी चिंता में जे मरै ॥ वदत त्रिलोचन ते नर मुक्ता पीतांबर वाके हृदय वसे ॥ ७८ ॥

राग देवगंधार ।

अब हम चली ठाकुर पहिं हार ॥ जब हम शरण प्रभूकी आई राख प्रभु भावे मार ॥ लोकन की चतुराई उपमा ते बैसंदर जार ॥ कोई भला कहो भावे बुरा कहो हम तन दियोहै ढार ॥ जो आवत शर्ण ठाकुर प्रभु तुमरी तिस राखो किरपा धार ॥ जन नानक शर्ण तुम्हारी हरजी राखो लाज मुरार ॥ ७९ ॥

हरि राम नाम जप लाहा । गतिपावहि सुख सहज अनंदा काटे जम के काहा । खोजत खोजत खोज सुविचारयो हरि संत जनां पहि आहा । तिन्हां प्राप्त यह निधाना जिनके कर्म लिखाहा ॥ से बड भागी स पतिवंते सेई पूरे शाहा । सुंदर सुघड़ सुरूप ते नानक जिन हरि हरि नाम विसाहा ॥ ८० ॥

प्रभु एही मनोरथ मेरा । कृपानिधान दयाल मोहिं दीजै कर संतनका चेरा । प्रातहिं काल लागों जन चरनों निशि बासर दर्शन पावों ॥ तन मन अर्प करों जन सेवा रसना हरि गुन गावों । सांस सांस सुमिरों प्रभु अपना संत संग नित रहिये । एक अधार नाम धन मोरा अनंद नानक वह लहिये ॥ ८१ ॥

राग सोरठ ।

आपे सेवा लांयदा प्यारा आपे भगति उमाहा । आपे गुण गावां

यदा प्यारा आपै शब्द समाहा।आपे लेखण आप लिखारी आपे लेख लिखाहा॥मेरेमनजप रामनामउमाहा ॥ अनुदिनअनँदहोवे बड़भागी केगुर पूरें हरि लाहा ॥ आपे गोपी कान्ह है प्यारा बन आपे गऊ चराहा ॥ आपेसाँवल सुंदर प्यारा आपे वंशीबजाहा ॥ कुवलयापीड़ आप मरांयदा प्यारा कर बालक रूपपचाहा ॥ आपअखाड़ा पायँदा प्यारा कर देखै आप चोजाहा ॥ कर बालक रूप उपायँदा प्यारा चंडूर कंस केस मराहा ॥ आपे ही बल आपहै प्यारा बल भनैं मूरख मुगधाहा ॥ सभ आपे जगत उपायँदा प्यारा बस आपे जुगति हथाहा गल जेवड़ी आपे पायदा प्यारा ज्यों प्रभु खिंचै त्यों जाहा ॥ जो गरबै सो पचशी प्यारे जप नानक भगति समाहा ॥ ८२ ॥

जौलौं भाव अभाव यह मानै तौलौं मिलण दुराई ।।आन आपना करत बिचारा तौलौं बीच बिषाई ॥ माधव ऐसी देहु बुझाई ।। सेवों साधु गहों ओट चरना नहिं बिसरैं मुहुत चसाई ॥ रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी हृदय न आई ॥ प्राण पति त्याग आन तूं रच्या उरझ्यो संग बैराई ॥ शोक न व्यापे आपन थाये साधु संगत बुद्धि पाई ॥ शाकत का बकना एउ जानो जैसे पवन झुलाई ॥ कोट प्राध अछादयो एह मन कहना कछु न जाई ॥ जन नानक दीन शरण आयो प्रभु सब लेखा रखो उठाई ॥ ८३ ॥

तन संतन का धन संतन का मन संतन का कीया ।। संतप्रसाद हरि नाम ध्याया सर्व कुशल तबथीया ।। संतन बिन अवर न दाता बीया ।। जो जो शरण परै साधू की सो पारग्रामी कीया।। कोट प्राध मिटहिं जन सेवा हरि कीर्तन रस गाइये ॥ ईहां सुख आगे मुख ऊजल जन का संग बड़भागीं पाइये ॥ रसना एक अनेक गुण पूरन जनकी केतक उपमा कहिये ॥ अगम अगोचर सद अविनाशी शरण संतन की लहिये॥ निरगुण नीच अनाथ अपराधी ओट संतन की आही ॥ बूडत मोह गृह अंध कूप में नानक लेहु निबाही।।८४।।

खोजत खोजत खोज विचारयो राम नाम तत्वसारा ।। किलविष काटे निमिष अराध्या गुरुमुख पार उतारा ॥ हरिरस पीवो पुरुष

ज्ञानी ॥ सुन सुन महा तृप्त मन पावै साधू अमृत वानी ॥ मुक्ति भुगति जुगति सचु पाइये सर्व सुखांकादाता ॥ अपनेदास को भगति दान देवै पूरण पुरुष विधाता॥श्रवणीं सुनिये रसना गाइये हिरदय ध्याइये सोई ॥ करन कारन समरत्थ स्वामी जाते वृथा न कोई ॥ बड़ भाग रत्न जन्म पाया करो कृपा कृपाला ॥ साधु संग नानक गुण गावै सुमिरै सदा गोपाला ॥ ८५ ॥

जेती समग्री देखहुरे नर तेती ही छड जानी ॥ राम नाम संग कर व्योहारा पावहिं पद निरवानी ॥ प्यारे तू मेरो सुखदाता ॥ गुरु पुरे दीया उपदेशा तुमही संग पराता ॥ काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना तामें सुख नहिं पाइये ॥ होहु रैनि तू सकल की मेरे मन तौ आनँद मंगल सुख पाइये॥ घाल न भानै अंतर विधि जानै ताकी कर मन सेवा ॥ कर पूजा होम एह मनुआँ अकाल मूरत गुरु देवा ॥ गोविंद दामोदर दयाल माधवे पारब्रह्म निरंकारा ॥ नाम वर तन नामोधालेवा नाम नानक प्राण अधारा ॥ ८६ ॥

रत्न छाँड कौडी सँग लागे जाते कछू न पाइये ॥ पूरन पारब्रह्म परमेश्वर मेरे मन सदा ध्याइये ॥ सुमिरो हरि हरि नाम प्रानी ॥ बिनशै काची देह अज्ञानी ॥ मृगतृष्णा अरु सुपन मनोरथ ताकी कछु न बडाई ॥ राम भजन बिन काम न आवसि संग न काहू जाई हौं हौं करत विहाय अवरदा जिय को काम न कीना ॥ धावत धावत नहिं तृपतास्या राम नाम नहिं चीना ॥ स्वाद विकार विषय रस माता असंख खते कर फेरे ॥ नानक की प्रभु पाहि बीनती काटो अवगुण मेरे ॥ ८७ ॥

गुण गावो पूरण अविनाशी काम क्रोध विष जारे ॥ विषम अग्नि को सागर साधू संग उधारे । पूरेगुरु मेट्यो भ्रमअंधेरा । भज प्रेम भगति प्रभु नेरा । हरि हरि नाम निधान रस पीया मन तन रहे अघाई । जतकत पूर रह्यो परमेश्वर कत आवै कत जाई । जप तप संयम ज्ञान तत्ववेत्ता जिस मन वसै गुपाला । नाम रतन जिन गुरुमुख पाया ताकी पूरण घाला । कलि कलेश मिटे दुख सकले

काटी यम की फाँसा । कहु नानक प्रभु किरपा धारी मन तन भये विकासा ॥ ८८ ॥

माया मोह मगन अँधियारे देवनहार न जाने । जीउ पिंड साज जिन रच्या बल अपनो कर माने । मन मूढ़े देख रह्यो प्रभु स्वामी जोकछु कराहिं सोई सोई जाणै रहै न कछु ऐछानी । जिह्वा स्वाद लोभ मद मातो उपजे अनिक विकारा । बहुत योनि भ्रमत दुख पाया हौं मैं बंधन के भारा । देय किवाड अनिक पडदे में परदारा सँग फाके ॥ चित्रगुप्त जब लेखा मांगहिं तब कौन पडदा तेराढाके ॥ दीन दयाल पूरन दुख भंजन तुम बिन ओट न काई काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभु शरनाई ॥ ८९ ॥

सकल वनस्पति में बैसंदर सकल दूधमेंघीया ॥ ऊँच नीच में जोति समानी घट घट माधोजीया ॥ संतोघटघट रह्यासमाह्यो ॥ पूरनपूर रह्यो सर्वमें जल थल रमैया आह्यो ॥ गुणनिधान नानक यश गावै सतगुरु भर्म चुकायो ॥ सर्व निवासी सदा अलेपा सबमें रह्यो समायो ॥ ९० ॥

अविनाशी जीवन को दाता सुमिरत सब मल खोई ॥ गुण निधान भगतन को बर्तन विरला पावे कोई ॥ मेरे मन जप गुरु गोपाल प्रभु सोई ॥ जाकी शरण परे सुख पाइये बहुरि दुख न होई ॥ बड़भागी साधुसंग प्राप्त तिन भेटत दुर्मति खोई ॥ तिनकी धूर नानक दास बांछे जिन हरि नाम हृदय परोई ॥ ९१ ॥

रामदास सरोवर न्हाते । सब उतरे पाप कमाते । निर्मल होये कर अस्नाना गुरुपूरे कीने दाना । सब कुशल क्षेम प्रभु धारे । सही सलामत सब थोक उबारे ॥ गुरुका शब्द विचारे ॥ साधु संग मल लाथी ॥ पारब्रह्म भयो साथी ॥ नानक नाम ध्याया ॥ आदि पुरुष प्रभु पाया ॥ ९२ ॥

प्राणी कौन उपाव करै ॥ जाते भगति रामकी पावै यमको त्रास हरै ॥ कौन कर्म विद्या कहु कैसी धर्म कौन पुनि करई ॥ कौन नाम गुरु जाके सुमिरे भवसागर को तरई ॥ कलि में एक

नाम किरपानिधि जाहि जपै गति पावै ॥ और धर्म ताके सम नाहिंन यह विधि वेद बतावै ॥ सुख दुख रहत सदा निरलेपी जाको कहत गुसाईं ॥ सो तुमहीमें बसै निरंतर नानक दपर्ण न्याईं ॥ ९३ ॥

माई मैं किहि विधि लखों गुसाईं ॥ महा मोह अज्ञान तिमिर मैं मन रह्यो उरझाई ॥ सकल जन्म भ्रम ही भ्रम खोयो नहीं स्थिर मति पाई ॥ विषयासक्त रह्यो निशिवासर नहिं छूटी अधमाई ॥ साधु संग कबहूं नहिं कीना नहिं कीरति प्रभु गाई ॥ जन नानक मैं नाहिं कोऊ गुण राखि लेहु शरणाई ॥ ९४ ॥

माई मन मेरो बश नाहिं ॥ निशि वासर विषयनको ध्यावत किहि विधि रोकों ताहि ॥ वेद पुराण सिमृति के मत सुन निमिष न हिये बसावै ॥ पर धन पर दारा सों राच्यो बिरथा जन्म सिरावै ॥ मद माया के भयो बावरो सूझत नहिं कछु ज्ञाना ॥ घट ही भीतर वसत निरंजन ताको मर्म न जाना ॥ जबहीं शरण साधु की आयो दुरमति सकल विनासी ॥ तब नानक चेत्यो चिंतामणि काटी यम की फाँसी ॥ ९५ ॥

रे नर यह सांची जिय धार ॥ सकल जगतहै जैसे सुपना विनशत लगत न बार ॥ बारू भीत बनाई रचपच रहत नहीं दिन चार ॥ तैसही यह सुख माया को उरझ्यो कहा गवाँर ॥ अजहूं समझ कछु बिगर्‍यो नाहिंन भजले नाम मुरार ॥ कहु नानक निज मति साधन को भाष्यो तोहिं पुकार ॥ ९६ ॥

मनरे गह्योन गुरु उपदेश ॥ कहा भयो जो मूंड मुंडायो भगवो कीनो भेश ॥ साँच छाडकै झूठहि लाग्यो जन्म अकारथ खोयो ॥ कर परपंच उदर निज पोष्यो पशु की नाईं सोयो ॥ राम भजन की गति नहिं जानी माया हाथ बिकाना ॥ उरझ रह्यो विषयन सँग बौरा नाम रत्न बिसराना ॥ रह्यो अचेत न चेत्यो गोविंद बिरथा औध सिरानी ॥ कहु नानक हरि बिरद पछानो भूले सदा परानी ९७

जोनर दुखमें दुख नाहिंमाने॥सुखसनेह अरु भय नहिं जाके कंचन माटीमाने ॥ नहिं निंदा नहिं अस्तुति जाके लोभ मोह अभिमाना ॥

हर्ष शोक ते रहे नियारो नाहिं मान अपमाना॥ आशा मनसा सकल त्यागे जगते रहै निरासा॥ काम क्रोध जिहिं परसै नाहिंन तिहिं घट ब्रह्म निवासा॥ गुरु किरपा जिहिं नरको कीनी तिहिं यह जुगति पछानी॥ नानकलीन भयो गोविंद सों ज्यो पानी सँगपानी

जब जरिये तब होय भसम तन रहै किरम दल खाई॥ काची गागर नीर परत है या तन की यही बड़ाई॥ काहे भया फिरतो फूल्या फूल्या॥ जब दश मास ऊर्द्ध मुख रहता सो दिन कैसेभूल्या॥ ज्यों मधु माखी त्यों सठोर रस जोर जोर धन कीया॥ मरती बार लेहु लेहु करिये भूत रहन क्यों दीया॥ देहरी लौं बरी नारि संग भई आगे सजन सुहेला॥ मरघट लौं सभ लोग कुटुंब भयो आगे हंस इकेला॥ कहत कबीर सुनोरे प्रानी परे काल ग्रस कूआ॥ झूठी माया आप बँधाया ज्यों नलिनी भ्रम सूआ॥ ९९॥

वेदपुराण सभी मत सुनके करी कर्मकी आशा॥ काल ग्रसत सब लोग सयाने उठ पंडितपहिं चले निराशा॥ मनरे सरचो न एको काजा। भज्यो न रघुपतिराजा॥वनखंडजाय योग तप कीनो कंदमूल चुनखाया। नादी वेदी शब्दी मोनी यमके पट लिखाया॥ भक्ति नारदी हृदय न आई काछ पूछ तन दीना॥ राग रागनी डिंभ होय बैठा उन हरि पहिं क्या लीना॥ परचो काल सभी जग ऊपर माहिं लिखे ब्रह्म ज्ञानी॥ कहु कबीर जन भये खलासे प्रेम भगति जिहिं जानी

क्या पढियेक्या सुनिये॥ क्या वेद पुराणा सुनिये॥ पढ़े सुने क्या होई॥ जो सहज न मिल्या सोई॥ हरिका नाम न जपसि गवाँरा॥ क्या सोचहिं वारंवारा॥ अँधियारे दीपक चहिये॥ इकवस्तु अगोचर लहिये॥ वस्तु अगोचर पाई॥ घट दीपक रह्या समाई॥ कह कबीर अब जान्या॥ जब जान्या तो मन मान्या॥ मन माने लोग न पतीजे॥ न पतीजै तो क्या कीजै॥ १०१॥

हृदय कपट मुख ज्ञानी॥ झूठे कहा विलोवत पानी॥ काया मांसज कौन गुना॥ जो घट भीतर है मलना॥ लोकी अठसठ तीर्थ न्हाई॥ कौरापन तऊ न जाई॥ कह कबीर वीचारी॥ भवसागर तार मुरारी॥ १०२॥

बहु प्रपंच कर परधन ल्यावै ॥ सुत दारा पहिं आन लुटावै ॥ मन मेरे भूले कपट न कीजै ॥ अंतनिवेरा तेरे जीय पहिलीजै ॥ छिन छिन तन छीजै जरा जनावै ॥ तब तेरी ओप कोई पानी हूं नपावैक-हत कबीर कोई नहिं तेरा ॥ हिरदय राम क्योंन जपहिं सवेरा॥१०३॥

भूखे भगति न कीजै ॥ यह माला अपनी लीजै ॥ हौं मांगों संतन रेना ॥ मैं नाहीं किसीका देना ॥ माधो कैसी बने तुम संगे ॥ आपन देहु तो लेवों मंगे ॥ दोय सेर मांगों चूना ॥ पाउ घीउ संग लूना ॥ अधसेर मांगों दाले॥मोको दोनो वखत जिमाले ॥ खाट मांगा चौपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥ ऊपर को मांगों खींधा ॥ तरी भगति करें जन बींधा ॥ मैं नाहीं कीता लब्बो ॥ इक नाम तेरा मैं फब्बो ॥ कह कबीर मनमान्या ॥ मन मान्या तो हरि जान्या ॥ १०॥

पार परोसन पूछले नामा का पहिछान छवाई हो ॥ तोपहिं दुगनी मजूरी देहों मोकों बेढी देहु बताई हो॥ री बाई बेढी देन नजाई देख बेढी रह्यो समाई ॥ हमारे बेढी प्राण आधारा॥बेढी प्रीति मजूरी मांगै जोकोउ छान छवावैहो ॥ लोक कुटुंब सबहू ते तोरै तो आप न बेढी आवैहो ॥ ऐसो बेढी बनै नक्षाको सभ अंतर सभ ठाईं हो गूंगे महा अमृत रस चाख्या पूछे कहन न जाई हो ॥ बेढी के गुण सुनरी बाई जलधि बांध ध्रु थाप्योहो ॥ नामे के स्वामी सीय बहोरी लंक बिभीषण आप्यो हो ॥ १०८ ॥

जब हम होते तब तू नाहीं अब तूहीं मैं नाहीं ॥ अनल अगम जैसे लहरि मय उदधि जल केवल जल माहीं ॥ माधव क्या कहियें भ्रम ऐसा ॥ जैसामानियेहोय न तैसा ॥ नरपति एक सिंहासन सोया सुपने भयो भिखारी ॥ अछत राज बिछुरत दुख पाया सो गति भई हमारी ॥ राज भुवंग प्रसंग जैसे हैं अब कछु मर्म जनाया ॥ अनिक कटक जैसे भूले परे अब कहतें कहन न आया ॥ सर्वे एक अनेकै स्वामी सब घट भुगवै सोई ॥ कह रामदास हाथ पै नरे सहजें होय सो होई ॥ १०६ ॥

जो हम बांधे मोह फांस हम प्रेमबंधन तुम बांधे ॥ अपने छूटन-

को यतन करो हम छूटे तुम आराधे ॥ माधवे जानतहो जैसी तैसी॥ अब कहा करोगे ऐसी॥मीन पकर फांस्यो अरु काट्यो रांध कियो बहु बानी ॥ खंड खंड कर भोजन कीनो तऊ न बिसरचो पानी ॥ आपन बापै नाहीं किसीको भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सब जगत व्याप्यो भगत नहीं संतापा ॥ कह रामदास भगति इक बाढी अब यह कासों कहिये ॥ जाकारन हम तुम आराधे सो दुःख अजहूं सहिये ॥ १०७ ॥

दुर्लभ जन्म पुण्य फल पायो वृथा जात अविवेकै ॥ राज इंद्र सम सर गृह आसन बिन हरि भगति कहो किहिं लेखै।।न विचारचो राजा रामको रस जिहिं रस अनरस बीसर जाहीं ॥जान अजान भये हम बावर सोच असोच दिवस जाहीं ॥ इंद्री सबल निबल विवेक बुधि परमारथ प्रवेश नाहीं ॥ कहियत आन अचरियत अनकछु समझ नपरै अपरमाया॥कहरमदास उदास दासमति परिहर कोप करो जियदाया

सुखसागर सुरतरु चिंतामणि कामधेनु वश जाके॥ चार पदारथ अष्ट दशा सिधि नव निधि करतल ताके ॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सब त्याग वचन रचना ॥ नानाख्यान पुराण वेद विध चौतीस अक्षरमाहीं ॥ व्यास विचार कह्यो परमारथ राम नाम सर नाहीं ॥ सहज समाधि उपाधि रहत पुनि बड़े भाग लिव लागी॥कह रामदास प्रकाश हृदय घर जन्म मरन भय भागी १०९

नैनों नीर बहै तन क्षीना भये केश दुधवानी ॥ रूँधा कंठ शब्द नाहिं उचरै अब क्या करहि परानी ॥ रामराय होय बैद वनवारी अपने संतन लेहु उबारी ॥ माथे पीर शरीर जलन है करक कलेजे माहीं ॥ ऐसी वेदन उपज खरी भई वाकी औषध नाहीं ॥ हरि का नाम अमृत जल निर्मल यह औषध जग सारा॥ गुरु प्रसाद कहै जन भीषण पावो मोक्ष द्वारा ॥ ११० ॥

राग धनाश्री ।

बड़े बड़े राजन अर भूमन ताकी त्रिसना न बूझी ॥ लपट रहे माया रँग माते लोचन कछु न सूझी ॥ विषया महिं किनहूं तृप्ति

न पाई ॥ ज्यों पावक ईंधन नहीं धरापै विन हरि कहा विन अघाई ॥ दिन दिन करत भोजन बहु व्यंजन ताकी मिटै न भूखा ॥ उद्यम करै श्वान की नाई चारों कुंटां घेखा ॥ कामवंत कामी बहु नारी पर गृह जोह न चूकै ॥ दिन प्रति करै करै पछतावै शोक लोभ में सूकै ॥ हरि हरि नाम अपार अमोलक अमृत एक निधाना ॥ सुख सहज आनँद संतनके नानक गुरु ते जाना ॥ १११ ॥

हरिएक सिमर एक सिमर एक सिमर प्यारे ॥ कलि कलेश लोभ मोह महा भवजल तारे ॥ श्वास श्वास निमिष निमिष दिन सुरेन चितारे ॥ साधु संग जप निशंक मन निधान धारे ॥ चरणकमल नमसकार गुण गोविंद वीचारे ॥ साधु जनां की रेणु नानक मंगल सुख सधारे ॥ ११२ ॥

काहेरे बन खोजन जाई ॥ सर्व निवासी सदा अलेपा तोहि संग समाई ॥ पुष्पमध्य ज्यों वास वसत है मुकर माहीं जैसेछाई ॥ तैसेही हरि वसैं निरंतर घट ही खोजो भाई ॥ बाहर भीतर एको जानो यह गुरु ज्ञान बताई ॥ जन नानक बिन आपा चीने मिटै न भ्रम की काई ॥ ११३ ॥

साधो यह जग भर्म भुलाना ॥ राम नाम का सिमरन छोड्या माया हाथ बिकाना ॥ मातपिता भाई सुत वनिता ताके रसलपटाना ॥ यौवन धन प्रभुता के मदमें अह निशि रहै दिवाना ॥ दीन दयाल सदा दुख भंजन तासों मन न लगाना ॥ जननानक कोटिन में किनहूं गुरमुख होय पछाना ॥ ११४ ॥

तिहिं योगी को जुगत न जानो ॥ लोभ मोह माया ममता पुनि जिहिं घट माहिं पछानो ॥ पर निंदा स्तुति नहीं जाके कंचन लोह समानो ॥ हर्ष शोक ते रहै अतीता योगी ताहि बखानो ॥ चंचल मन दह दिस को धावत अचल जाहिं ठहरानो ॥ कहु नानक यह विधि को जो नर मुक्त ताहि तुम मानो ॥ ११५ ॥

दिन ते पहर पहर ते घडियां आयु घटै तत छीजे ॥ काल अहेरी फिरे वधिक ज्यों कहो कवन विध कीजे ॥ सो दिन आवन

लागा ॥ मात पिता भाई सुत वनिता कहो कोऊ है है कांका ॥ जबलग जोति काया में बरते आपा पशू न बूझे ॥ लालच करे जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझे ॥ कहत कबीर सुनोरे प्राणी छोडो मनके भरमा ॥ केवल नाम जपोरे प्राणी परो एक की शरणा ॥

जो जन भाव भक्ति कछु जानै ताको अचरज काहो ॥ ज्यों जल जल में पैठ न निकसै त्यों ढुर मिल्यो जुलाहो ॥ हरि के लोगा मैंतो मतिका भोरा ॥ जो तन काशी तजहि कबीरा रमैये कहा निहोरा ॥ कहत कबीर सुनोरे लोई भर्म न भूलोकोई ॥ क्या काशी क्या ऊखर मगहर राम हृदय जो होई ॥ ११७ ॥

इंद्रलोक शिव लोकहिं जैबो ॥ ओछे तप कर बाहर ऐबो ॥ क्या मांगों कछु थिर नाहीं ॥ राम नाम राख मन माहीं ॥ शोभा राज विभव बड़ियाई ॥ अंत न काहू संग सहाई ॥ पुत्र कलत्र लक्ष्मी माया ॥ इनते कहु कवने सुख पाया ॥ कहत कबीर अवर नहिं कामा ॥ हमरेमन धन रामको नामा ॥ ११८ ॥

गहरी करकै नीव खुदाई ऊपर मंडप छाये ॥ मारकंडे ते को अधिकाई जिन तृण धर मूंड बलाये ॥ हमरो करता राम सनेही ॥ काहेरे नर गरब करतहो बिनश जाय झूठी देही ॥ मेरी मेरी कौरव करते दुरयोधन सौभाई ॥ बारह योजन छत्र चले था देही गिरझन खाइ ॥ सर्व सोने की लंका होती रावण से अधिकाई ॥ कहा भयो दर बांधे हाथी क्षणमें भई पराई॥दुरवासा सों करत ठगोरी यादव यह फल पाये॥कृपा करी जन अपने ऊपर नामदेव हरि गुण गाये ॥ ११९ ॥

हम सर दीन दयाल न तुम सर अब पतिआर क्या कीजे ॥ बचनी तोर मोर मन मानै जनको पूरन दीजै ॥ हौं बल बल जाऊं रमैया कारने ॥ कारनकवन अबोल ॥ बहुत जन्म बिछुरे थे माधव यह जन्म तुम्हारे लेखे ॥ कह रामदास आश लग जीवों चिर भयो दर्शन देखे ॥ २२० ॥

धूप दीप घृत साज आरती ॥ वारने जाउँ कमला पति ॥ मंगला हरि मंगला ॥ नित मंगल राजा रामराय को ॥ उत्तम

दयिरा निर्मल बाती ॥ तूही निरंजन कमला पाती ॥ रामा भगति रामानंद जानै ॥ पूरन परमानंद बखानै ॥ मदन मूरति भयतार गोविंदे ॥ सैन भणे भज परमानंद ॥ १२१ ॥

कायो देवा कायो देवल कायो जंगम जाती ॥ कायो धूप दीप नैवेदा कायो पूजों पाती ॥ काया बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥ नाकछु आयबो ना कछु जायबो राम की दुहाई ॥ जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥ पीपा प्रणवै परमतत्व है सतगुरु होय लखावै ॥ १२२ ॥

राग जैतश्री ।

मनरे साँचा गहो विचारा ॥ राम नाम बिन मिथ्या मानो सगरो यह संसारा ॥ जाको योगी खोजत हारे पायो नहीं तिहिपारा ॥ सो स्वामी तुम निकट पछानो रूप रेख ते न्यारा ॥ पावन नाम जगत में हरि को कबहूं नाहि सँभारा ॥ नानक शरण परचो जग वंदन राखो बिरद तिहारा ॥ १२३ ॥

नाथ कछुअ न जानो ॥ मन मायाके हाथ बिकानो ॥ तुम कहियतहो जगत गुरु स्वामी ॥ हम कहियत कलियुग के कामी ॥ इन पंचन मेरो मन जो बिगारचो ॥ पल पल हरिजी ते अंतर पारचो ॥ जत देखों तत दुख की रासी ॥ अजहुं न पतियाय निगम भये साखी॥गौतम नारी उमापति स्वामी ॥ शीश धरनि सहस भग गामी॥इनदूतन खलवध कर मारचो॥बड़ो निलाज अजहुं नहिं हारचो॥ कह रामदास कहा कैसे कीजै॥विन रघुनाथ शरण कांकी लीजै १२४

राग टोडी ।

धायो रे मन दह दिशि धायो । माया मगन स्वाद लोभ मोह्यो तिन प्रभु आपभुलायो ॥ हरि कथा हरि यश साधु संगत सो इक मुहुर्त न यह मनलायो ॥ बिगस्यो पेख रंग कसुंभ को पर गृह जोहन जायो ॥ चरणकमल सों भाव न कीनो नहिं सतपुरुष मनायो ॥ धावत को धावहि बहु भांती ज्यों तेली बलद भ्रमायो ॥ नाम दान

अस्नान न कीयो इक निमिष न कीरति गायो ॥ नाना झूठ लाय मन तोष्यो नाहिं बूझ्यो अपनायो ॥ पर उपकार न कबहूँ कीये नहिं सतगुरु सेव ध्यायो ॥ पंच दूत रच संगत गोष्टी मतवारो मद मायो ॥ करों वीनती साधु संगत हरि भगत वच्छल सुन आयो नानक भाग पर्‌यो हरि पाछे राख लाज अपनायो ॥ १२५ ॥

मांगों दान ठाकुर नाम ॥ अवर कछु मेरे संग न चालै मिलै कृपा गुण ग्राम ॥ राज माल अनेक भोग रस सकल तरुवर की छाम ॥ धाय धाय बहु विधिको धावै सकल निरारथ काम ॥ विन गोविंद अवर जे चाहों दीसै सकल बात है खाम ॥ कहु नानक संत रेणु मांगों मेरो मन पावै विश्राम ॥ १२६ ॥

कहों कहा अपनी अधमाई। उरझ्यो कनक कामिनी के रस नाहिं कीरति प्रभु गाई ॥ जग झूँठ को साँच जानके तासों रुचि उपजाई ॥ दीन बंधु सिमिर्‌यो नाहिं कबहूं होत जो संग सहाई ॥ मगन रह्यो माया में निशिदिन छुटी न मन की काई ॥ कह नानक अब नाहिं अनत गति विन हरि की शरनाई ॥ १२७ ॥

राग तिलंग ।

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर गोश कुन करतार ॥ हक्का कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥ दुनिया मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ मम सर मू ईजराईल गरिफ्तह दिल हेच नदानी ॥ जन पिसर पिदर बिरादरा कस नेस्त दस्तंगीर ॥ आखिर बियफ्तम कस नदारद चूं शवद तकबीर ॥ शब रोज गश्तम दर हवा करदेम बदी ख्याल ॥ गाहे न नेकी कार करदम् मम ईंचुनी अहवाल ॥ बद बख्त हमचू बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥ नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥ १२८ ॥

चेतनाहै तोचेतले निशिदिनमें प्रानी ॥ छिन छिन अवध बिहातहै फूटे घट ज्यों पानी ॥ हरि गुन काहे न गावही मूरख अज्ञाना ॥ झूठे लालच लागके नहिं मर्म पछाना ॥ अजहूं कछु बिगर्‌यो नहीं जो प्रभु गुण गावै ॥ कहु नानक तिहिं भजन ते निरभय पद पावै १२९॥

मै अंधले की टेक तेरा नाम खुदकारा ॥ मैं गरीब मैं मिसकीन तेरा नाम है अधारा ॥ करीमा रहीमा अलाह तूं गनी ॥ हाजरा हजूर दरपेश तो मनीं ॥ दरियाउ तू दिहंद तू बिस्यार तू धनी ॥ देंहि लेंहि एक तू दिगर को नहीं ॥ तूं दाना तूं बीना मैं बीचार क्या करी ॥ नामे चे स्वामी बखशिंद तूं हरी ॥ १३० ॥

हले यारां हले यारां खुश खबरी ॥ बलबल जाउँहीं बलबलजाउँ॥ नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउँ ॥ कुजा आमद कुजा रफती कुजा मेरवी॥द्वारका नगरी रास्त बुगोई ॥ खूबतेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ द्वारका नगरी काहेके मगोल ॥ चंदीं हजार आलम एक लखाना ॥ हमचुनीं पातशाह सांवले बरना ॥ अश्वपति गजपति तरह नरिंद ॥ नामे के स्वामी मीर मुकुंद ॥ १३१ ॥

राग सूही ।

नीच जाति हरि जपत्यां उत्तम पदवी पाय ॥ पूछो विदुर दासी सुतहिं कृष्ण उतरया घर जिस जाय ॥ हरि की अकथ कथा सुनो जन भाई जित संशय दूख भूक सब लहजाय ॥ रामदास चमार अस्तुति करे हरि कीरति निमिष इक गाय ॥ पतित जाति उत्तम भया चार वर्ण परे पग आय ॥ नामदेव प्रीति लगी हरि सेती लोक छीपा कहे बुलाय ॥ क्षत्री ब्राह्मण पीठ दे छोड़े हरि नामदेव लिया मुख लाय ॥ जितने भगत हरि सेवका मुख अठसठ तीर्थ तिन तिलक कढाय ॥ जन नानक तिनको अनुदिन परसे जे कृपा करे हरिराय ॥ १३२ ॥

बाजीगर जैसेबाजीपाई ॥ नानारूप भेष दिखलाई ॥ स्वांगउतार थंम्यो पासारा ॥ तबएकोएकंकारा ॥ कवनरूप दृष्टयोबिनशायो ॥ कर्ताहि गयो वह कततेआयो ॥ जलते उठहिं अनिकतरंगा ॥ कनक भूषण कीने बहु रंगा ॥ बीज तें जो देख्यो बहु प्रकारा ॥ फल पाके ते एकंकारा ॥ सहसघटा में एक अकाश ॥ घटफूटेते वही प्रकाश भ्रम लोभ मोह माया विकार ॥ भ्रम छूटेते एकंकार ॥ वह अवि-

नाशी विनशत नाहीं ॥ नाको आवे नाको जाहीं ॥ गुरु पूरे हौं में मल धोई ॥ कहु नानक मेरी परम गति होई ॥ १३३ ॥

सेवा थोरी मांगनबहुता ॥ महल न पावे कहतों पहुता ॥ जोप्रिय मानै तिनकी रीसा ॥ कूडे मूरख की हाठीसा ॥ भेष दिखावे सच न कमावे ॥ कहतो महली निकट न आवे ॥ अतीत सदाये माया का माता ॥ मन नहीं प्रीत कहै मुखराता ॥ कहु नानक प्रभु विनय सुनीजे ॥ कुचल कठोर कामी मुक्त कीजे ॥ १३४ ॥

बुरे काम को ऊठ खलोया ॥ नाम की बेला पैपै सोया ॥ अवसर अपना बूझे न अयाना ॥ माया मोह रंगलपटाना ॥ लोभ लहर को विकस फूल बैठा ॥ साधु जनां का दर्शन डीठा ॥ कबहूं न समझे अज्ञान गँवारा ॥ बहुर बहुर लपट्यो जंजारा ॥ विषय नादकरण सुन भीना ॥ हरियश सुनत आलसमनकीना ॥ दृष्टनाहींरे पेखत अंधे ॥ छोड़जाहि झूठेसबधंधे ॥ कहुनानक प्रभु बखसकरीजै ॥ कर किरपा मोहिं साधु संग दीजे ॥ तौ कछु पाइये जो होइये रेना ॥ जिसहिं बुझाये तसनाम लेना ॥ १३५ ॥

कवन काज माया बड़ियाई ॥ जाको विनशत बार न काई ॥ यह सुपना सोवत नहिं जानै ॥ अचेत व्यवस्था में लपटाने ॥ महा मोह मोह्यो गावारा ॥ पेखत पेखत ऊठ सिधारा ॥ ऊँच ते ऊँच ताका दरबारा ॥ कई जंतु विनाहि उपारा ॥ दूसर होया नाकोई होई ॥ जप नानक प्रभु एको सोई ॥ १३६ ॥

सिमरसुमिर ताको हौं जीवा ॥ चरणकमल तेरे धोय धोय पीवा ॥ सोहरि मेरा अंतरयामी ॥ भगत जनांके संग स्वामी ॥ सुन सुन अमृत नाम ध्यावां ॥ आठ पहर तेरे गुण गावां ॥ पेख पेख लीला मन आनंदा ॥ गुण अपार प्रभु परमानंदा ॥ जाके सिमरन कछु भय न व्यापे ॥ सदा सदा नानक हरि जापे ॥ १३७ ॥

भली सुहावी छापरी जामें गुण गाये ॥ कितहीं काम न धौलहर जित हरि विसराये ॥ अनँद गरीबी साधुसंग जित प्रभु चित आये ॥ जल जाउ एह बड़पना माया लपटाये ॥ पीसन पीस ओढ़ कामरी

सुख मन संतोषाये ॥ ऐसो राज न किते काज जित नाहिं तृप्ताये ॥ नग्न फिरत रंग एक के ओह शोभापाये ॥ पाटपटंबर बिरथिया जिहिं रच लोभाये ॥ सब कछु तुमरे हाथ प्रभु आप करेकराये ॥ सासमास सिमरत रहां नानक दान पाये ॥ १३८ ॥

संता के कारज आप खलोया हरि कम्म करावन आया राम ॥ धरति सुहावी ताल सुहावा बिच अमृत जल छाया राम ॥ अमृतजल छाया पूरन साज कराया सकल मनोरथ पूरे ॥ जैजैकार भया जग अंतर लाथे सकल वमूरे ॥ पूरन पुरुष अच्युत अविनाशी यश वेद पुराणीं गाया ॥ अपना बिरद रख्या परमेश्वर नानक नाम ध्याया ॥

अवतर आय कहा तुम कीना ॥ राम को नाम न कबहूं लीना ॥ राम न जपो कवन मतिलागे ॥ मरजैबे को क्या करो अभागे ॥ दुख सुख करके कुटुंब जिवाया ॥ मरतीबार इकसर दुख पाया ॥ कंठ गहन तब करन पुकारा ॥ कह कबीर आगेते न सँभारा ॥ १४० ॥

अमल सिरानो लेखा देना ॥ आये कठिन दूत यम लेना ॥ क्या तैं खट्या कहां गवाँया ॥ चलो शताब दिवान बुलाया ॥ चल दर हाल दिवान बुलाया ॥ हरि फरमान दरगह का आया ॥ करो अरदास गाव कछु बाकी ॥ लेहु निबेर आज की राती ॥ कछुभी खर्च तुम्हारा सारो ॥ सुबह नमाज़ सराय गुज़ारो ॥ साधु संग जाको हरि रँग लागा ॥ धनि धनि सो जन पुरुष सभागा ॥ ईत ऊत जन सदा सुहेले ॥ जन्म पदारथ जीत अमोले ॥ जागत सोया जन्म गवाँया माल धन जोरया भया पराया ॥ कहु कबीर तेई नर भूले ॥ खसम बिसार माटी सँग रूले ॥ १४१ ॥

जो दिन आवैं सो दिन जाहीं ॥ करना कूच रहन थिर नाहीं ॥ संग चलत है हमभी चलना ॥ दूर गमन सिर ऊपर मरना ॥ क्या तू सोया जाम अयाना ॥ तैं जीवन जग सच कर जाना ॥ जिन जिउ दिया सो रिज़क अंबरावै ॥ सभ घठ भीतर हाट चलावै ॥ कर बंदगी छाड मैं मेरा ॥ हिरदय नाम सम्हार सवेरा ॥ जन्म सिरानो पंथ न सवाँरा ॥ सांझ परी दह दिशि अँधियारा ॥ कह

रामदास निदान दिवाने ॥ चेतत नहिं दुनियां फनखाने ॥ १४३ ॥

ऊंचे मंदिर साल रसोई ॥ एक घरी पुनि रहन न होई ॥ यह तन ऐसा जैसे घास कि टाटी ॥ जल गयो घास रलगयो माटी ॥ भाई बंधु कुटुंब सहेरा ॥ वह भी लागे काढ सबेरा ॥ घर की नारि वह रहे तन लागी ॥ वह तो भूत भूत कर भागी ॥ कह रामदास सभी जग लूट्या ॥ हौं तो एक राम कह छूट्या ॥ १४३ ॥

राग बिलावल।

मनमें सिंचो हरि हरि नाम अनुदिन कीर्तन हरि गुण ग्राम ऐसी प्रीति करो मन मेरे ॥ आठ पहर प्रभु जानो नेरे ॥ कहु नानक जाके निर्मल भाग ॥ हरि चरनी तांका मन लाग ॥ १४४ ॥

ताती वाउ न लागई पारब्रह्म शरनाई ॥ चौगिरद हमारे राम कार दुख लगे न भाई ॥ सतगुरु पूरा भेट्या जिन बनत बनाई राम नाम औषध दीया एका लिव लाई ॥ राख लिये तिन रखन हार सब व्याधि मिटाई॥कह नानक कृपा भई प्रभु भये सहाई॥१४५॥

प्रभुजी तूं मेरे प्राण अधारे ॥ नमसकार डंडौत वंदना अनिक बार जाऊँ बलिहारे ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत यहमन तुझेचितारे॥ सुख दूख इस मन की बिरथा तुझही आगे सारे ॥ तूं मेरी ओट बल बुद्धि धन तुमहीं तुमहीं मेरे प्रवारे ॥ जो तुम करो सोई भल हमरे पेख नानक सुख चरनारे ॥ १४६ ॥

दुख हरता हरि नाम पछानो ॥ अजामल्ल गनिका जिहिं सिमरत मुक्त भये जिय जानो ॥ गजकी त्रास मिटी छिनहूं में जबहीं राम ब खानो ॥ नारद कहत सुनत ध्रुव बालक भजन माहिं लपटानो ॥ अचल अमर निरभय दद पायो जगत जाहिं हैरानो ॥ नानक कह त भगत रक्षक हरि निकट ताहि तुम मानो ॥ १४७ ॥

हरि के नाम विना दुख पावे ॥ भगति बिना संशय नहिं चूकै गुरु यह भेद बतावे ॥ कहा भयो तीरथ व्रत कीये राम शरण नहिं आवे ॥ योग यज्ञ निष्फल तिहिं मानो जो प्रभु यश बिसरावे ॥

मान मोह दोनों को परिहरि गोविंद के गुण गावै ॥ कहु नानक यहि विधि को प्राणी जीवन मुक्त कहावै ॥ १४८ ॥

जामें भजन राम को नाहीं ॥ तिहिं नर जन्म अकारथ खोयो यह राखो मन माहीं ॥ तीरथ करै व्रत पुनि राखै नहिं मनुआ वश जाको ॥ निष्फल धर्म ताहि तुम मानो साँच कहत मैं याको ॥ जैसे पाहन जलमें राख्यो भेदै नहिं तिहि पानी ॥ तैसेही तुम ताहि पछानो भगति हीन जो प्रानी ॥ कलि में मुक्ति नाम ते पावत गुरु यह भेद बतावै ॥ कहु नानक सोई नर गरुवा जो प्रभु के गुणगावै ऐसो यह संसार पेखना रहन न कोऊ पइहैरे ॥ सूधे सूधे रेंग चलो तुम नतरक धका दवइहैरे ॥ बारे बूढे तरुने भैया सबहूं यम लैज इहैरे ॥ मानस बपुरा मूसा कीनो मीच बिलैया खइहैरे ॥ धनवंता अरु निरधन मनई ताकी कछू न कानीरे ॥ राजा परजा सम कर मानै ऐसो काल बडानीरे ॥ हरिके सेवक जो हरि भाये तिनकी कथा निरारीरे ॥ आवहिं न जाहिं न कबहूं मरते पारब्रह्म संगारीरे पुत्र कलत्र लक्ष्मी माया इहै तजहु जियजानी रे ॥ कहत कबीर सुनोरे संतहु मिलिहै शारँगपानीरे ॥ १४९ ॥

विद्या न पढ़ों बाद नहिं जानो ॥ हरि गुण कथत सुनत बौरानो मेरे बाबा मैं बोरा सब खलक स्यानी मैं बौरा ॥ मैं बिगरचो बिगरै मति औरा ॥ आपन बौरा राम कीयो बौरा ॥ सतगुरु जार गयो भ्रम मोरा ॥ मैं बिगरै अपनी मति खोई ॥ मेरे भर्म भूलो मत कोई सो बौरा जो आप न पछानै ॥ आप पछानै तो एकै जानै ॥ अबहिं न माता सो कबहु न माता ॥ कह कबीर रामहिं रँग राता ॥१५०॥

गृह तज वन खंड जाइये चुन खाइये कंदा ॥ अजहूं विकार नछोडई पापी मन मंदा ॥ क्यों छूटों कैसे तरों भव जलनिधि भारी ॥ राख राख मेरे बीठुला जन शरण तुम्हारी ॥ विषय विषय की वासना तजी नहिं जाई ॥ अनिक यतन कर राखिये फिर फिर लपटाई ॥ जरा जीवन योवन मया कछु किया न नीका ॥ यह जियरा निरमोलको कौडी लग मीका ॥ कह कबीर मेरे माधवा तूं सर्व व्यापी ॥ तुम समसर नाहीं दयाल मोहिं समसर पापी १५१॥

नित उठ कोरी गाजर आनै लीपत जीउ गयो ॥ ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रस लपट्यो ॥ हमारे कुल कौने रामकह्यो ॥ जबकी माला लई निपूते तबते सुख न भयो ॥ सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरज एक भयो ॥ सात सूत इन मुंडिये खोये यह मुंडिया क्योंन मुयो ॥ सर्व सुखांका एक हरि स्वामी सो गुरु नाम दियो ॥ संत प्रहलाद की पैज जिन राखी हरनाकुश नख बिदरयो ॥ घर के देव पितर की छोडी गुरु को शब्द लियो ॥ कहत कबीर सकल पाप खंडन संतहिं लै उधरयो ॥ १६२ ॥

राखिलेहु हमते बिगरी ॥ शील धर्म जप भगति न कीनी हौं अभिमान टढ़ पगरी ॥ अमर जान संची यह काया यह मिथ्या काची गगरी ॥ जिनहिं निवाज साज हम कीये तिसहिं बिसार अवर लगरी ॥ संधिकि तोहि साध नहिं कहियो शरण परे तुमरी पगरी ॥ कह कबीर यह बिनती सुनियो मत घालो यम की खबरी ॥ १६३ ॥

दारिद देख सभकोय हँसै ऐसी दशा हमारी ॥ अष्टदश सिद्धि करतले सब कृपा तुम्हारी ॥ तूं जानत मैं कछु नहीं भव खंडन राम ॥ सकल जीवन शरणागती प्रभु पूरण काम ॥ जो तेरी शरणागती तिन नाहीं भार ॥ ऊँच नीच तुमते तरे आल जु संसार ॥ कह रामदास अकथ कथा बहु काय करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुहीं क्या उपमा दीजै ॥ १६४ ॥

जिहि कुल साधु वैष्णव होय ॥ वर्ण अवर्ण रंक नहिं ईश्वर विमल वास जानिय जग सोय ॥ ब्राह्मण वैश्य शूद्र अरु क्षत्रि डोम चंडाल मलेच्छ मन सोय ॥ होय पुनीत भगवंत भजन ते आप तार तारे कुल दोय ॥ धन्य सो गाउँ धन्य सो ठाउँ धन्य पुनीत कुटुंब सब लोय ॥ जिन पीया सार रस तजे आन रस होय रस मगन डारे विष खोय ॥ पंडित शूर छत्रपति राजा भगत बराबर और न कोय ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनत रामदास जन्मे जग ओय ॥ १६५ ॥

नृप कन्या के कारने इक भयो भेष धारी ॥ कामारथी स्वारथी

वाकी पैज सवारी ॥ तव गुण कहा जगत गुरा जो कर्म न नासै ॥ सिंह शरण कत जाइये जो जंबुकग्रासै ॥ एकबूंद जल कारने चातक दुख पावै ॥ प्राण गये सागर मिले पुनि काम न आवै ॥ प्राण जो थाके थिर नहीं कैसे बिरमावो ॥ बूड मुये नौका मिले कहु काहि चढ़ावो ॥ मैं नाहीं कछु हौं नहीं कछु आहि न मोरा ॥ औसर लज्जा राखलेहु सधना जन तोरा ॥ १५६ ॥

राग गौड ।

निमाने को जो देतो मान ॥ सकल भूखे को करतो दान ॥ गरभ घोर में राखनहार ॥ तिस ठाकुर को सदा नमसकार ॥ ऐसो प्रभु मन माहिं ध्याय ॥ घट अवघट जत कताहिं सहाय ॥ रंकराउ जाके एक समान ॥ कीट हस्ती सकल पूरान ॥ बीयो पूछ न मसलत धरै ॥ जो कछु करै सो आपहिं करै ॥ जाका अंत न जानतकोय ॥ आपेआप निरंजन सोय ॥ आप आकार आप निरंकार ॥ घट घट घट सब घट आधार ॥ नाम रंग भगत भये लाल ॥ जस करते संत सदा निहाल ॥ नाम रंग जन रहे अघाय ॥ नानक तिन जन लागै पाय ॥ १५७ ॥

गुरुकी मूरत मन में ध्यान ॥ गुरुके शब्द मंत्र मन मान ॥ गुरुके चरण हिरदे ले धारो ॥ गुरु पारब्रह्म सदा नमसकारो मत को भ्रम भूलै संसार ॥ गुरु विन कोय न उतरस पार ॥ भूले को गुरु मारग पाया ॥ अवर त्याग हरि भगति लाया ॥ जन्म मरण की त्रास मिटाई ॥ गुरु पूरे की बेअंतबड़ाई ॥ गुरुप्रसाद ऊरध कमल विकास ॥ अंधकार में भया प्रकास ॥ जिन कीया सो गुरु ते जान्या ॥ गुरु कृपाते मुगध मन मान्या ॥ गुरु करता गुरु करने योग ॥ गुरु परमश्वर है भी होग ॥ कह नानक प्रभु यही जनाई ॥ बिन गुर मुक्ति न पाइये भाई ॥ १५८ ॥

राम राम संग कर व्योहार ॥ राम राम राम प्राण अधार ॥ राम राम राम कीर्तन गाय ॥ रमत राम सब रह्यो समाय ॥ संत जनां मिल बोलो राम ॥ सबते निरमल पूरण काम ॥ राम राम धन संच

भँडार ॥ राम राम राम कर आहार ॥ राम राम बीसर नहीं जाय ॥ कर किरपा गुरु दियो बताय ॥ राम राम राम सदा सहाय ॥ राम राम राम लब लाय ॥ राम राम जप निर्मल भये ॥ जन्मजन्म के किल्मिष गये॥ रमत राम जन्म मरन निवारै ॥ उचरत राम भय पार उतारै ॥ सभते ऊँच राम परकास ॥ निशि वासर जप नानक दास ॥ १५९ ॥

अचरज कथा महा अनूप ॥ परात्मापारब्रह्म का रूप ॥ ना यह बूढा ना यह बाला ॥ ना इस दूख नहीं यमजाला ॥ ना यह विनशै ना यह जाय ॥ आद जुगादी रह्या समाय ॥ ना इस उष्ण नहीं इस शीत ॥ ना दुशमन ना इस मीत ॥ ना इस हर्ष नहीं इस शोग ॥ सब कछु इसका यह करने योग ॥ ना इस बाप नहीं इस माया ॥ इह अपरंपर होता आया ॥ पाप पुण्य का इस लेप त लागै ॥ घट घट अंतर सदही जागै ॥ तीन गुणां इक शक्ति उपाया महामाया ताकी है छाया ॥ अछल अछेद अभेद दयाल ॥ दीन दयाल सदा कृपाल ॥ ताकी गति मित्त कछू न पाय ॥ नानक ताके बलबल जाय ॥ १६० ॥

संत मिलै कछु सुनिये कहिये ॥ मिलै असंत मष्ट कर रहिये ॥ बाबा बोलना क्या कहिये ॥ जैसे राम नाम रम रहिये ॥ संतन सों बोले उपकारी ॥ मूरख सों बोले झखमारी ॥ बोलत बोलत बढ़ै विकारा ॥ बिन बोले क्या करैं विचारा ॥ कह कबीर छूछा घट बोलै ॥ भरचा होय सो कबहुं न डोलै ॥ १६१ ॥

नरू मरै नर काम न आवै ॥ पशू मरै दस काज सवाँरै ॥ अपने कर्म की मति मैं क्या जानों ॥ मैं क्या जानों बाबारे ॥ हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ केश जले जैसे घास का पूला ॥ कहत कबीर तबहीं नर जागै ॥ यम का डंड मूंड में लागै ॥ १६२ ॥

भुजा बांध भिला कर डारचो ॥ हस्ती कोप मूंड महिं मारचो ॥ हस्ती भागके चीसां मारै ॥ या मूरत के हौं बलिहारै ॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोर ॥ काजी बकबो हस्ती तोर ॥ रे महावत तुझ

डारों काट ॥ इसहिं तुरावहु घालो साट ॥ हस्तन तोरै धरै ध्यान ॥ वाके हिरदय बसै भगवान ॥ क्या अपराध संत है कीना ॥ बांध पोट कुंचर को दीना ॥ कुंचर पोट लैलै नमसकारै ॥ बूझी नहीं काजी अँध्यारै ॥ तीन बार पतीया भरलीना ॥ मन कठोर अजहूँ न पतीना॥कह कबीर हमरा गोविंद ॥ चौथे पद में जनकी जिंद १६३

ना इह मानस ना इह देउ ॥ ना इह यती कहावै सेउ ॥ ना इह योगी ना अवधूता ॥ ना इस माय न काहू पूता ॥ या मंदिर में कौन बसाई ॥ ताका अंत न कोऊ पाई ॥ ना इह गिरही ना उदासी॥ ना इह राज न भीख मँगासी ॥ ना इस पिंड न रकतू राती ॥ ना इह ब्राह्मण ना इह खाती ॥ ना इह तपा कहावै शेख ॥ ना इह जीवे न मरता देख ॥ इस मरते को जे कोउ रोवै ॥ जो रोवै सोई पति खोवै ॥ गुरु प्रसाद मैं डगरो पाया ॥ जीवन मरन दोऊ मिटवाया ॥ कहु कबीर इह राम की अंस ॥ जस कागद पर मिटै न मंस ॥ २६४ ॥

अश्वमेध जगने ॥ तुलापुरुष दाने ॥ प्राग अस्नाने ॥ तौ न पुजहिं हरि कीरती नामा ॥ अपने रामहिं भजरे मन आलसीया ॥ गयो पिंड भरता ॥ बनारस आसि बसता ॥ मुख वेद चतुर पढ़ता ॥ सकल धर्म अछिता ॥ गुरु ज्ञान इंद्री दृढ़ता ॥ षट् कर्म सहित रहता ॥ शिवा शक्ति संवादं ॥ मन छोड छोड सकल भेदं ॥ सिमर सिमर गोविंदं ॥ भज नामा तरसि भव ॥ १६५

नाद भ्रमे जैसे मिरगाये ॥ प्राण तजे वाको ध्यान न जाये ॥ ऐसे रामा ऐसे हेरों ॥ राम छोड चित अनत न फेरों ॥ ज्यों मीना हेरै पशुआरा ॥ सोना गढ़ते हेरै सुनारा ॥ ज्यों विषयी हेरै परनारी॥ कौडा डारत हिरै जुआरी ॥ जहिं जहिं देखों तहिं तहिं रामा ॥ हरि के चरण नित ध्यावै नामा ॥ १६६ ॥

मोको तारले रामा तारले ॥ मैं अजान जन तरबे न जानों बाप बीठुला बांहिदे ॥ नर ते सुर होयजात निमिष में सतगुरु बुध सिखलाई ॥ नर ते उपज स्वर्ग को जीत्यो सो अवषध मैं पाई

जहां जहां ध्रुव नारद टेके नेकें टिकावो मोहिं ॥ तेरे नाम अवलंब बहुत जन उधरे नामे की निज मति इह ॥ १६७ ॥

हरि हरि करत मिटे सब भर्मा ॥ हरि को नाम लै उत्तम धर्मा ॥ हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥ सो हरि अंधले की लाकरी ॥ हरये नमस्ते हरये नमः ॥ हरि हरि करत नहीं दुख जमः ॥ हरि हरनाकुश हरे ॥ प्राण अजामिल कीयो वैकुंठहिं थान ॥ सुआ पढ़ावत गनिका तरी ॥ सो हरि नैनों की पूतरी ॥ हरि हरि करत पूतना तरी ॥ बाल घातनी कपटाहिं भरी ॥ सिमरन द्रौपद सुता उद्धरी ॥ गौतम सती शिला निस्तरी ॥ केशी कंस मथन जिन कीया ॥ जीय दान काली कों दीया ॥ प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥ जासु जपत भय अपदा टरी ॥ १६८ ॥

जे ओह अठसठ तीरथ न्हावे ॥ जे ओह द्वादश शिला पुजावे ॥ जे ओह कूप तटा देवावै ॥ करै निंद सब विरथा जावै ॥ साधु का निंदक कैसे ॥ तरै ॥ सरपर जानो नरकहि परै ॥ जे वह ग्रहण करै कुरुखेत अरपै नारि शृंगार समेत ॥ सकली सिमृति श्रवणी सुनै ॥ करै निंद कवने नहीं गुनै ॥ जे ओह अनिक प्रसाद करावै ॥ भूमिदान शोभा मंडप पावे ॥ अपना बिगार बिराना सांढै करै निंद बहु योनी हांढै ॥ निंदा कहा करो संसारा ॥ निंदक का परगट पाहारा ॥ निंदक शोध साधु बीचारचा ॥ कहु रामदास पापी नर्के सिंधारचा ॥ १६९ ॥

राग रामकली ।

चार पुकारहिं ना तू मानहिं ॥ षट भी एका बात बखानहिं ॥ दस अष्टी मिल एको कह्या ॥ तौभी योगी भेद न लह्या ॥ किंगुरी अनूप बाजै ॥ योगीया मतवारोरे ॥ प्रथमे बस्या सत का खेड़ा ॥ तृतीये में कछु भया दुतेडा ॥ दुतीया अरधो अरध समाया ॥ एक रह्या तो एक दिखाया ॥ एकै सूत परोये माणिये ॥ गांठी भिन भिन भिन भिन तणिये ॥ फिरती माला बहु विधि भाय ॥ खिच्या सूत तो आई थाय ॥ चहुँ में एकै मट है कीया ॥ तहिं बिखड़

थान अनिक खिड़कीया ॥ खोजत खोजत द्वारे आया ॥ तौ नानक योगी महल घर पाया ॥ १७० ॥

कौडी बदले त्यागै रतन ॥ छोड जाय ताहू का यतन ॥ सो संचय जो होछी बात ॥ माया मोह्या टेढ़ो जात ॥ अभागे तैं लाज नाहीं ॥ सुखसागर पूरन परमेश्वर हरि न चेत्यो मन माहीं ॥ अमृत कौड़ा विषया मीठी ॥ शाकत की विधि नैनो डीठी ॥ कूड़ कपट अहंकार रिझाना ॥ नाम सुनत जनु बिछू डसाना ॥ माया कारन सदही झरै ॥ मनमुख कबहुं न अस्तुति करै ॥ निरभय निरंकार दातार ॥ तिससों प्रीत न करै मवाँर ॥ सब साहां शिर साँचा साह ॥ बेमुँहताज पूरा पातसाह ॥ मोह मगन लपट्यो भ्रम गिहरे ॥ नानक तरिये तेरी मिहरे ॥ १७१ ॥

गऊ को चारे शारदूल ॥ कौडी का लख हूआ मूल ॥ बकरी को हस्ती प्रतिपालै ॥ अपना प्रभु नदर निहालै ॥ कृपानिधान प्रीतम प्रभु मेरे ॥ बर्णन साकों बहु गुण तेरे ॥ दीसत मास न खाय बिलाई ॥ महा कसाब छुरी सटपाई ॥ करनहार प्रभु हिरदय बूठा ॥ फाथी मछली का जाला तूठा ॥ सूखेकाष्ठ हरे चलूल ॥ ऊँचे थल फूले कमल अनूप ॥ अग्नि निवारी सतगुरु देव ॥ सेवक अपनी लायो सेव ॥ किरतघनां का करे उधार ॥ प्रभु मेरा है सदा दियार ॥ संत जना का सदा सहाई ॥ चरण कमल नानक शरणाई ॥ १७२ ॥

रेमन ओट लेहु हरि नामा ॥ जाके सुमिरनदुरमति नाशै पावहिं पद निरवाना ॥ बड़भागी तिहिं जनको जानो जो हरिके गुण गावै ॥ जन्म जन्म के पाप खोयके पुनि वैकुंठ सिधावै ॥ अजामल्ल को अंतकाल में नारायण सुधि आई ॥ जा गति को योगीश्वर वांछत सो गति छिनमें पाई ॥ नाहिन गुण नाहिन कछु विद्या धर्म कौन गज कीना ॥ नानक बिदर राम का देखो अभयदान तिहिं दीना ॥ १७३ ॥

साधो कौन जुगत अब कीजै ॥ जाते दुर्मति सकल बिनाशै राम भगति मन भीजै ॥ मन माया में उरझ रह्योहै बूझे ॥ नहिं कछु ज्ञाना ॥ कौन नाम जग जाके सिमरे पावै पद निरबाना ॥ भये दयाल कृपाल संतजन तब इह बात बताई ॥ सर्व धर्म मानो तिहिं कीये जिहिं प्रभु कीरत गाई ॥ राम नाम नर निशिवासर में निमिष एक उर धारै ॥ यमको त्रास मिटै नानक तिहिं अपनो जन्म सवाँरै ॥ १७४ ॥

प्राणी नारायण सुध लेह ॥ छिन छिन औध घटै निशिवासर वृथा जात है देह ॥ तरुनापो विषयन सों खोयो बालापन अज्ञाना बिरध भयो अजहूं नहिं समझै कौन कुमति उरझाना ॥ मानस जन्म दियो जिहि ठाकुर सो तूं क्यों बिसरायो ॥ मुक्त होत नर जाके सिमरे निमिष न ताको गायो ॥ मायाको मद कहा करतहै संग न काहू जाई ॥ नानक कहत चेत चिंतामणि ह्वैहै अंत सहाई॥

कवन काज सिरजे जग भीतर जन्म कवन फल पाया ॥ भव निधि तरन तारन चिंतामणि इक निमिष न इह मन लाया ॥ गोविंद हम ऐसे अपराधी ॥ जिन प्रभु जीउ पिंड था दीया तिसकी भाउभक्ति नहिं साधी ॥ परधन परतन परतिय निंदा पर अपवाद न छूटै ॥ आवागमन होतहै पुनिपुनि इह प्रसंगनातूटै ॥ जिहिं घर कथा होत हरि संतन इकनिमिष न कीनोमैं फेरा ॥ लंपट चोर दूत मतवारे तिन सँग सदा बसेरा ॥ काम क्रोध माया मद मत्सर इह संपै मो माहीं ॥ दया धर्म अर गुरुकी सेवा इह सुपनंतर नाहीं ॥ दीनयाल कृपाल दामोदर भगत बछल भयहारी ॥ कहत कबीर भीर जिन राखो हरि सेवा करों तुम्हारी ॥ १७६ ॥

आनीले कागद काटीले गूडी आकाश मध्ये भरमीयले ॥ पंच जनां सों बात बतौआ चीत सो डोरी राखीयले ॥ मन राम नामा वेधीयले ॥ जैसे कनक कला चित मांडीयले ॥ आनीले कुंभ भराईले ऊदक राज कुआरि पुरंदरिये ॥ हँसत विनोद विचार करतीहै चीत सो सागर राखीयले ॥ मंदिर एक द्वार दस जाके गऊ चरावन छांड़ी

यले ॥ पांच कोस पर गऊ चरावत चीत सो बछरा राखीयले ॥ कहत नामदेउ सुनो त्रिलोचन बालक पालन पौढ़ीयले ॥ अंतर बाहर काज बिरूधी चीत सो बालक राखीयले ॥ १७७ ॥

बानारसी तप करे उलट तीर्थ मरे अग्नि दहे काया कलप कीजे ॥ अश्वमेध यज्ञ कीजें सोना दान दीजै राम नाम सर तऊ न पूजे ॥ छोड छोड़ रे पाखंडी मन कपट न कीजे ॥ हरिका नाम नित नितहिं लीजै ॥ गंगाजी गोदावरी जाइये कुंभ जो केदारन्हाइये गोमती सहस गऊ दान कीजै ॥ कोटि जो तीर्थ करै तन जो हिमालै गारै रामनाम सर तऊनपूजे ॥ अश्वदान गजदान सिहजा नारी भूमिदान ऐसोदान नित नितहिंकीजे ॥ आत्मजो निर्मायलकीजे आप बराबर कंचन दीजै रामनाम सर तऊ न पूजै ॥ मनहिं न कीजे रोष जमहि नदीजै दोष निर्मल निर्वाण पद चीन लीजे ॥ दशरथराय नंद राजा मेरा रामचंद्र प्रणवे नामा तत्वरस अमृत पीजे ॥ १७८ ॥

पढ़िये गुनिये नाम सब सुनिये अनुभव भाव न दरसै ॥ लोहा कंचन हिरण्य होय कैसे जो पारसहिं न परसै ॥ देव संशय गांठ नछूटै काम क्रोध माया मद मत्सर इन पंचों मिल लूटै ॥ हम बड़ कवि कुलीन हम पंडित हम योगी सन्यासी ॥ ज्ञानी गुनी शूर हम दाते इह बुद्धि कबहिं न नासी ॥ कहु रामदास सभी नहीं समझत भूल परे जैसे बौरे ॥ मोहिं अधार नाम नारायण जीवन प्राण धन मोरे ॥ १७९ ॥

राग नटनारायण ।

राम हौं क्या जाना क्या भावै ॥ मन प्यास बहुत दरशावै ॥ सोई ज्ञानी सोई जन तेरा जिस ऊपर रुचि आवै ॥ कृपा करो जिस पुरुष विधाते सो सदा सदा तुध ध्यावै ॥ कवन योग कवन ज्ञान ध्याना कवन गुनी रीझावै ॥ सोई जन सोई निज भगता जिस ऊपर रँग लावै ॥ सोई मति सोई बुद्धि स्यानप जित निमिष न प्रभु विसरावै ॥ संत संग लग इह सुख पायो हरिगुन सदही गावै ॥

देख्यो अचरज महा मंगल रूप कछु आन नहिं दृष्टावे ॥ कहु नानक मोरचा गुरु लाह्यो तहिं गरभ योनि कहिं आवै ॥ १८० ॥

राग नट ।

मेरे सर्वस नाम निधान ॥ कर किरपा साधू संग मिल्यो सतगुरु दीनो दान ॥ सुखदाता दुख भंजन हारा गाउ कीर्तन पूरण ज्ञान ॥ काम क्रोध लोभ खंड खंड कीने विनश्यो मूढ़ अभिमान ॥ क्या गुण तेरे आँख बखाणां प्रभु अंतरयामी जान ॥ चरण कमल शरण सुखसागर नानक सद कुर्वान ॥ १८१ ॥

राग माली गौडा ।

धन्य धन्य राम वेणु बाजे ॥ मधुर मधुर धुन अनहद गाजे ॥ धन धन मेघा रोमावली ॥ धन धन कृष्ण ओढे कांबली ॥ धन धन तू माता देवकी ॥ जिहिं गृह रमैया कमलापती ॥ धन धन बन खंड वृन्दावना ॥ जहिं खेलै श्रीनारायणा ॥ वेणु बजावे गोधन चारै ॥ नामे का स्वामी आनंद करै ॥ १८२ ॥

मेरो बाप माधो तू धन केशो साँवलीयो बीठुलाय ॥ कर धरे चक्र वैकुंठ ते आये गज हस्तीके प्राण उधारीयले॥दुश्शासनकी सभा द्रौपदी अंबरलेत उबारीयले ॥ गौतम नारि अहल्यातारी पावनकेतक तारीयले॥ऐसा अधमअजाति नामदेउ तवशरणागति आईयले १८३॥

राग मारू ।

डरपै धरती अकाश नक्षत्रा शिरऊपर अमर करारा ॥ पौण पाणी बैसंदर डरपै डरपै इंद्र विचारा ॥ एका निरभय बात सुनी ॥ सो सुखिया सो सदा सुहेला जो गुरु मिल गाय गुनी ॥ देह धार अर देवा डरपहिं सिद्ध साधक डर मोया ॥ लख चौरासी मर मर जन्मे फिर फिर योनी जोया ॥ राजस सात्विक तामस डरपहिं केते रूप उपाया ॥ छल बपुरी इह कमला डरपै अति डरपै धर्मराया ॥ सकल समग्री डरहिं व्यापी बिन डर करनेहारा ॥ कहु नानक भक्तन का संगी भक्त सोहैं दरबारा ॥ १८४ ॥

पांच वर्ष को अनाथ धरू बालक हरि सुमिरत अमर अटारे पुत्र हेत नारायण कह्यो यम किंकर मार विदारे ॥ मेरे ठाकुर केते अगनित उधारे ॥ मोहिं दीन अलप मति निर्गुण परचो शरण द्वारे ॥ वालमीक सुपचारो तरचो बधिक तरे विचारे ॥ एक निमिष मन माहिं अराध्यो गजपति पार उतारे ॥ कीनी रक्षा भगत प्रहलादहिं हरनाकुश नखहिं विदारे ॥ विदुर दासीसुत भयो पुनीता सकले कुल उज्यारे ॥ कवन अपराध बतावों अपने मिथ्या मोह मग्नारे ॥ आयो साम नानक ओट हरि की लीजै भुजा पसारे ॥ १८५ ॥

हरिको नाम सदा सुखदाई ॥ जाको सिमर अजामल उधरचो गनिकाहूं गति पाई ॥ पंचालीको राजसभामें रामनाम सुध आई ॥ ताको दूख हरचो करुणामय अपनी पैज बढ़ाई ॥ जिहि नर यश किरपानिधि गायो ताको भयो सहाई ॥ कहु नानक मैं यही भरोसे गही आन शरणाई ॥ १८६ ॥

अब मैं कहा करौंरी माई ॥ सकल जन्म विषयन सों खोयो सिमरचो नाहिं कन्हाई ॥ काल फाँस जब गर में मेली तिहिं सुध सब विसराई ॥ रामनाम बिन या संकट में को अब होत सहाई ॥ जो संपति अपनी कर मानी छिन में भई पराई ॥ कहु नानक यह सोच रही मन हरि यश कबहुं न गाई ॥ १८७ ॥

माई मैं मनको मान न त्याग्यो ॥ माया के मद जन्म सिरायो राम भजन नहिं लाग्यो ॥ यम को दंड परचो सिर ऊपर तब सोवत तें जाग्यो ॥ कहा होत अबके पछिताये छूटत नाहिन भाग्यो ॥ यह चिंता उपजी घट में जब गुरु चरणन अनुराग्यो ॥ सुफल जन्म नानक तब हूआ जो प्रभु यश में पाग्यो ॥ १८८ ॥

अच्युत पारब्रह्म परमेश्वर अंतरयामी ॥ मधुसूदन दामोदर स्वामी॥हृषीकेश गोवर्धन धारी मुरलीमनोहर हरिरंगा॥मोहन माधव कृष्ण मुरारे ॥ जगदीश्वर हरिजी असुर सँहारे ॥ जगजीवन अविनाशी ठाकुर घट घट बासी है संगा ॥ धरणीधर ईश नृसिंह नारायण॥ दाढ़ा अग्र पृथिवी धरायण ॥ बावन रूप की यातुध करते सबही

सेती है चंगा ॥ श्रीरामचंद्र जिस रूप न रेख्या ॥ वनमाली चक्रपाणि दर्श अनूप्या ॥ सहस नेत्र मूरत है सहंसा इक दाता सबहै मंगा ॥ भगत वच्छल अनाथहिं नाथे ॥ गोपीनाथ सकल है साथे ॥ वासुदेव निरंजन दाते वर्णनसाकों गुण अंगा ॥ मुकुंद मनोहर लक्ष्मी नारी यण ॥ द्रौपदी लज्जा निवार उधारण ॥ कमलाकांत करै कौतूहल अनँद विनोदी निहसंगा ॥ अमोघ दर्शन अजूनी संभौ ॥ अकाल मूरत जिस कदे नाहीं खौ अविनाशी अविगत अगोचर सब कछु तुझही है लग्ग ॥ श्रीरंग वैकुंठ के वासी ॥ मच्छ कच्छ कूर्म आज्ञा औतरासी ॥ केशव चरित करै निराले कीता लोड़े सो होयगा ॥ निरहारी निरवैर समाया ॥ धार खेल चतुर्भुज कहाया ॥ सांवले सुंदर रूप बनावहिं वेणु सुनत सब मोहेगा ॥ वनमाला विभूषण कमल नयन ॥ सुंदर कुंडल मुकुट बैन ॥ शंख चक्र गदा हैं धारी महा सारथी सत्संगा ॥ पीत पीतांबर त्रिभुवन धनी ॥ जगन्नाथ गोपाल मुख भणी ॥ शारंगधर भगवान बीटुला मैं गणत न आवै सरबंगा ॥ निहकंटक निहकेवल कहिये धनंजय जल थल है महिये ॥ मिरत लोक प्याल समीपत स्थिर थान जिस है अभंगा ॥ पतित पावन दुख भय भंजन ॥ अहंकार निवारण है भव खंडन ॥ भगति तोषत दीन कृपाला गुणे त कितही है भग्गा ॥ निरंकार अछल अडोलो जोति सरूपी सब जग मोलो ॥ सो मिलै जिस आप मिलाये आपहु कोय न पावेगा ॥ आपेगोपी आपे कान्हा ॥ आपे गउ चरावे बाना आपि उपावहिं आपि खपावहिं तुध लेप नहीं इक तिल रंगा ॥ एक जीह गुण कवनवखानै ॥ सहस फणी शेषे अंत न जानै ॥ नूतन नाम जपै दिनराती इक गुण नाहीं प्रभु कहसंगा ॥ ओठ गही जग तपित शरनाया ॥ भय भ्यानक यमदूत दुस्तर है माया ॥ होहु कृपाल इच्छा कर राखो साधु संतनके संग संगा ॥ दृष्टिमान है सकल मिथेना ॥ इक मांगों दान गोविंद संत रेना ॥ मस्तक लाय परमपद पावों जिस प्राप्त सो पावेगा ॥ जिनको कृपा करी सुखदाते ॥ तिन साधू चरण लै हिरदे पराते ॥ सकल नाम निधान तिन पाया अन-

हद शब्द मन वाजंगा ॥ कृत्तम नाम कथे तेरे जिहूवा ॥ सत्तनाम तेरा परा पूर्वला ॥ कहनानक भगत पराशरनाई देहु दर्शमन रंग लगा।

जिन गढ़ कोट किये कंचन के छोड गया सो रावन ॥ काहे कीजतहे मनभावन ॥ जब यम आय केशते पकरै तहिं हरि को नाम छुडावन ॥ काल अकाल खसम का कीना इह प्रपंच बधावन ॥ कह कबीर ते अंते मुक्ते जिन हिरदे राम रसायन ॥ १९० ॥

राजन कौन तुम्हारे आवे ॥ ऐसो भाव विदुर को देख्यो वह गरीब माहिं भावे ॥ हस्तीदेख भर्मते भूला श्रीभगवान न जान्या ॥ तुमरो दूध विदुर को पानी अमृत कर मैं मान्या ॥ खीर समान साग मैं पाया गुण गावत रैन विहानी ॥ कबीरको ठाकुर आनँद विनोदी जाति न काहूकी मानी ॥ १९१ ॥

चार मुक्ति चारे सिद्धि मिलके दूलह प्रभुकी शरण परयो ॥ मुक्ति भयो चौहूं युग जान्यो यश कीरति माथे छत्र धरयो ॥ राजा राम जपत को को न तरयो ॥ गुरु उपदेश साधुकी संगति भगत भगत ताको नाम परयो ॥ शंख चक्र माला तिलक विराजत देख प्रताप यम डरयो ॥ निरभय भये राम बल गर्जत जन्म मरन संतापहरयो ॥ अंबरीषको दियो अभयपद राज विभीषण अधिककरयो ॥ नौनिधि ठाकुर दई सुदामहिं धरू अटल अजहूं न टरयो ॥ भगत हेत मारयो हरनाकुश नृसिंह रूप होय देह धरयो ॥ नामा कहे भगत वश केशव अजहूं बलिके द्वार खरो ॥ १९२ ॥

दीन विसारयोरे दिवाने तैने दीन विसारयो ॥ पेट भरयो पशुआ ज्यों सोयो मनुष जन्म है हारयो ॥ साधु संगत कबहूं नहीं कीनी रच्यो धंधे झूठ ॥ श्वान शूकर वायस जिवें भटकत चाल्यो ऊठ ॥ आपन को दीर्घ कर मानै औरन को लघुमात ॥ मनसा वाचा कर्मनामें देखे दोजक जात ॥ कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम ॥ निंदा करते जन्म सिरानो कबहुँ न सिमरयो राम ॥ कह कबीर चेतै नहीं मूरख मुगध गवाँर ॥ राम नाम जान्यो नहीं कैसे उतरस पार १९३

ऐसी लाल तुझ बिन कौन करै ॥ गरीब निवाज गुसैयां मेरे

माथे छत्र धरै ॥ जाकी छोत जगत कों लागे तापर तुही ढरै ॥ नीचहि ऊंच करै मेरा गोविंद काहूते न डरै ॥ नामदेव कबीर त्रिलोचन सधना सैन तरै ॥ कह रामदास सुनहुरे संतहु हरिजीते सभी सरै १९४॥

सुख सागर सुरतरु चिंतामणि कामधेनु वश जाकेरे ॥ चारि पदारथ अष्ट महा सिधि नव निधि करतल ताकेरे ॥ हरि हरि हरि नजपहि रसना ॥ अवर सब छाँड वचन रचना ॥ नानाख्यान पुराण वेद विधि चौतीस अक्षर माहीं ॥ व्यास विचार कह्यो परमारथ रामनाम सर नाहीं ॥ सहज समाधि उपाधि रहित है बड़े भाम लव लागी ॥ कहरामदास उदास दास मति जन्म मरण भयभागी १९५॥

राग केदारा ।

हरि बिन जन्म अकारथ जात ॥ तज गोपाल आन रँग राचत मिथ्या पहिरत खात ॥ धन यौवन संपै सुख भुगवै संग न निवहत मात ॥ मृगतृष्णा देख रच्यो बावर द्रुम छाया रंग रात ॥ मान मोह महा मद मोह्यो काम क्रोध के खात ॥ कर गहि लेहु दास नानक को प्रभुजी होय सहात ॥ १९६ ॥

बिसरत नाहिं मनते हरी ॥ अब इह प्रीत महा प्रबल भई आन विषय जरी ॥ बूँद कहा त्याग चातक मीन रहत न घरी ॥ गुण गोपाल उचारत रसना टेंव एह परी ॥ महा नाद कुरंग मोह्यो वेध तीक्षन सरी ॥ प्रभु चरन कमल रसाल नानक गांठ बांध परी १९६ ॥

अस्तुति निंदा दोऊ विवर्जत तजो मान अभिमाना ॥ लोहा कंचन सम कर जानै ते मूरत भगवाना ॥ तेराजन एक आधकोई ॥ काम क्रोध लोभ मोह विवर्जित हरिपद चीनै सोई ॥ रजगुण तमगुण सतगुण कहिये यह तेरी सभ माया ॥ चौथेपद को जो नर चीनै तिनहीं परमपद पाया ॥ तीर्थ बर्त नेम शुचि संयम सदा रहै निह-कामा ॥ तृष्णा अरु माया भ्रम चूका चितवत आतम रामा ॥ जिहि मंदिर दीपक प्रकास्या अंधकार तहिं नासा ॥ निरभय पूर रहे भ्रम भागा कह कबीर जन दासा ॥ १९८ ॥

किनहीं बनज्या कांसी तांबा किनहीं लौंग सुपारी ॥ संतन

वनज्या नाम गोविंद का ऐसी खेप हमारी ॥ हरिके नामके व्योपारी ॥ हीरा हाथ चढ़्या निरमोलक छूट गई संसारी ॥ साँचे लाये तौं सच लागे साँचेके व्योहारी ॥ साँची वस्तुके भार चलाये पहुंचे जाय भँडारी ॥ आपहिं रत्न जवाहर मानक आपेहैं पासारी ॥ आपे दह दिस आप चलावै निहचल है व्यापारी ॥ मन कर बैल सुरत कर पैडा ज्ञान गोन भरडारी ॥ कहत कबीर सुनोरे संतहु निवही खेप हमारी ॥

काम क्रोध तृष्णा के लीने गति नहिं एकै जानी ॥ फूटी आंखें कछू नसूझै बूड मुये बिन पानी ॥ चलत कत टेढे टेढे टेढे॥ अस्थि चर्म विष्टा के मूंदे दुर्गंधहिके बेढ़े ॥ राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुमते काल न दूरे ॥ अनिक यतन कर इह तन राखहु रहै अवस्था पूरे ॥ आपन कीया कछू न होवै क्या को करै परानी ॥ जां तिस भावै सतगुरु भेटै एको नाम बखानी ॥ बलुआ के घरुआ में वसते फुलवत देह अयाने ॥ कहु कबीर जिहिं राम न चेत्यो बूडे बहुत सयाने ॥ २०० ॥

टढ़ी पाग टेढ़े चले लागे वीरे खान ॥ भाव भक्ति सों काज न कछुहै मेरो काम दिवान ॥ राम विसारयोहै अभिमानि ॥ कनक कामिनी महा सुंदरी पेख पेख सचु मान ॥ लालच झूठ विकार महामद इह विधि औध विहानि ॥ कह कबीर अंतकी बिरियां लागो काल निदान ॥ २०१ ॥

चार दिन अपनी नौबत चले बजाय ॥ इतनाकु खटीया गठीया मटीया संग न कछु लैजाय ॥ देहुरी बैठी मिहरी रोवै द्वारे लौं सँग माय ॥ मरघट लग सब लोक कुटंब मिल हंस इकेला जाय ॥ वह सुत वह बित वह पुर पाटन बहुरि न देखै आय ॥ कहत कबीर राम क्यों न सिमरो जन्म अकारथ जाय ॥ २०२ ॥

षट् कर्म कुल संयुक्त है हरि भगति हिरदय ताहिं ॥ चरणारविंद न कथा भावे श्वपच तुल्यसमान ॥ रे चित चेत चेत अचेत काहे न वालमीकहिं देख ॥ किस जातिते किहिं पदहिं अमरयो

राम भगति विशेख ॥ श्वान शत्रु अजातं सभते कृष्ण लावै हेत ॥ लोक बपुरा क्या सराहै तीन लोक प्रवेश ॥ अजामल्ल पिंगुला लुभत कुंजर गये हरिके पास ॥ ऐसे दुर्मति निस्तरे तूं क्यों न तरैं रामदास ॥२०३॥

राग भैरव।

मेरी पटीयांलिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥ दूजे भाय फाथे यम जाला ॥ सतगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ हरि सुखदाता मेरे नाला ॥ गुरु उपदेश प्रहलाद हरि उचरै ॥ सासना ते बालक गम न करे ॥ माता उपदेशै प्रहलाद प्यारे ॥ पुत्र राम नाम छोडो जीय लेहु उबारे ॥ प्रहलाद कहै सुनो मेरीमाय ॥ रामनाम न छोडो गुरु दीया बुझाय ॥ संडा मरका सभ जाय पुकारे ॥ प्रहलाद आप बिगड़या सभ चाटड़े बिगाड़े ॥ दुष्ट सभामें मंत्र पकाया ॥ प्रहलादका राखा होय रघुराया ॥ हाथ खड़ग कर धाइया अति अहंकार ॥ हरि तेरा कहां तुझ लये उबार ॥ छिनमें भ्यानक रूप निकस्या थंभ उपार ॥ हरनाकुश नखीं विदारया प्रहलाद लीया उबार ॥ संतजनांके हरिजी कारज सवाँरे ॥ प्रहलाद जनके इकीस कुल उधारे ॥ गुरुके शब्द हौं मैं विष मारे ॥ नानक राम नाम संत निस्तारे॥

तूं मेरा पिता तूहीं मेरीमाता ॥ तूंमेरे जीव प्राण सुखदाता ॥ तूं मेरा ठाकुर हौं दास तेरा ॥ तुझ बिन अवर नहीं कोइ मेरा ॥ कर किरपा करो प्रभु दात ॥ तुमरी अस्तुति करों दिनरात ॥ हम तेरे जंततूं बजावनहारा ॥ हमतेरे भिषारी दानदेहु दातारा ॥ तवप्रसाद रंगरस माणे ॥ घटघट अंतर तुमहि समाणे ॥ तुमरी कृपातें जपिये नाउँ ॥ साधु संग तुमरे गुणगाउँ ॥ तुमरीदयाते होय दरदबिनास ॥ तुमरी मयाते कमल विकास ॥ हौं बलिहार जाउँ गुरुदेव ॥ सफल दर्शन जाकी निर्मल सेव ॥ दया करो ठाकुर प्रभुमेरे ॥ गुण गावै नानक नित तेरे ॥ २०५ ॥

प्रथमें छोडी पराई निंदा ॥ उतर गई सभ मनकी चिंदा ॥ लोभ मोह सभ कीनो दूर॥ परम वैशनो प्रभु पेख हजूर ॥ ऐसो त्यागी विरला

कोय ॥ हरि हरि नाम जपै जन सोय ॥ अहं बुद्धि का छोडा संग ॥ काम क्रोध का उतरा रंग ॥ नाम ध्यावे हरि हरिहरे ॥ साधु जनां के संग निस्तरे ॥ वैरी मीत होये संमान ॥ सर्व यहिं पूर्ण भगवान ॥ प्रभुकी आज्ञा मान सुख पाया ॥ गुरु पूरे हरिनाम दृढाया ॥ कर किरपा जिस राखै आप ॥ सोई भगत जपै नाम जाप ॥ मन प्रकाश गुरुते मति लई ॥ कहु नानक तांकी पूरी पई ॥ २०६ ॥

सुख नाहीं बहुते धन खाटे ॥ सुख नाहीं पेखे नित नाटे ॥ सुख नाहीं बहु देश कमाये ॥ सर्व सुखां हरिहरि गुण गाये ॥ सूख सहज आनंद लहो ॥ साधु संगत पाइये वड़भागी गुरुमुख हरिहरि नाम कहो ॥ बंधन मात पिता सुत वनिता ॥ बंधन कर्म धर्म हौंकर्ता ॥ बंधन काटनहार मन बसै ॥ तौ सुख पावै निज घर बसै ॥ सभ याचक प्रभु देवनहार ॥ गुणनिधान बेअंत अपार ॥ जिसनूं कर्म करे प्रभु अपना ॥ हरि हरि नाम तिन्हीं जन जपना ॥ गुरु अपने आगे अरदास ॥ कर किरपा पुरुष गुण तास ॥ कहु नानक तुमरी शरणाई ॥ ज्यों भावै त्यों रखहु गुसाईं ॥ २०७ ॥

लाज मरै जो नाम न लेवै ॥ नाम बिहून सुखी क्यों सोवै ॥ हरि सिमरन छाँड परम गति चाहै ॥ मूल विना शाख कत आहै ॥ गुरु गोविंद मेरे मन ध्याय ॥ जन्म जन्म की मैल उतारै बंधन काट हरि संग मिलाय ॥ तीर्थ न्हाय कहा शुच सैल ॥ मनको व्यापै हौं मैं मैल ॥ कोट कर्म बंधन का मूल ॥ हरि के भजन विन विरथा पूल ॥ विन खाये बूझै नहीं भूख ॥ रोग जाय तो उतरै दूख ॥ काम क्रोध लोभ मोह व्याप्या ॥ जिन प्रभु कीना सो प्रभु नहीं जाप्या ॥ धन धन साधु धन्य हरि नाउँ ॥ आठ पहर कीर्तन गुण गाउँ ॥ धन हरि भगति धन्य करनेहार ॥ शरण नानक प्रभु पुरुष अपार ॥२०८॥

नाम लेत कछु विघ्न न लागे ॥ नाम सुनत यम दूरहुं भागे ॥ नामलेत सभ दूखहिंनास ॥ नामजपत हरि चरणनिवास ॥ निरविघ्न भगति भज हरि हरि नाउँ ॥ रसिक रसिक हरिके गुण गाउँ ॥ हरि

सिमिरत कछु चाख न जोहै ॥ हरि सिमरत देत देउ न पोहै ॥ हरि सिमरत मोह मान न बधे ॥ हरि सिमरत गर्भ योनि न रुधे ॥ हरि सिमरन की सगली बेला ॥ हरि सिमरन बहु माहिं इकेला ॥ जाति अजाति जपै जन कोय ॥ जो जापै तिसकी गति होय ॥ हरि का नाम जपीयै साधु संग ॥ हरि के नाम का पूरन रंग ॥ नानक को प्रभु किरपा धार ॥ श्वास श्वास हरि देहु चितार ॥ २०९ ॥

तिन करते इक चरित उपाया ॥ अनहदबानी शब्द सुनाया ॥ मनमुख भूले गुरुमुख बुझाया ॥ कारन कर्ता करदा आया ॥ गुरु का शब्द मेरे अंतरध्यान ॥ हौं कबहुँ न छोड़ों हरि का नाम ॥ पिता प्रहलाद पढ़न पठाया ॥ लै पाटी पांधे के आया ॥ नामविना नहीं पढ़ो अचार ॥ मेरी पटीया लिखदेहु गोविंद मुरार ॥ पुत्र प्रहलाद सों कह्यो माय ॥ प्रविर्त न पढ़हु रही समझाय ॥ निरभय दाता हरिजी मेरे नाल ॥ जे हरि छोड़ो तो कुल लागै गाल ॥ प्रहलाद सभ चाटड़े बिगारे ॥ हमरा कहा न सुनै आपणे कारज सवाँरे ॥ सभ नगरी में भगति दृढ़ाई ॥ दुष्ट सभा का कछु न बसाई ॥ संडे मरके कीनी पुकार ॥ सभी दैत रहे झख मार ॥ भगत जनां की पति राखै सोई ॥ कीते के कहिये क्या होई ॥ किरत संयोगी दैतराज चलाया ॥ हरि न बूझे विन आप भुलाया ॥ पुत्र प्रहलाद सों बाद रचाया ॥ अंधा न बूझे काल नेड़े आया ॥ प्रहलाद कोठे विच राख्या बार दीया ताला ॥ निरभय बालक मूल न डरई मेरे अंतर गुरु गोपाला ॥ कीताहोवै सरीकी करै अणहोंदा नाउँ धराया ॥ जो धुर लिख्या सो आय पहुँचा जनसों बाद रचाया ॥ पिता प्रहलाद सों गुरुज उठाई ॥ कहां तुम्हारा जगदीश गुसाईं ॥ जगजीवन दाता अंत सखाई ॥ जहिं देखां तहिंरह्या समाई॥थंभ उपाड़ हरि आप दिखाया ॥ अहंकारी दैत मार पचाया ॥ भगतां मन आनंद बजी बधाई ॥ अपने सेवक को दे वडिआई ॥ जंमण मरना मोह उपाया ॥ आवण जाणा करते लिख पाया ॥ प्रहलाद के कारज हरि आप दिखाया ॥ भगतां का बोल आगे आया ॥ देव कुली लछमी

को करहिं जैकार ॥ माता नरसिंह का रूप निवार ॥ लछमी भय करै नसाके जाय ॥ प्रहलाद जन चरणों लागा आय ॥ सतगुरु नाम निधान दृढ़ाया ॥ राज माल झूठी सभ माया ॥ लोभी नर रहे लपटाय ॥ हरि के नाम बिन दरगह मिले सजाय ॥ कहै नानक सब को करै कराय ॥ सो प्रमाण जिन्हीं हरिसों चित लाया ॥ भगतां का अंगीकार करदा आया ॥ करते अपणा रूप दिखाया ॥२१०॥

इह धन मेरे हरि को नाउँ ॥ गांठ न बाँधों बेंच न खाउँ ॥ नाउँ मेरे खेती नाउँ मेरे बारी ॥ भगति करों जन शरण तुम्हारी ॥ नाउँ मेरे माया नाउँ मेरे पूजी ॥ तुमहिं छोड जातों नहीं दूजी ॥ नाउँ मेरे बांधव नाउँ मेरे भाई ॥ नाउँ मेरे संग अंत होय सखाई ॥ माया में जिस रखे उदास ॥ कह कबीर हौं ताको दास ॥ २११ ॥

नांगे आवन नांगे जाना ॥ कोय न रहिहै राजा राना ॥ राम राजा नौनिध मेरे ॥ संपै हेत कलत धन तेरे ॥ आवत संग न जात सँगाती कहा भयो दर बांधे हाथी ॥ लंका गढ़ सोने का भया ॥ मूरखरावण क्या ले गया ॥ कह कबीर कछु गुण बीचार ॥ चलै जुआरी दोय हथझार ॥ २१२ ॥

गंगा के संग सरिता बिगरी ॥ सो सरिता गंगा होय निबरी ॥ बिगरचो कबीरा राम दुहाई ॥ साँच भयो अनकताहिं नजाई ॥ चंदन के संग तरुवर बिगरचो ॥ सो तरुवर चंदन होय निवरचो ॥ पारस के संग तांबा बिगरचो ॥ सो तांबा कंचन होय निवरचो ॥ संतन संग कबीरा बिगरचो ॥ कबीर रामहिं होय निवरचो ॥ २१३ ॥

माथे तिलक हथ माला बाना ॥ लोगन राम खिलौना ॥ जाना ॥ जो हौं बौरा तो राम तोरा ॥ लोग मर्म काहि जानैं मोरा ॥ तोरों न पाती पूजों न देवा ॥ राम भगति बिन निहफल सेवा ॥ सतगुरु पूजों सदा सदा मनावों ॥ ऐसी सेव दरगहि सुख पावों ॥ लोग कहैं कबीर बौराना ॥ कबीर का मर्म राम पहिचाना ॥ २१४ ॥

निरधन आदर कोई न देय ॥ लाख यतन करैओह चित न धरेय ॥ जो निरधन सरधन के जाय ॥ आगे बैठा पीठ फिराय ॥

जो सरधन निरधन के जाय ॥ दीया आदर लिया बुलाय ॥ निरधन सरधन दोनों भाई ॥ प्रभु की कला न मेटी जाई ॥ कह कबीर निरधन है सोई ॥ जाके हिरदय नाम न होई ॥ २१५ ॥

गुरु सेवा ते भगति कमाई ॥ तब इह मानस देही पाई ॥ इस देही को सिमरें देव ॥ सो देही भज हरि की सेव ॥ भजहु गोविंद भूल मत जाहु ॥ मानस जन्म का एही लाहु ॥ जबलग जरा रोग नहिं आया ॥ जबलग काल ग्रसी नहिं काया ॥ जबलग विकल भई नहिं बानी ॥ भजले रे मन सारंगपानी ॥ अबना भजहिं भजहिं कब भाई ॥ आवै अंत न भज्या जाई ॥ जो कछु करहि सोई अबसार ॥ फिर पछताहु न पावहुपार ॥ सो सेवक जो लायोसेव ॥ तिनहीं पाये निरंजन देव ॥ गुरु मिल ताके खुले कपाट ॥ बहुरी न आवे योनी बाट ॥ इही तेरा औसर इह तेरी बार ॥ घटभीत तूं देख विचार ॥ कहत कबीर जीत कै हार ॥ बहुविध कह्यो पुकार पुकार ॥ २१६ ॥

सभ कोइ चलन कहत है वहां ॥ नाजानों बैकुंठ है कहां ॥ आप आपका मर्म न जाना ॥ बातनही बैकुंट बखाना ॥ जबलग मन वैकुंट की आस ॥ तबलग नाहीं चरण निवास ॥ खाई कोट न परल पगारा ॥ ना जानों बैकुंठ दुआरा ॥ कह कबीर अब कहिये काहि ॥ साधु संगत वैकुंठहिं आहि ॥ २१७ ॥

क्यों लीजै गढ़बंका भाई ॥ दोवर कोट अर तेवर खाई ॥ पांच पचीस मोह मद मत्सर आडी परवल माया ॥ जन गरीब को जोर न पहंचे कहा करों रघुराया ॥ काम किवारी दुखसुख दरवानी पाप पुण्य दरवाजा ॥ क्रोध प्रधान महा वड़ द्वंदर तहिं यन मवासी राजा ॥ स्वाद सनाह टोप ममता को कुबुद्धि कमान चढ़ाई ॥ तृष्णा तीर रहे घट भीतर यों गढ़ लियो न जाई ॥ प्रेमपलीता सुरत हवाई गोला ज्ञान चलाया ॥ ब्रह्म अग्नि सहजे परजाली एकहिं चोट सिझाया ॥ सत संतोष ले लरने लागा तोरे दोय दरवाजा ॥ साधु संगत अरु गुरुकी किरपा ते पकरचो गढ़ को राजा ॥ भगवत भीरि शक्ति सिमरन की कटी काल भय फांसी ॥ दास कबीर चढ़चो गढ़ ऊपर राज लियो अविनासी ॥ २१८ ॥

गंग गुसाइँन गहर गँभीर ॥ जंजीर बांध कर खरे कबीर ॥ मन न डिगे तन काहेको डराय ॥ चरण कमल चित रह्यो समाय ॥ गंगा की लहर मेरी टुटी जंजीर ॥ मृगछाला पर बैठे कबीर ॥ कह कबीर कोऊ संग न साथ ॥ जल थल राखतहै रघुनाथ ॥ २१९ ॥

कोटिसूर जाके परकास ॥ कोटिमहादेव अरुक विलास ॥ दुरगा कोटि जाके मर्दन करै ॥ ब्रह्मा कोटि वेद उच्चरै ॥ जो जांचों तो केवल राम ॥ आन देव सो नाहींकाम ॥ कोटि चंद्रमें करहिं चराक सुर तेतीसों जेवहिं पाक ॥ नव ग्रह कोटि ठाढे दर्बार ॥ धर्म कोटि जाके प्रतिहार ॥ पवन कोटि चौबारे फिरहिं ॥ बासक कोटि सेज बिस्तरहिं ॥ समुद कोटि जाके पनिहार ॥ रोमावलि कोटि अठारहिं भार ॥ कोटि कुबेर भरहिं भंडार ॥ कोटिक लक्ष्मी करहिं शृंगार ॥ कोटिक पाप पुण्य बहु हरहिं ॥ इंद्र कोटि जाके सेवा करहिं ॥ छपन कोटि जाके प्रतिहार ॥ नगरी नगरी खियत अपार ॥ लट छूटी बरतै विकराल ॥ कोट कला खेले गोपाल ॥ कोट यक्ष जाके दर्बार ॥ गंधर्व कोटि करहिं जैकार ॥ विद्या कोटि सभी गुण कहै ॥ तऊ पारब्रह्म का अंत न लहै ॥ बावनकोटि जाके रोमावली ॥ रावणसेना जहिं ते छली ॥ सहसकोटि बहु कहतपुरान ॥ दुर्योधन का मथ्या मान ॥ कंदर्प कोटि जाके लवै न धरहिं ॥ अंतर अंतर मनसा हरहिं ॥ कहकबीर सुनसारँगपान ॥ देहअभसपद मांगों दान ॥

रे जिह्वा करों शतखंड ॥ नाम न उचरस श्रीगोविंद ॥ रँगीले जिह्वा हरि के नायँ ॥ सुरँग रँगीले हरि हरि ध्यायँ ॥ मिथ्या जिह्वा अवरे काम ॥ निर्वाण पद इक हरि को नाम ॥ असंख्य कोटि अन पूजाकरी ॥ एक न पूजस नामहिं हरी ॥ प्रणवै नामदेउ इह कारण ॥ अनंत रूप तेरे नारायण ॥ २२१ ॥

परधन परदारापरहरी ॥ ताकेनिकट वसाइनरहरी ॥ जो न भजंते नारायणा ॥ तिनका मैं न करों दर्शना ॥ जिनके भीतर है अंतरा ॥ जैसे पशु तैसे वह नरा ॥ प्रणमत नामदेउ ना कहिं विना ॥ ना सोहै वत्ती सुलक्षना ॥ २२२ ॥

दूध कटोरी गडवे पानी ॥ कपिल गाय नामे दुइ आनी ॥ दूध पियो गोविंदेराय ॥ दूधपियो मेरो मन पतिआय ॥ नाहीं तो घर को बाप रिसाय ॥ सोयन कटोरी अमृत भरी ॥ लै नामे हरि आगे धरी॥ एक भगत मेरे हिरदे बसे ॥ नामे देख नरायन हँसे ॥ दूध प्याय भगत घर गया॥ नामे हरि का दर्शन भया॥ २२३ ॥

मैंबहुरी मेरा रामभतार ॥ रचरचताको करोशृंगार ॥ भलेनिंदो भले निंदो भलेनिंदो लोग ॥ तनमन राम प्यारे योग ॥ वाद विवाद काहू सों न कीजे ॥ रसना राम रसायन पीजे ॥ अब जिय जान ऐसी बन आई ॥ मिलों गुपाल निशान बजाई ॥ अस्तुति निंदा कर नर कोई ॥ नामे श्रीरंग भेटल सोई ॥ २२४ ॥

कबहूं खीर खांड घिउ नभावे ॥ कबहूं घर घर टूक मँगावे ॥ कबहूं कूरन चने बिनावे ॥ ज्यों राम राखे त्यों रहिये रेभाई ॥ हरि की महिमा कछु कथन नजाई ॥ कबहूं तुरे तुरंग नचावै ॥ कबहूं पाँय पनहीं हूं नपावे ॥ कबहूं खाट सुपेदी सुवावे ॥ कबहूं भूमिपै आर नपावे ॥ भनत नामदेउ इक नाम निस्तारे ॥ जिहिं गुरु मिलै तिहिं पार उतारै ॥ २२५ ॥

हँसत खेलत तेरे देहुरे आया ॥ भगति करत नामा पकर उठाया ॥ हीनड़ी जाति मेरे यादव राया ॥ छीपे के जन्म काहेको आया ॥ ले कमली चल्यो पलटाय ॥ देहुरे पाछे बैठा जाय ॥ ज्यों ज्यों नामा हरिगुण उचरे॥भमत जनां को देहुरा फिरे ॥२२६॥

घर की नारि त्यागे अंधा ॥ परनारी सों घाले धंधा ॥ जैसे सिंबल देख सुआ बिगसाना ॥ अंत की वार मूआ लपटाना ॥ पापी का घर अग्नि माहिं ॥ जलत रहै मिटवै कब नाहिं ॥ हरि की भगति न देखे जाय ॥ मारग छोड अमारग पाय ॥ मूलहु भूला आवे जाय ॥ अमृत डार लाद विष खाय ॥ ज्यों वेश्या के पैर अखारा ॥ कापर पहर करे शृंगारा ॥ पूरे ताल निहाले सास ॥ वाके गले यमका है फांस ॥ जाके मस्तक लिख्योकर्मा ॥ सो भज परहे गुरु की शर्ना ॥ कहत नामदेउ इह बीचार ॥ इन विध संतहु उतरो पार ॥ २२७ ॥

संडा मरका जाय पुकारे ।। पढै नहीं हमहीं पचहारे ।। राम कहै करताल बजावै चटिया सभी बिगारे ॥ राम नाम जपबो करै ॥ हिरदय हरिजी को सिमरन धरै ॥ वसुधा बश कीनी सभराज विनती करै पटरानी ॥ पूत प्रहलाद कह्यो नहिं मानै तिनतो औरहिं ठानी दुष्ट सभा मिलि मंत्र उपाया करसहि औध घनेरी ॥ गिर तर जल ज्वाला भय राख्यो राजा राम माया फेरी ॥ काढ खड्ग काल भय कोप्यो मोहिं बताय जो तोहिं राखै ॥ पीत पीतांबर त्रिभुवन धनी थंभ माहिं हरि भाखै॥ हरनाकुश जिन नखहिं बिदारचो सुरनर किये सनाथा ।। कह नामदेउ हम नरहरि ध्यावहिं राम अभयपददाता ॥

सुलतान पूँछे सुन वे नामा ।। देखों राम तुम्हारे कामा ॥ नामा सुलताने बांधला ॥ देखो तेरा हरि बीठुला ॥ बिसमल गऊ देहु जिवाय ॥ नातर गरदन मारों ठांय ॥ बादशाह ऐसी क्यों होय ॥ बिसमल किया न जीवै कोय ॥ मेरा कीया कछू नहोय ॥ करिहै राम होयहै सोय ॥ बादशाह चढ्यो अहंकार ॥ गज हस्ती दीनो चमकार ॥ रुदन करै नामे की माय ॥ छोड राम क्यों न भजहि खुदाय ॥ ना हौं तेरा पूंगड़ा ना तूं मेरीमाय ॥ पिंड पड़ै तो हरिगुण गाय ॥ करै गजिंद शुंड की चोट ॥ नामा उबरै हरि की ओट ॥ काजी मुल्ला करहिं सलाम ॥ इन हिंदू मेरा मल्या मान ॥ बादशाह वीनती सुनेह ॥ नामेसरभर सोना लेह॥माल लेउँतो दोजक परों ॥ दीनछोड दुनिया को भरों ॥ पांवों बेड़ी हाथोंताल ॥ नामा गावै गुण गोपाल ॥ गंग यमुन जो उलटी बहै ॥ तौ नामा हरि करता रहै ॥ सात घडी जब वीती सुनी ॥ अजहुं न आयो त्रिभुवन धनी ॥ पाखंतन बाज बजायला ॥ गरुड़ चढ़े गोविंद आयला ॥ अपने भगत पर की प्रतिपाल ॥ गरुड़ चढ़े आये गोपाल ॥ कहहिं तो धरनि इकोड़ी करों ॥ कहहिं तो लेकर ऊपर धरों ॥ कहहिं तो मूई गऊ देहुं जिवाय॥ सब कोई देखै पतियाय॥नामा प्रणवै सेलम सेल॥ गऊदुहाई वछरा मेल ॥ दूध हिं दुहि जब मटुकी भरी ॥ ले बादशाहके आगे धरी ॥ बादशाह महल में जाय ॥ औघट की घट लागी आय॥

काजी मुल्लां विनती फरमाय ॥ बखशी हिंदू मैं तेरी गाय ॥ नामा कहे सुनो बादशाह ॥ इह कछु पतीया मुझे दिखाय ॥ इस पतीये का इहै प्रमान ॥ साँच सील चालहु सुलतान ॥ नामदेव सब रह्या समाय ॥ मिल हिंदू सभ नामे पहिं जांहि ॥ जो अबकी बार न जीवै गाय ॥ तो नामदेव का पतीया जाय ॥ नामे की कीरत रही संसार॥ भगत जनां लै उधरया पार ॥ सकल कलेश निंदक भ्या खेद ॥ नामे नारायण नहीं भेद ॥ २२९ ॥

जो गुरुदेव तो मिलै मुरार ॥ जो गुरुदेव तो उतरै पार ॥ जो गुरुदेव तो वैकुंठ तरै ॥ जो गुरुदेव तो जीवत मरै ॥ सत्य सत्य सत्य सत्य सत्य गुरुदेव ॥ झूठ झूठ झूठ झूठ आन सभ सेव ॥ जो गुरुदेव तो नाम दृढ़ावै ॥ जो गुरुदेव न दह दिस धावै ॥ जो गुरुदेव पंच ते दूर ॥ जो गुरुदेव न मरबो झूर ॥ जो गुरुदेव तो अमृत बानी ॥ जो गुरुदेव तो अकथ कहानी ॥ जो गुरुदेव तो अमृत देह ॥ जो गुरुदेव नाम जप लेह ॥ जो गुरुदेव भवन त्रय सूझै ॥ जो गुरुदेव ऊँचपद बूझै ॥ जो गुरुदेव तो सीस अकास ॥ जो गुरुदेव सदा साबास ॥ जो गुरुदेव सदा वैरागी ॥ जो गुरुदेव परनिंदा त्यागी ॥ जो गुरुदेव बुरा भला एक ॥ जो गुरुदेव ललाटहि लेख ॥ जो गुरुदेव कंध नहिं हिरै॥ जो गुरुदेव देहुरा फिरै ॥ जो गुरुदेव तो छापर छाई ॥ जो गुरुदेव सहज निकसाई ॥ जो गुरुदेव तो अठसठ न्हाया ॥ जो गुरुदेव तन चक्र लगाया ॥ जो गुरुदेव तो द्वादश सेवा ॥ जो गुरु देव सभी विष मेवा ॥ जो गुरुदेव तो संशा टूटै ॥ जो गुरुदेव तो यमते छूटै ॥ जो गुरुदेव तो भौजल तरै ॥ जो गुरुदेव तो जन्म न मरै ॥ जो गुरुदेव अठदस व्योहार ॥ जो गुरुदेव अठारहि भार ॥ बिन गुरुदेव अवर नहिं जाई ॥ नामदेव गुरुकी शरणाई ॥ २३० ॥

आउ कलंदर केशवा॥ कर अबदाली भेशवा ॥ जिन आकाश कुलहि सिर कीनी कोसै सप्त पियाला ॥ चमर पोसका मंदिर तेरा इह विधि बने गुपाला ॥ छपन कोट का पेहन तेरा सोलह तहस इजारा ॥ भार अठारह मुदगर तेरा सहनक सभ संसारा ॥ देही

महजिद मन मौलाना सहज निमाज गुजारै॥ बीबी कौला सौका इन तेरा निरंकार आकारै ॥ भगति करत मेरे ताल छिनाये किहि पै करौं पुकारा॥नामे का स्वामी अंतरयामी फिरे सकल बेदेसवारा॥

राग बसंत हिंडोल ।

शालग्राम बिय पूज मनावो सुकृत तुलसी माला ॥ राम नाम जप बेड़ा बांधो दया करो दयाला ॥ काहे कलरा सिंचो जन्म गवाँवो ॥ काची ढहग दिवाल काहे गच लावो ।। कर हरिहट माल टिंड परोवो तिस भीतर मन जोवो ।। अमृत सिंचो भरो क्यारे तौ माली के होवो ।। काम क्रोध दोय करो बसोले गोडो ॥ धरती भाई ज्यों गोडो त्यों तुम सुख पावो किर्त न मेटया जाई ।। बगुले ते पुनि हँसुला होवै जे तू करहिं दयाला ।। प्रणमत नानक दासन दासा दया करो दयाला।। २३२ ।।

साधो इह तन मिथ्या जानो ॥ या भीतर जो राम वसत है सांचो ताहि पछानो ।। इह जग है संपति सुपने की देख कहा एंड़ानो ।। संग तिहारे कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ।। अस्तुति निंदा दोऊ परिहरि हरि कीरति उर आनो ।। जन नानक सभही में बूरन एक पुरुष भगवानो ।। २३३ ।।

राग वसंत ।

पापी हीये में काम वसाय ॥ मन चंचल याते रह्यो न जाय ॥ योगी जंगम अरु सन्यास ॥ सभही पर डारी इह फाँस ॥ जिहिं जिहिं हरि को नाम सम्हार ॥ ते भवसागर उतरे पार ॥ जन नानक हरि की शरनाय ॥ दीजै नाम रहै गुण गाय ॥ २३४ ॥

माई मैं धन पायो हरि नाम ॥ मन मेरो धावन ते छूट्यो कर बैठो बिश्राम ॥ माया ममता तनते भागी उपज्यो निर्मल ज्ञान ॥ लोभ मोह यह परस नसाकें गही भगति भगवान ॥ जन्म जन्म का संशय चूका रत्न नाम ज़ब पाया ॥ तृष्णा सकल विनाशी मनते निज सुख माहिं समाया ॥ जाको होत दयाल कृपानिधि सो गोविंद गुणगावै ॥ कहुनानक यह विधि की संपै कोऊ गुरुमुखपावै ॥ २३५ ॥

मन कहा बिसारचो रामनाम ॥ तन बिनशै यम सों परै काम ॥ इह जग धूएँ का पहार ॥ तैं सांचा मन्यो किहिं बिचार ॥ धन दारा संपति और गेह ॥ कछु संग न चालै समझलेह ॥ इक भगति नारायण होय संग ॥ कहु नानक भज तिहिं एक रंग ॥ २३६ ॥

कह भूल्योंरे झूठे लोभ लाग ॥ कछु बिगरचो नाहिंन अजहुं जाग ॥ सम सुपने के इह जग जान ॥ बिनशै छिन में साँचीमान ॥ संग तेरे हरि बसत नीत ॥ निशि बासर भज ताहि मीत ॥ बार अंत की होय सहाय ॥ कहु नानक गुण ताके गाय ॥ २३७ ॥

सुन साखी मन जप प्यार ॥ अजामल्ल उधरचा कह एकबार ॥ बालमीकहिं होया साधु संग ॥ ध्रुव को मिल्यो हरि निशंक ॥ तेरचां संतां जाचों चरण रेन ॥ ले मस्तक लावों कर कृपा देन ॥ गणिका उधरी हरि कहै तोत ॥ गजेंद्र ध्यायो हरि कियो मोक्ष ॥ विप्र सुदामे दारिद भंज॥रे मन तू भी भज गोविंद ॥ बधिक उधारचो खम प्रहार ॥ कुबजा उधरी अंगुष्ठ धार ॥ विदुर उधारचो दासत भाय रे मन तू भी हरि ध्याय ॥ प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ वस्त्र छीनत द्रौपदी रखी लाज ॥ जिन जिन सेवया अंत बार ॥ रे मन सेव तूं परहिं पार ॥ धन्ने सेवया बाल बुद्धि ॥ त्रिलोचन गुरु मिल भई सिद्धि ॥ वेणी को गुरु कियो प्रकास ॥ रे मन तूभी होहि दास ॥ जैदेव त्याग्यो अहंमेव ॥ नाई उधरचो सैन सेव ॥ मन डिगै न डोलहि कहूं जाय ॥ मन तूभी तरसहि शरण पाय ॥ जिहिं अनुग्रह ठाकुर कियो आप ॥ सो तैं लीने भगत राख ॥ तिनका गुण अवगुण न विचारचो कोय ॥ इह बिध देख मन लगासेव ॥ कबीर ध्यायो एक रंग ॥ नामदेव हरजी वसहिं संग ॥ रामदास न्याये प्रभु अनूप ॥ गुरु नानक देव गोविंद रूप ॥ २३८ ॥

पंडित जन माते पढ़ पुरान ॥ योगी माते योग ध्यान ॥ संन्यासी माते अहंमेव ॥ तपसी माते तप के भेव ॥ सभ मद माते कोऊ न जाग ॥ संग ही चोर घर मुसन लाग ॥ जागे शुकदेव अरु अक्रूर ॥ हनुमंत जागे धर लंकूर ॥ शंकर जागे चरण सेव ॥ कलि जागे नामा

जैदेव ॥ जागत सोवत बहु प्रकार ॥ गुरुमुख जागे सोई सार ॥ इस देही के अधिक काम ॥ कह कबीर भज राम नाम ॥ २३९ ॥

इस तन मन मध्ये मदन चोर ॥ जिन ज्ञान रत्न हरि लीन मोर ॥ मैं अनाथ प्रभु कहों काहि ॥ को को न बिगूतो मैं को आहि ॥ माधो दारुन दुख सह्यो न जाय ॥ मेरो चपल बुद्धि सों कहा वसाय ॥ सनक सनंदन शिव शुकादि ॥ नाभि कमल जाने ब्रह्मादि ॥ कवि जन योगी जटा धार ॥ सभ आपन औसर चले सार ॥ तूं अथाह मोहिं थाह नाहिं ॥ प्रभु दीनानाथ दुख कहों काहिं ॥ मेरो जन्म मरण दुख आथ धीर ॥ सुखसागर गुण रम कबीर ॥ २४० ॥

कहत जाइयेरे घर लागो रंग ॥ मेरा चित न चलै मन भयोपंग ॥ एक दिवस मन भई उमंग ॥ घस चंदन चोआ बहु सुगंध ॥ पूजन चाली ब्रह्म ठाय ॥ सो ब्रह्म बतायो गुरु मनहि माहि ॥ जहां जाइये तहिं जल पखान ॥ तूं पूर रह्योहै सभ समान ॥ वेद पुराण सब देखे जोय ॥ ऊहां तौ जाइये जो ईहां न होय ॥ सतगुरुमैं बलिहारी तोर जिन सकल विकल भ्रम काटे मोर ॥ रामानंद स्वामी रमत ब्रह्म गुरुका शब्द काटै कोटि कर्म ॥ २४१ ॥

तुझहिं सुझंता कछु नाहिं ॥ पहिरावा देखे ऊभ जाहिं ॥ गर्ववती का नाहीं ठाउँ ॥ तेरी गर्दन ऊपर लवै काउँ ॥ तू काहि गर्वहि बावली ॥ जैसे भादों खूंबरा जो तूं तिसते खरी उतावली ॥ जैसे कुरंग नहीं पायो भेद ॥ तन सुगंध ढूंढ़ प्रदेश ॥ अप तन का जो करे विचार ॥ तिस नहि यम किंकर करे खुआर ॥ पुत्र कलत्र का करहिं अहंकार ॥ ठाकुर लेखा मंगन हार ॥ फेडे का दुख सहे जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥ साधू की जो लेहिं ओट ॥ तेरे मिटहिं पाप सभ कोट कोट ॥ कह रामदास जो जपहिं नाम ॥ तिस जाति न जन्म न योनि काम ॥ २४२ ॥

सुरहि की जैसी तरी चाल ॥ तेरी पूंछट ऊपर झमक बाल ॥ इस घर में है सो तूं ढूंढ़ खाहि ॥ और किसही के तू मतिही जाहि ॥ चाकी चाटहि चूनखाहि ॥ चाकीका चीथरा कहां लैजाहि ॥ छींकेपर

तेरी बहुत डीठ ॥ मत लकरी सोटा तेरी परैपीठ ॥ कह कबीर भोग भले कीन ॥ मति कोऊ मारै ईंट डीम ॥ २४३ ॥

राग सारंग ।

जप मन राम नाम पढ़ सार ॥ राम नाम विनथिर नहिं कोई और निष्फल सभ विस्तार ॥ क्या लीजे क्या तजिये बौरे जो दीसै सो छार ॥ जिन विषय को तुम अपने कर जानो सो छोड जाहु सिर भार ॥ तिल तिल पल पल औध पुनि घाटै बूझ न सके गवांर ॥ सो कछु करै जो साथ न चालै इह शाकत का आचार ॥ संत जनां के संग मिल बोरे तौ पावहि मोक्ष द्वार ॥ विन सतसंग सुख किने नपाया जाय पूछहु वेद विचार ॥ राणा राउ सभी कोऊ चालै झूठ छोड जाय पासार ॥ नानक संत सदा स्थिर निश्चल जिन राम नाम आधार ॥ २४४ ॥

ठाकुर तुम शरणाई आया ॥ उतर गयो मेरे मन का संशा जबते दर्शन पाया ॥ अनबोलत मेरी बिर्था जानी अपना नाम जपाया ॥ दुख नाठे सुख सहज समाये अनद अनद गुण गाया बांह पकर कढ लीनें अपने गृह अंध कूप ते माया ॥ कहु नानक गुरु बंधन काटे बिछुरत आन मिलाया ॥ २४८ ॥

गोविंदजी तूं मेरे प्राण अधार ॥ साजन मीत सहाई तुमहीं तूं मेरो परिवार ॥ कर मस्तक धारयो मेरे माथे साधु संग गुण गाये ॥ तुमरी कृपा ते सभ फल पाये रसिक राम नाम ध्याये ॥ अविचल नींव धराई सतगुरु कबहूं डोलत नाहीं ॥ गुरु नानक जब भये दयाला सर्व सुखांनिधि पाहीं ॥ २४६ ॥

हरि विन तेरो कौन सहाई ॥ काकी मात पिता सुत वनिता को काहूको भाई ॥ धन धरनी अरु संपति सगरी जो मान्यो अपनाई ॥ तन छूटे कछु संग न चालै कहा ताहि लपटाई ॥ दीन दयाल सदा दुखभंजन तासों रुचि न बढ़ाई ॥ नानक कहत जगत सभ मिथ्या ज्यों सुपना रैनाई ॥ २४७ ॥

कहा मन विषयनसों लपटाई ॥ याजग में कोउ रहन न पावै इक आवै इक जाई ॥ काको तन धन संपती काकी कासों नेह लगाई ॥ जो दीसै सो सकल विनाशै ज्यों बादर की छाई ॥ तज अभिमान शरण संतन गहु मुक्त होहिं छिन माहीं ॥ जन नानक भगवंत भजन विन सुख सुपने भी नाहीं ॥ २४८ ॥

कहा नर आपनो जन्म गवँवै ॥ माया मद विषया रस राच्यो राम शरण नहिं आवै॥इह संसार सकल है सुपनो देख कहा लोभावै जो उपजै सो सकल विनाशै रहन न कोऊ पावै ॥ मिथ्या तन सांचो कर मान्यो इह विध आप बँधावै ॥ जन नानक सोऊ जग मुक्ता राम भजन चित लावै ॥ २४९ ॥

मन कर कबहुँ न हरिगुणगायो ॥ विषयासक्त रह्यो निशिवासर कीनो अपनो भायो ॥ गुरु उपदेश सुन्यो नहिं कानन परदारा लप टायो ॥ पर निंदा कारन बहु धावत समझ्यो नहिं समझायो ॥ कहा कहों मैं अपनी करनी जिंहि विध जन्म गवाँयो ॥ कह नानक सभ औगुण मोमें राख लेहु शरनायो ॥ २५० ॥

कहा नर गरबस थोरी बात ॥ मन दस नाज टका चार गांठी ऐंडो टेढ़ो जात ॥ बहुत प्रताप गाउँ सों पाये द्वै लख टका बरात दिवस चार की करो साहिबी जैसे वन हर पात ॥ ना कोऊ लैआयो इह धन ना कोऊ लैजात ॥ रावण हूं ते अधिक छत्रपति छिन में भये बिलात ॥ हरि के संत सदा थिर पूजो जो हरि नाम जपात ॥ जिनको कृपा करत है गोविंद ते सतसंग मिलात ॥ मात पिता वनिता सुत संपति अंत न चलत सँगात ॥ कहत कबीर राम भज बौरे जन्म अकारथ जात ॥ २५१ ॥

काहे रेमन विषया वन जाय भूलोरे ठग मूरी खाय ॥ जैसे मीन पानी में रहै ॥ काल जाल की सुध नहिं लहै ॥ जिह्वा स्वादी लीलत लोह ॥ ऐसे कनक कामिनी बांध्यो मोह ॥ ज्यों मधु माखी संचै अपार ॥ मधु लीनो मुख दीनो छार ॥ गऊ बाछ को संचै क्षीर गला बांध दुह लेयअहीर ॥ माया कारन श्रम अतिकरै ॥ सो माया

ले गाडे धरै ॥ अति संचै समझै नहिं मूढ़ ॥ धन धरती तन ह्वै गयो धूड़ ॥ काम क्रोध तृष्णा अति जरै ॥ साधु संगत कबहूं नहिं करै ॥ कहत नामदेउ ताचीआन ॥ निरभय ह्वै भजिये भगवान ॥

बदो क्योंना होड़ माधो मोसों ॥ ठाकुर ते जन जन ते ठाकुर खेल परचोहै तोसों ॥ आपन देव देहरा आपन आप लगावे पूजा ॥ जल ते तरंग तरंग ते है जल कहन सुनन को दूजा ॥ आपहिं गावै आपहिं नाचै आप बजावैतूरा ॥ कहतनामदेउ तू मेरो ठाकुरजनऊरातूपूरा

तैं नर क्या पुराण सुन कीना ॥ अनपायनी भगति नहिं उपजी भूखे दान न दीना ॥ काम न विसरचो क्रोध न विसरचो लोभ न छूट्यो देवा ॥ परनिंदा मुखते नहिं छूटी निफल भई सभ सेवा ॥ बाट पार घर मूस विरानोपेटभरै अपराधी ॥ जिहि परलोक जाय अपकीरत सोई अविद्या साधी ॥ हिंसा तो मन ते नहिं छूटी जीय दया नहिं पाली ॥ परमा नंद साधु संगत मिल कथा पुनीत न चाली ॥ २५४॥

हरि विन कौन सहाइ मनका ॥ मात पिता भाई सुत वनिता हित लागो सभ फन का ॥ आगेको कछु तुलहा बांधो क्या भरवासा धन का ॥ कहा बिसासा इस भांडे का इतनक लागै ठनका ॥ सकल धर्म पुण्य फल पावो धूर बांछहु सभ जन का ॥ कहै कबीर सुनोरे संतहु इह मन उडन पखेरू वनका ॥ २५५ ॥

राग मलहार।

माई मोहिं प्रीतम देहु मिलाई ॥ सकल सहेली सुख भर सूती जिहिं घर लाल बसाई ॥ मोहिं अवगुण प्रभु सदा दयाला मोहिं निर्गुण क्या चतुराई ॥ करों बराबर जो पिया संग राती इह मेरी ढीठाई ॥ भई निमाणी शरण इक ताकी श्री सतगुरु पुरुष सुखदाई॥ एक निमिष में मेरा सभ दुख काट्या नानक सुख रैन बिहाई २५६॥

मेरे प्रीतम प्राण पियारे ॥ प्रेमभक्ति अपनो नाम दीजै दयाल अनुग्रह धारे ॥ सुमिरों चरण तिहारे प्रीतम हृदय तिहारी आसा ॥ संत जनां पै करों बेनती मन दर्शन की प्यासा ॥ विछुरत मरन

जीवन हरि मिलते जन को दर्शन दीजै ॥ नाम अधार जीवन धन नानक प्रभु मेरे किरपा कीजै ॥ २५७ ॥

हरि के भजन कौन कौन न तारे ॥ खग तन मीन तन मृग तन वराहतन साधू संग उधारे॥ देव कुल दैत्य कुल यक्ष किन्नर नर सागर उतरे पारे ॥ जोजो भजन करै साधूसंग ताके दुःख विदारे ॥ काम क्रोध महा विषया रस इनते भये निरारे ॥ दीन दयाल जपहिं करुणामय नानक सद बलिहारे ॥ २५८ ॥

हे गोविंद हे गोपाल हे दयाल लाल ॥ प्राण नाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥ हे समर्थ अगम्यपूर्ण मोहि मया धार ॥ अंध कूप महा भ्यान नानक पार उतार ॥ २५९ ॥

सेवीले गोपाल राय अकुल निरंजन ॥ भगति दान दीजै याचहिं संत जन ॥ याचहिं घरि दिग दिसै सरायचा वैकुंठ भवन चित्रशाला सप्त लोक सामान पूरीयले ॥ याचहिं घर लक्षमी कुआरी ॥ चंद सूरज दीवड़े कौतुक काल बपुड़ा कोतवाल सुकरासिरी ॥ सो ऐसा राजा श्रीनरहरी॥ याँचै घर कुलाल ब्रह्मा चतुमुख डांवड़ा जिन विश्व संसार राचीले ॥ जाके घर ईश्वर बावला जगत गुरु तत्व सारखा ज्ञान भाषीले ॥ पाप पुण्य याँचे डांगी द्वारै चित्रगुप्त लेखीया ॥ धर्मराय परली प्रतिहार ॥ सो ऐसा राजा श्रीगोपाल ॥ याँचै घर गण गंधर्व ऋषि बपुरे ढाडीया गावत आछै ॥ सर्व शास्त्र बहुरूपिया अनगरूआ आखाड़ा मंडलीक बोल बोलहिं काछे ॥ चौर ढूल याँचै हैं पवन ॥ चेरी शक्ति जीतले भवन ॥ अंड टूक याचै भसमती ॥ सो ऐसा राजा त्रिभुवन पती ॥ याँचे घर कूर्मा पाल सहस्र फनी बासक सेज वालूआ ॥ अठारा भार बनासपती मालणी छिनवे करोड़ी मेघ माला पाणी हारीया ॥ नख प्रसेव याँचै सुरसरी सप्त समुंद याँचे घडथली ॥ एते जीव याँचे बरतनी ॥ सो ऐसा राजा त्रिभुवन धनी ॥ यांचै घर निकटवर्ती अर्जुन धरू प्रहलाद अंबरीष नारद नेजै सिद्ध बुद्ध गण गंधर्व बानबे हेला ॥ एते जीय याँचहिं हैं घरी ॥ सर्वव्यापक अंतर हरी ॥ प्रणवै नामदेउ ताँची आण ॥ सकल भगत याँचे नीसाण ॥ २६० ॥

मोकों तू न बिसार तू न बिसार ॥ तू न बिसारे रामैया ॥ आला वंतीएहभ्रम जोहै मुझ ऊपर सभकोपिला॥शूद्रशूद्र कर मारउठायो कंहा करों बाप बीठला ॥ मूए हुए जो मुक्ति देहुमे मुक्ति नजानै को थैला ॥ एहपंडीया मोकों ढेढ कहत तेरी पैज पिछौड़ी होयला ॥ तूं जो दयाल कृपाल कहीयत हैं अति भुज भयो अपारला ॥ फेर दिया देहुरा नामे को पंडीयन को पिछवारला ॥ २६१ ॥

नागर जनां मेरी जाति विख्यातचमारं॥ ह्रदय राम गोविंद गुण सारं ॥ सुरसरी सलिल कृत वारुणी रेसंत जन करत नहीं पानं ॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहीं होय आनं ॥ तरतार अपवित्र कर मानीयेरे जैसे कागरा करतवीचारं ॥ भगति भागवत लिखिये तिहिं ऊपरे पूजिये कर नमसकारं ॥ मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता नितहिं बानारसी आस पासा ॥ अब विप्र प्रधान तिहिं कराहिं डंडौत तेरे नाम शरनाय रामदासदासा॥२६२॥

हरि जपत तेऊ जनां पदम कमलास पति तास सम तुल्य नहिं आन कोऊ ॥ एक ही एक अनेक है विस्तरचो आन रे आन भरपूर सोऊ ॥ जाके भागवत लेखिये अवर नहिं पेखिये तासु की जाति आछोप छीपा ॥ व्यासमें लेखिये सनक में पेखिये नाम की नामना सतदीपा ॥ जाकेईद बकरीद कुलगऊ रे बध कराहिं मानिये सेखसहीदपीरा ॥ जाके बाप वैसीकरी पूत ऐसी सरी तिहुंरे लोक प्रसिद्ध कबीरा ॥ जाकेकुटुंब के ढेढ़ सभ ढोर ढोवंत फिराहिं अजहुं बंनारसी आस पासा ॥ आचार सहित बिप्र कराहिं डंडौत तिन तनय रामदास दासानुदासा ॥ २६३ ॥

राग कान्हरा ।

चरण शरण गोपाल तेरी ॥ मोह मान द्रोह भ्रम राख लीजे काट बेरी ॥ बूडत संसार सागर ॥ उधरे हरि सिमर रत्नाकर ॥ शीतला हरि नाम तेरा ॥ पूरनो ठाकुर प्रभु मेरा ॥ दीनदरद निवार तारन ॥ हरि कृपानिधि पतित उधारन ॥ कोटि जन्म दूख कर पायो ॥ सुखी नानक गुरु नाम द्दढ़ायो ॥ १६४ ॥

राग प्रभाती ।

प्रभु की सेवा जन की शोभा ॥ काम क्रोध मिटे तिस लोभा ॥ नाम तेरा जन के भंडार ॥ गुणगावहिं प्रभु दर्श प्यार ॥ तुमरी भगति प्रभु तुमहींजनाई॥काठ जेवरी जम लिये छुडाई॥जोजन राता प्रभुके रंग ॥ तिन सुख पाया प्रभु के संग ॥ जिस रस आया सोई जानै॥पेख पेख मनमें हैरानै ॥ सो सुखिया सभते ऊतम सोय ॥ जाके हिरदय बस्या प्रभु सोय ॥ सोई निहचल आवे न जाय ॥ अनुदिन प्रभु के हरिगुण गाय ॥ ताको करो सकल नमस्कार ॥ जाके मन पूरण निरंकार ॥ कर किरपा मोहिं ठाकुर देवा ॥ नानक उधरै जनकी सेवा ॥

गुण गावत मन होय अनंद ॥ आठ पहिर सिमरो भगवंत ॥ जाके सिमरन कलि मल जाहि ॥ तिस गुरु की हम चरनी पाहि ॥ सुमति देवो संत प्यारे ॥ सिमरों नाम मोहिं निस्तारे ॥ जिन गुरु कह्या मारग सीधा ॥ सकल त्याग नाम हरि गीधा ॥ तिस गुरु के सदा बल जाइये ॥ हरि सिमरन जिस गुरुते पाइये ॥ बूडत प्रानी जिन गुरुहिं तराया ॥ जिस प्रसाद मोहै नहिं माया ॥ हलत पलत जिन गुरा सवारचा ॥ तिस गुरु ऊपर सदा हौं वारचा ॥ महा मुगधते कीया ज्ञानी ॥ गुरु पूरेकी अकथ कहानी ॥ पारब्रह्म नानक गुरुदेव ॥ बड़े भाग पाइये हरि सेव ॥ २६६ ॥

मनमें क्रोध महा अहंकारा ॥ पूजा करहिं बहुत विस्तारा ॥ कर अस्नान तन चक्र बनाये॥अंतरकी मल कबहूं न जाये ॥इत संयम प्रभु किनहूं न पाया ॥ भगोती मुद्रा मन मोह्या माया ॥ पाप करहिंपंचों के वसरे ॥ तीर्थ न्हाय कहहिं सब उतरे ॥ बहुरी कमावहिं होय निशंक ॥ यमपुर बांध खरे कालंक ॥ घूँघर बांध बजावहिं ताला ॥ अंतर कपट फिरहिं बेताला ॥ बरमी मारी सांप न मूआ ॥ प्रभु सब कछु जानै जिन तूं कीया ॥ पूंअर ताप गेरी के वस्त्रा ॥ अपदा का मारचा गृहते नसता ॥ देश छोड परदेशहिं धाया ॥ पंच चंडाल नाले लै आया ॥ कान फराय हिरायटूका॥घर घर मांगे तृप्तावन ते चूका ॥ वनिता छोड बद नजर परनारी ॥ वेस न पाइये महा दुखारी ॥

बोले नाहीं होय बैठा मोनी ॥ अंतर कपल भवाइये जोनी ॥ अन्न ते रहिता दुख देही सहिता ॥ हुकम न बूझे व्याप्या ममता ॥ बिन सतगुरु किने न पाई परम गते ॥ पूछहु सकल वेद सिमृते ॥ मन मुख कर्म करे अजाई ॥ ज्यों वालू घर ठौर न ठाई ॥ जिसनूं भये गोविंद दयाला ॥ गुरु का वचन तिन बांध्यो पाला ॥ कोटि मध्ये कोई संत दिखाया ॥ नानक तिनके संग तराया ॥ जे होवै भाग तो दर्शन पाइये ॥ आप तरे सभ कुटुंब तराइये ॥ २६७ ॥

राग जैजैवंती ।

राम भज राम भज जन्म सिरातहै ॥ कहों कहा बार बार समझत नहिं क्यों गवाँर विनशत नहिं लगे बार ओरे सम गात है ॥ सकल भर्म डार देह गोविंद को नाम लेह अंत बार संग तेरे यही एक जात है ॥ विषया विष ज्यों विसार प्रभु को यश हिये धार नानक जन कह पुकार औसर विहात है ॥ २६८ ॥

रेमन कौन गति होयहै तेरी ॥ इह जग में राम नाम सो तो नहीं सुन्यो कान विषयन सों अति लुभान मति नाहिन फेरी ॥ मानस को जन्म लीन सिमरन नहिं निमिष कीन दारा सुख भयो दीन पगहुं परी बेरी॥नानक जन कह पुकार सुपने ज्यों जग पसार सिमिरत नहिं क्यों मुरार माया जाकी चेरी ॥ २६९ ॥

बीत जैहै बीत जैहै जन्म आकाजरे ॥ निशि दिन सुनके पुराण समझत नहिंरे अजान काल तोपहूँच्यो आन कहां जैहै भाजरे ॥ अस्थिर जो मान्यो देह सो तो तेरी ह्वैहै खेह क्यों ना हरि को नाम लेहं मूरख निलाजरे ॥ राम भगति हिये आन छोड़दे तू मनको मान नानक जन कह बखान जग में बिराजरे ॥ २७० ॥

वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिजी ॥ कमलनयन मधुर बैन कोटि सैन संग शोभ कहत मा जसोध जिसहिं दही भात खाहिजी देख रूप अति अनूप मोह महा मग्न भई किंकिणी शब्द झनतकार खेल पाहिजी ॥ काल कलम हुकम हाथ कहो कौन मेट सके ईश थंम ज्ञान ध्यान धरत हिये चाहि जी ॥ सत्य साँच श्री निवास आदि

पुरुष सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जी ॥ २७१ ॥

राम नाम परम धाम शुद्ध बुद्ध निराकार बेशुमार सर्बर को काहि जी ॥ सुथिर चित्त भगत हित्त भेष धरचो हरनाकुश हरचो नख विदार जी ॥ शंख चक्र गदा पद्म आपि आप कियो छदम अपरंपर पारब्रह्म लखै कौन ताहि जी ॥ सत्त साँच श्रीनिवास आदि पुरुष सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जी ॥ २७२ ॥

पीत वसन कुंद दसन प्रिया सहित कंठ माल मुकुट शीश मोर पंख चाहि जी ॥ बे वज़ीर बड़े धीर धर्म अंग अलख अगमखेल किया आपणे उछाहि जी ॥ अकथ कथा कथी नजाय तीन लोक रह्या समाय स्वतेसिद्ध रूप धरचो शाहन के शाह जी ॥ सत्य साँच श्रीनिवास आदिपुरुष सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जी ॥

चौपाई।

सिमरो सिमर सिमर सुख पावो ॥ कलि कलेश तन माहिं मिटावो ॥ सिमरो जासु विश्वंभर एकै ॥ नाम जपत अनगिनत अनेकै ॥ वेद पुराण सिमृत सुधाक्षर ॥ कीने राम नाम इक अक्षर ॥ किणका एक जिस जीय बसावै ॥ ताकी महिमा मनी न आवै ॥ कांछी एको दर्श तिहारो ॥ नानक उन सँग मोहिं उधारो ॥ २७४ ॥

प्रभुके सिमरन रिद्ध सिद्धनौनिधि ॥ प्रभुकेसिमरन ज्ञान ध्यान तत्व बुद्धि ॥ प्रभु को सिमरन जप तप पूजा ॥ प्रभुके सिमरन विनशे दूजा ॥ प्रभु के सिमरन तीर्थ अस्नानी ॥ प्रभु के सिमरन दरगाहि मानी ॥ प्रभु के सिमरन होय सुभला ॥ प्रभुके सिमरन सुफल फला॥ सेसिमराहि जिन आप सिमराये॥ नानकताके लागों पाये

प्रभु को सिमरैं सो पर उपकारी ॥ प्रभु को सिमरैं तिन सद प्रभु बलिहारी ॥ प्रभु को सिमरैं सो मुख सुहावै ॥ प्रभु को सिमरैं तिन सुख बिहावै ॥ प्रभु को सिमरैं तिन आत्मा जीता ॥ प्रभु को सिमरैं तिन निर्मल रीता ॥ प्रभु को सिमराहि तिन अनँद घनेरे ॥ प्रभु को सिमराहिं बसाहिं हरि नेरे ॥ संत कृपाते अनुदिन जाग ॥ नानक सिमरन पूरे भाग ॥ २७६ ॥

जहिं मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन ऊहां नाम तेरे संग सहाई ॥ जहिं महा भ्यान दूत यमदलै ॥ तहिंकेवल नाम संग तेरे चलै ॥ जहिं मुशकल होवै अति भारी ॥ हरि को नाम छिनमाहीं उधारी ॥ अनिक पुरश्चर्ण करत नहींतरै ॥ हरिको नाम कोटि पाप परिहरै ॥ गुरुमुख नाम जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सुख घनेरे

जिहिं मारग के गिने जाहिं न कोसा ॥ हरि का नाम ऊहां संग तोसा ॥ जिहिं पैंडे महा अंध गुबारा ॥ हरि का नाम संग उज्यारा जहां पंथ तेरा को न स्यानू ॥ हरि का नाम तहां नाल पछानू जहिंमहा भ्यान तप्त बहुघाम ॥ तहिंहरि के नामकी तुमऊपरछाम॥ जहां तृषा मन तुझ आकरषै ॥ तहिं नानक हरि हरि अमृत बरषै॥

हरि हरि जन के माल खजीना ॥ हरि धन जन को आप प्रभु दीना ॥ हरि हरि जनके ओट सतानी ॥ हरि प्रताप जन अवर न जानी ॥ ओत प्रोत जन हरि रसराते ॥ शुन्न समाधि नाम रस माते आठ पहर जन हरि हरि जपै ॥ हरि का भगत प्रगट नहिं छपै॥ हरि की भगति मुक्ति बहु करे ॥ नानक जन संग केते तरे ॥ २७९॥

जापताप ज्ञान सभध्यान ॥ षट्शास्त्र सिभृत व्याख्यान ॥ योग अभ्यास कर्म धर्म क्रिया ॥ सकल त्याग वन मध्ये फिरया ॥ अनिक प्रकार किये बहु यत्ना ॥ पुण्य दान होमे बहु रत्ना ॥ शरीर कटाय होमे कर राती ॥ व्रत नेम करे बहु भांती ॥ नहीं तुल्य राम नाम बीचार ॥ नानक गुरुमुख नाम जपिये इक बार ॥ २८० ॥

सकलपुरुष में पुरुष प्रधान ॥ साधु संग जाका मिटै अभिमान॥ आपन को जो जानै नीचा ॥ सोऊ गिनिये सभते ऊँचा ॥ जाका मन होय सकल की रीना ॥ हरि हरि नाम तिन घट घट चीना ॥ मन अपने ते बुरा मिटाना ॥ पेखे सकल सृष्टि साजना ॥ सूख दूख जन सम दृष्टेता ॥ नानक पाप पुण्य नहिं लेपा ॥ २८१ ॥

निरधन को धन तेरो नाउँ ॥ निथावें को नाम तेरा थाउँ ॥ निमाने को प्रभु तेरो मान ॥ सकल घटों को देवहु दान ॥ करन करावन हार स्वामी ॥ सकल घटों के अंतरयामी ॥ अपनी गति

मति जानहुँ आपे ॥ आपन संग आप प्रभु राते ॥ तुमरी अस्तुति तुमते होय ॥ नानक अवर न जानत कोय ॥ २८२ ॥

सर्व धर्म में श्रेष्ठ धर्म ॥ हरिको नाम जप निर्मल कर्म ॥ सकल क्रिया में उत्तम क्रिया ॥ साधुसंग दुर्मति मलहरया ॥ सकसउद्यम में उद्यम भला ॥ हरि का नाम जपहु जिय सदा ॥ सकल वानी में अमृत वानी ॥ हरिको यश सुन रसन बखानी ॥ सकल थान ते सो उत्तम थाउँ ॥ नानक जिहि घट बसै हरि नाउँ ॥ २८३ ॥

जिहिं प्रसाद धर ऊपर सुख बसहिं ॥ सुत भ्रात मीत वनिता संग हँसहिं ॥ जिहिं प्रसाद पीवहिं शीतल जला ॥ सुखदाई पवन पावक अमला ॥ जिहिप्रसाद भोगहिं सभरसा ॥ सकल समग्री संग साथ बसा ॥ दीने हस्त पावँ कर्ण नेत्र रसना ॥ तिसहिं त्याग अवर संगरचना ॥ ऐसेदोष मूढ़ा अंधव्यापे ॥ नानक काढ़ि लेहु प्रभुआपे॥

आदि अंत जो राखनहार ॥ तिससों प्रीति न करैगवाँर ॥ जाकी सेवा नवनिधि पावै ॥ तासों मूढ़ा मन नहिं लावै ॥ जो ठाकुर सद सदा हजूरे ॥ ताको अंधा जानत दूरे ॥ जाकी टहल पावै दरगहि मान ॥ तिसहि विसारै मुग्ध अजान ॥ सदा सदा इह भूलनहार ॥ नानक राखन हार अपार ॥ २८५ ॥

रत्न त्याग कौडी सँग रचै ॥ साँच छोड झूठ सँग मचै ॥ जो छडना सो स्थिर कर माने ॥ जो होवन सो दूर परानै ॥ छोड़ जाय तिसका श्रम करै ॥ संग सुहाई तिस परिहरै ॥ चंदन लेप उतारै धोय ॥ गरदभ प्रीति भसम सँग होय॥ अंधकूप में पतित विकाल ॥ नानक काढ लेहु प्रभु दयाल ॥ २८६ ॥

संग सहाई सो आवै न चीत ॥ जो बैराई तासों प्रीत ॥ बलुआ के गृह भीतर बसै ॥ आनँद केलि माया रँग रसै ॥ दृढ कर मानै मनहि प्रतीत ॥ काल न आवै मूढे चीत ॥ वैर विरोध काम क्रोध मोह ॥ झूठ विकार महा लोभद्रोह ॥ याहूजुगति विहाने कईजन्म॥ नानक राखि लेहु आपन कर कर्म ॥ २८७ ॥

तुम ठाकुर तुम पहि अरदास ॥ जीउ पिंड सब तुमरी रास ॥

तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी कृपा में सूख घनेरे ॥ कोय न जाने तुमरा अंत ॥ ऊंचे ते ऊंचा भगवंत ॥ सकल समग्री तुमरे सूत्रधारी ॥ तुमते होय सो आज्ञाकारी ॥ तुमरी गति मति तुमहीं जानी ॥ नानक दास सदा कुरवानी ॥ १८८ ॥

मिथ्या तन धन कुटुंब सवाया ॥ मिथ्या हौं मैं ममता माया ॥ मिथ्या राज यौवन धन माल ॥ मिथ्या काम क्रोध विकराल ॥ मिथ्या रथ हस्ती अश्व वस्त्रा ॥ मिथ्या रंग संग माया पेख हँसता ॥ मिथ्या द्रोह मोह अभिमान ॥ मिथ्या आपस ऊपर करत गुमान ॥ अस्थिर भगति साधु की शरण ॥ नानक जप जप जीवै हरि के चरण ॥

मिथ्या श्रवणपर निंदा सुनहिं॥मिथ्या हस्तपर द्रव्यको हरहिं ॥ मिथ्या नेत्र पेखत पर त्रिया रूपाद ॥ मिथ्या रसना भोजन अन्न स्वाद ॥ मिथ्या चरण पर विकार को धावहिं ॥ मिथ्या मन पर लोभ लुभावहिं॥मिथ्या तन नहिं पर उपकारा ॥ मिथ्या बास लेत विकारा ॥ बिन बूझे मिथ्या सब भये ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लये ॥

विरथी शाकत की आरजा ॥ सांच विना कहिं होवत सूचा ॥ बिरथा नाम बिना तन अंध ॥ मुख आवत ताके दुरगंध ॥ बिन सिमरन दिन रैन विर्था विहाय ॥ मेघ विना ज्यों खेती जाय ॥ गोविंद भजन विन विरथे सब काम ॥ ज्यों कृपण के निरर्थ दाम ॥ धन्य धन्यते जन जिहिं घट बस्यो हरि नाउँ॥नानकताके बलबल जाउँ ॥

रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मन नहिं प्रीत मुखों गढ़ लावत॥ जानन हार प्रभु प्रवीन ॥ बाहर भेष न काहू भीन ॥ अवर उपदेशै आप नहिं करै॥आवत जावत जन्मै मरै॥जिसके अंतरवसै निरंकार तिसकी सीख तरै संसार ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक उन जन चरण पराता ॥ २९२ ॥

मिथ्या नाहीं रसना परस ॥ मनमें प्रीति निरंजन दरस॥पर त्रिया रूप न पेखै नेत्र ॥ साधु की टाहिल संत संग हेत ॥ कर्ण न सुनै काहूकी निंदा ॥ सभते जानै आपन को मंदा ॥ गुरु प्रसाद विषया परिहरै ॥ मनकी वासना मनते टरै ॥ इंद्रीजित पंच दोष ते रहित॥ नानक कोट मध्ये कोऊ ऐसा अपरस ॥ २९३ ॥

कई कोटिराजस तामस सात्विक॥कई कोटि वेद पुराण सिमृत अर सासत ॥ कईकोटि कीये रत्न समुंद ॥ कई कोटि नाना प्रकारजंत ॥ कई कोटि कीये चिर जीवे ॥ कई कोटि गिर मेरु स्वर्ण थीवे ॥ कई कोटि यक्ष किन्नर पिशाच ॥ कई कोटि भूत प्रेत शूकर मृगाचे सभते नेरे सभते दूर ॥ नानक आप अलिप्त रह्या भरपूर ॥ २९३॥

छिनमेंनीच कीटकोराज ॥ पारब्रह्म गरीब निवाज ॥ जांका दृष्टि कछु न आवे ॥ तिस ततकाल दहि दिशि प्रगटावे ॥ जाको अपनी करै बखशीश ॥ ताका लेखा न गिने जगदीश ॥ जीउ पिंड सभ तिसकी रास ॥ घट घट पूरण ब्रह्म प्रकास ॥ अपनी बनित आप बनाई ॥ नानक जीवे देख बडाई ॥ २९६ ॥

जिसके अंतर राज अभिमान ॥ सो नर्क पाती होवत श्वान ॥ जो जाने मैं यौवन वंत ॥ सो होवत विष्टा का जंत ॥ आपस को कर्मवंत कहावे ॥ जन्म मरण बहु योनि भ्रमावे ॥ धन भूमि का जो करै गुमान ॥ सो मूरख अंधा अज्ञान ॥ कर किरपा जिसके हिरदय गरीबी बसावे ॥ नानक इहां मुक्ति आगे सुख पावे॥

धनवंता होय कर गर्वावे ॥ तृण समान कछु संग न जावे ॥ बहु लशकर मानुष पर करै आश ॥ पल भीतर ताका होय विनाश सभते आप जाने बलवंत ॥ छिनमें होय जाय भसमंत ॥ किसे न बदे आप अहंकारी ॥ धर्मराय तिस करै खुआरी ॥ गुरुप्रसाद जांका मिटै अभिमान ॥ सो जन नानक दरगाहि पर्मान ॥ २९७ ॥

नहिं कछु जन्मैं नहिं कछु मरै ॥ आपन चलित आपही करै ॥ आवन जावन दृष्ट अनदृष्ट ॥ आज्ञाकारी धारी सभसृष्ट ॥ आपे आप सकल में आप ॥ अनिक जुगति कर थाप्योथाप ॥ अविनाशी नाहीं कछु खंड ॥ धारन धार रह्यो ब्रह्मंड ॥ अलख अभेव पुरुष प्रताप ॥ आप जपाये तो नानक जाप ॥ २९८ ॥

टूटी गांढन हार गोपाला ॥ सर्व जीयां आपे प्रतिपाल ॥ सकल की चिंता जिस मन माहिं ॥ तिसते बिर्था कोई नाहिं ॥ रे मन मेरे सदा हरि जाप ॥ अविनाशी प्रभु आपे आप ॥ आपन कीया कछू

न होय ॥ जैसो प्राणी लोचै कोय ॥ तिस विन नाहीं तेरे कछु काम गति नानक जप एक हरि नाम ॥ २९९ ॥

मन मूरख काहे बिललाइये ॥ पूर्व लिखे का लिख्या पाइये ॥ दूख सुख प्रभु देवन हार ॥ अवर त्याग तूं तिसे चितार ॥ जो कछु करै सोई सुख मान ॥ भूला काहे फिरै अयान ॥ कौन वस्तु आई तेरे संग ॥ लपट रह्यो रस लोभी पतंग ॥ राम नाम जप हिरदय माहिं ॥ नानक पत सेती घर जाहिं ॥ ३०० ॥

जाकी लीला की मितिनाहिं ॥ सकल देव हारे अवगाहि ॥ पिता का जन्म क्या जाने पूत ॥ सकल परोई अपने सूत ॥ सुमति ज्ञान ध्यान जिन देय ॥ जन दास नाम ध्यावहि सेय ॥ तिहिं गुणमें जाको भरमाये ॥ जन्म मरे फिर आवे जाये ॥ ऊंचनीच तिसके अस्थान ॥ जैसा जनावे तैसा नानक जान ॥ ३०१ ॥

नाना रूप नाना जाके रंग ॥ नाना भेष करहि इक रंग ॥ नाना विधि कीनो विस्तार ॥ प्रभु अविनाशी एकंकार ॥ नाना चरित करे छिन माहिं ॥ पूर रह्यो पूरन सभ ठाहिं ॥ नाना विधि कर बनत बनाई ॥ अपनीकीमत आपेपाई ॥ सभयट तिसके सभ तिसके ठाउँ ॥ जप जप जीवै नानक हरि नाउँ ॥ ३०२ ॥

अपने जन का परदा ढाके ॥ अपने सेवक की सिरपर राखै ॥ अपने दास को देय बड़ाई ॥ अपने सेवक को नाम जपाई ॥ अपने सेवक की आप पति राखै ॥ ताकीगति मति कोय न लाखै ॥ प्रभु के सेवक को कोई न पहूंचे ॥ प्रभु के सेवक ऊंच ते ऊंचे ॥ जो प्रभु अपनी सेवा लाया ॥ नानक सो सेवक दहि दिशि प्रगटाया ३०३ ॥

नीकी कीरी मे कल राखै ॥ भसम फरै लशकर कोटि लाखै ॥ जिसका श्वास न काढत आप ॥ ताको राखत देकरहाथ ॥ मानस यत्न करत बहु भांति ॥ तिसके कर्तब विरथे जात ॥ मारै न राखै अवर न कोय ॥ सर्व जिया का राखा सोय ॥ काहे शोच करो रेप्रानी ॥ जप नानक प्रभु अलख विडानी ॥ ३०४ ॥

निर्गुणआप सगुण भी ओही ॥ कलाधारजिन सकलीमोही ॥ अप

ने चरित प्रभु आप बनाये ॥ अपनी कीमत आपे पाये ॥ हरि विन दूजा नाहीं कोय ॥ सर्व तिरंतर एको सोय ॥ ओत प्रोत रम्या रूप रंग ॥ भये प्रकाश साधु के संग ॥ रच रचना अपनी कल धारी अनिक बार नानक बलिहारी ॥ ३०५ ॥

संग न चालै तेरे धना ॥ तू क्या लपटाहिं मूर्ख मना ॥ सुत मीत कुटुंब अरु वनिता ॥ इनते कहो तुम कवन सनाथा ॥ राज रंग माया विस्तार ॥ इनतेकहो कवन छुटकार ॥ अश्व हस्ती रथ असवारी ॥ झूठादंभ झूठ पासारी ॥ जिन दीये तिस बुझै न बिगाना ॥ नाम बिसार नानक पछताना ॥ ३०६ ॥

गुरु की सति तू लेह अयाने ॥ भगति विना बहु डूबे स्याने ॥ हरि की भगति करो मन मीत ॥ निर्मल होय तुम्हारो चीत ॥ चाण कमल राखो मन माहिं ॥ जन्म जन्म के किल्मिष जाहिं ॥ आप जपो अवरां नाम जपावो ॥ सुनत कहत रहत गति पावो ॥ सारभूत सत्य हरि को नाउँ ॥ सहज सुभाय नानक गुण गाउँ ॥ ३०७ ॥

साजन संत करो यह काम ॥ आन त्याग जपो हरि नाम ॥ सिमर सिमर सिमर सुख पावो ॥ आप जपो अवरां नाम जपावो ॥ भगति भाव तरिये संसार ॥ बिन भगति तन होसी छार ॥ सर्व कल्याण सुख निधि नाम ॥ बूडत जात पाये विश्राम ॥ सकल दूख का होवत नास ॥ नानक नाम जपो गुण तास ॥ ३०८ ॥

प्रभु बखशिंद दीन दयाल ॥ भगत वत्सल सदा कृपाल ॥ अनाथ नाथ गोविंद गुपाल ॥ सर्वघटां करतप्रतिपाल ॥ आदिपुरुष कारण भर्तार ॥ भगत जना के प्राण अधार ॥ जो जो जपै सोहोय पुनीत ॥ भगति भावलावै मनहीत ॥ हमनिर्गुणीयार नीचअजान नानक तुमरी शरण पुरुष भगवान ॥ ३०९ ॥

सर्व वैकुंठ मुक्ति मोक्ष पाये ॥ एक निमिष हरिके गुण गाये ॥ अनिक राज भोग बडाई ॥ हरि के नाम की कथा मन भाई ॥ बहु भोजन कापर संगीत ॥ रसना जपती हरि हरि नीत ॥ भली सुकरनी शोभाधनवंत ॥ हिरदय वसै पूर्ण गुरु मंत ॥ साधु संग प्रभु देहु निवास ॥ सर्व सूख नानक प्रकास ॥ ३१० ॥

आप कथै आप सुननेहार ॥ आपहिं एक आप विस्तार ॥ जां तिस भावै तां सृष्टि उपाये ॥ आपणे भाणे लये समाये ॥ तुमते भिन्न नहीं कछु होय ॥ आपन सूत सब जगत परोय ॥ जाको प्रभुजी आप बुझाये ॥ सच्च नाम सोई जन पाये ॥ सो समदरशी तत्व का वेता ॥ नानक सकल सृष्टि का नेता ॥ ३११ ॥

जीव जंतु सब ताके हाथ ॥ दीन दयाल अनाथ को नाथ ॥ जिस राखै तिस कोय न मारै ॥ सो मूआ जिस मनों बिसारै ॥ तिस तज अवर कहां को जाय ॥ सबसिर एक निरंजनराय ॥ जीय की जुगत जाके सब हाथ ॥ अंतर बाहर जानो साथ ॥ गुण निधान वेअंत अपार ॥ नानक दास सदा बलिहार ॥ ३१२ ॥

पूरे गुरु का सुन उपदेश ॥ पारब्रह्म निकट करपेख ॥ श्वास श्वास सिमरो गोविंद ॥ मन अंतर की उतरै चिंद ॥ आश अनित्य त्यागो तरंग॥ संत जनां की धूरि मन मंग ॥ आप छोड़ वेनती करो ॥ साधु संग अग्नि सागर तरो ॥ हरिधन के भर लेहु भंडार ॥ नानक गुरु पूरे नमस्कार ॥ ३१३ ॥

राग रामकली ।

जग दाता सोई भक्त वच्छल तिहुं लोयजी ॥ गुरु शब्द समावये अवर नजानेकोयजी ॥ अवरो न जाने शब्दगुरुके एक नामध्यावहे॥ प्रसाद नानक गुरु अंगद परम पदवी पावहे ॥ आया हकारा चल्लन वारा हर राम नाम समाइया ॥ जग अमर अटल अतोल ठाकुर भक्ति ते हर पाइया ॥ हर भाण गुरु भाया गुरु जावे हर प्रभु पास जी ॥ सतगुरु करे हर पै वीनती मेरी पैज राखो अरदासजी ॥ पैज राखो हर जनहिं केरी हर देहु नाम निरंजनो ॥ अंत चल दियां होय बेली यमदूत काल निखंजनो ॥ सतगुरु की वेनती पाई हर प्रभु सुनी अरदास जी ॥ हर धार कृपा सतगुरु मिलाया धन्य धन्य कहे शाबाश जी ॥ मेरे सिख सुनो पुत्त भाईहो मेरे हर भाणा आउ मैं पासजी ॥ हर भाना गुरु भाइया मेरा हर प्रभु करे शाबासजी ॥ भक्त सतगुरु पुरुष सोई जिस हर प्रभु भाना भावये ॥ आनंद अन-

इद बजें बाजे हर आप गल मेलावये ॥ तुसी पुत्त भाई परवार मेरा मन वेखो कर निरजासजी ॥ धुर लिख्या परवाणा फिरे नाहीं गुरु जाय हरि प्रभु पास जी ॥ सतगुरु भाणे आपणे वह परवार सदा इया ॥ मत मैं पिच्छे कोई रोवसी सो मैं मूल न भाइया ॥ मित्त पहिजे मित्त बिगसें जिस मित्तकी पैज भावये ॥ तुसीं बीचार देखो पुत्त भाई हर सतगुरु पैनावये ॥ सतगुरु परतक्ष होंदे वह राज आप टिकाइया ॥ सब सिख वंधप पुत्त भाई रामदास पैरीं पाइया ॥ अंते सतगुरु बोल्या मैं पिच्छे कीर्तन करो निर्वाण जी ॥ केशो गुपाल पंडित सदो हर हर कथा पढ़े पुराण जी ॥ हर कथा पढ़िये हर नाम सुनिये बेवान हर रंग गुरु भावये ॥ पिंड पत्तल किरया दीवा फुल्ल हर सर पावये ॥ हर भाइया सतगुरु बोल्या हर मिल्या पुरुष सुजानजी ॥ रामदास सोढी तिलक दीया गुरु शब्द सच्च नीशानजी ॥ सतगुरु पुरुष यह बोल्या गुरु सिखां मन्न लई रजायजी ॥ मोहरी पुत्त सन्मुख होइया रामदासहिं पैरीं पाय जी ॥ सभ पवै पैरीं सतगुरु केरी जित्थे गुरू आप रख्या ॥ कोई कर बखीली निभे नाहीं फिर सत-गुरु आन निवाइया ॥ हर गुरुहिं भाना दई बड़ियाई धुर लिख्या लेख रजाय जी ॥ कहे सुंदर सुनो संतो सभ जगत पैरी पाइया३१४

इति श्रीग्रंथसाहिबके पद संपूर्णम् ।

राग कान्हरा ।

ल्यावो मैया मोहिं चंद खिलौना ॥ लाख योजन पर चंद वसतहै कैसे आवै लाला नंदजीके भौना ॥ जल का थार भर लाई नंदरानी लीजो श्याम तुम चंद खिलौना ॥ जल में हाथ डारे नंदनंदन हिल चंद हँसे श्याम सलोना ॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरश को खेल कियो अचरज मन भौना ॥ ३१५ ॥

राग देश ।

रूखड़ी न खाइयो स्वामी रूखड़ी ना खाइयो ॥ हाथ हमारे घिरत क़टोरी अपना बांटा लेजाइयो ॥ दौड़े दौड़े जात स्वामी रोट

ड़ियां मुख माहीं ॥ हमतो दौडे पहुँच न साकें मेल लेहु गोसाईं ॥ घट घट वासी सर्व निवासी पल में भेष बँटाया ॥ कूकर ते ठाकुर है प्रगटे नामदेव दर्शन पाया ॥ ३१६ ॥

एक भरोस जानकी वरको ॥ बस प्रभु धाम नाम भज मुख कर लीला दृग उर शारँग धर को ॥ श्रवण कथा शिर नाय स्वामि पद कारज राम जहांलग करको ॥ भाल तिलक भुज अंक बाण धनु तुलसी दास विभूषण गर को ॥ कर्म योग वेदांत सांख्य मन तत्व विचार निरक्षर क्षर को ॥ ज्ञान विराग त्याग तप संयम सब फल सार भजन रघुवर को ॥ नव निधि आठ सिद्धि नाना सुख त्याग आश विश्वास अपरको ॥ वैजनाथ बलि जाउँ सुयश सुन सुरतरु कर रघुनाथ कुंवरको ॥ ३१७ ॥

कबित्त।

करीहै गरीबीतो बिभीषणने राज पायो रावण ने करी खुदी खोई खूबी जान की ॥ ध्रुव ने गरीबी कै अटल पद राज पायो केशी कंस छेद्यो सुध नारही गुमानकी ॥ द्रौपदीगरीबी करी नगन न होन पाई पचि हारे कौरो देख लीला भगवान की ॥ गरीबी औ बंदगी की चारों वेद अस्तुति करें कहे को गरीबी यह बीबी है जहान की ३१८

राग कान्हरा ।

दीनबंधु दीनों की हरतेथेपीर ॥ अबतो मैं जाना सोयो मध्य क्षीर ॥ वहां पर जो बैठेहो लाकरके ध्यान ताते बिसारीहै तारन कि बान ॥ पौरुष पुराना कि बूढ़े भये ॥ सभी बात छोडी कि मौनी भये ॥ अगर तुमने यह बात समझी नहीं ॥ कहूं गरुड उडकर गयोहै कहीं ॥ ताते हो बैठेहो बाहन बगेर ॥ मेरी बेर एती क्यों लाई है देर ॥ रावण को मारा सो बल है कहां ॥ समुद्र को बांधा सो दल है कहां ॥ कुंभकर्ण मारा किसी तौर से ॥ कुफर लोग कहते कि प्रभु और से ॥ औरन को ताराथा होकरके शेर ॥ मेरीबेर क्यों एती लाई है देर ॥ ३१९ ॥

राग मलार ।

मेरे ही आंगन बरसें ॥ रिम झिम बरसें मेरे आंगन मिलबे को जियरा तरसें ॥ चतुर सुघर सुंदर बालम को नित चाहत दरसें ॥ नजरू के प्रभु सुधहूं न लीनी कहि न जात कछु हरसें ॥ ३२० ॥

राग रेखता ।

हम होरहीं अधीन सखी श्याम नहीं आये ॥ सुनतेही टेर धाये गज डूबते बचाये ॥ अबमेरी बार स्वामी कछु काम ने भुलाये ॥ प्रह-लाद को उबारचो नरसिंह रूप धारचो ॥ शत्रुओं को घेरा दल में भक्तों के काज सारचो ॥ नारायण वाकी महिमा काहू न पार पाये ॥ नंदजू के बहुत प्यारे सिर मोर मुकुट धारे ॥ ३२१ ॥

कवित्त ।

जात पात न्यारी करी हमरी तुम्हारी नाथ केवट को कर्म एक नीके कर निहारिये ॥ तुमतो उतारत भव सागर परमार्थ कर सरिता उतार हम कुटुंब दिन गुज़ारिये ॥ नाई ते न नाई लेत धोबी ना धुलाई लेत देके उतराई मोहूँ जात ना बिगारिये ॥ पेशा अधमाई जान आपको उतार दीना तिहारे घाट आऊं नाथ मोहूं को उतारिये॥

ग़ज़ल ।

श्रीकृष्णचंद्र महराजने गोकुल का आना छोड़ दिया ॥ वंशी वट यमुना तट का अब ठीक ठिकाना छोड़ दिया ॥ निशदिन प्यारी व्रज वासिन वै तट पर आना छोड़ दिया ॥ मिश्री मेवा भोग लगावें माखन खाना छोड़ दिया ॥ कंस मार भये अब राजा धेनु चराना छोड़ दिया ॥ रास मंडल सब भूल गई हँसना इतराना छोड़ दिया ॥ निशदिन व्रज वन के पंछी पानी अरु दाना छोड़ दिया ॥ अबतो प्रीति करें कुबरी सँग वंशी का बजाना छोड़ दिया ॥ खुशरंग प्राण रहें अब कैसे मुखड़ा दिखलाना छोड़ दिया ॥ ३२२ ॥

राग पीलो ।

लालन प्यारो झूलत वट संकेत ॥ संग झूलत वृषभान नंदिनी

ललिता झूटे देत ॥ रमक झमक झूलत पिया प्यारी जो चाहें सुख लेत ॥ कुंभनदास लालन गिरिधर की सखियां बलैयां लेत ॥३२४॥

राग कान्हरो ।

आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी ॥ रस भरे अधरन मधुभरे नैना मात सुकुमार घटा छारही रूपकी ॥ सुंदर कपोलन छूट रही अलकाँ माथे कोटीको अधिक बन्योरी आली ॥ नंददास की छबीली सी अति प्यारी श्याम मनोहर पायो सुहागरी ॥ ३२५ ॥

मेरे मन बस गयो सीताराम ॥ जटा मुकुट मुनि भेष धरचो है कठिन धनुष लिये सारंगपान ॥ गौर वर्ण सिया जनक नंदनी रघुवर हैं सुंदर घन श्याम ॥ सरयू के तीर अयोध्या नगरी विहरत हैं लक्ष्मण और राम ॥ आसानंद कहे कर जोरी चौंसठ घडी भजले आठों याम ॥ ३२६ ॥

टुक देई ग्वारन मक्खन कुडे ॥ थोडा देनीयां बहुता मंगदा छिक्यों लाहुंदा ढक्कन कुड़े ॥ नौं लख धेनु लवेरी घर नंददे अजे भी आउंदा तक्कन कुड़े ॥ त्रैलोकीदा ठाकुर मंगदा मखनेदा की रक्खन कुडे ॥ मीरांके प्रभु गिरधर नागर चरण कमल चित्त रक्खन कुडे ॥ ३२७ ॥

राग कल्याण ।

वांके सांवरिया ने घेरी मोहिं आनके ॥ हौं जो गई यमुना जल भरने मारग रोक्यो मेरो आनके ॥ वृंदावन की कुंज गली में मुरली बजावे आन तान के ॥ मीरां के प्रभु गिरिधर नागर प्रीत पुरातन जान के ॥ ३२८ ॥

राग पीलो ।

व्रजवासी कन्हैयालाल तुमको मेरी स्वामी हो वंदना ॥ राधा कहाथ मेंहदी सोहे लालन के हाथ हो कंगना ॥ प्यारी के माथे बिंदी सोहे लालन के मस्तक हो चंदना ॥ चलोरी सैयो रल देखन जाइये अलकां वालेदा दर्शन पाइये जहां बसें नंद को नंदना ॥

प्यारी ने इक टोना कीना अलकांवाले नूं बस कर लीना गूंद ल्याई मालन हो बंगना ॥ ३२९ ॥

मान मनामो राधा प्यारी ॥ मानसरोवर मान कर बैठी कुंजन कुंज लता री ॥ दोऊ कर जोरे करत विनती संग लिये ललितारी ॥ पुरुषोत्तम प्रभु तुमरे दरश को मैं तो शरण तिहारी ॥ ३३० ॥

राग कान्हरो ।

मेरो यासों लाबा लाग रह्योरी मोहन मीत कन्हैया ॥ इस गिरिधर की या छबि ऊपर बेर बेर बल गैया ॥ सुंदर वदन कमल दल लोचन अलकां अलक छबैया ॥ कृष्णदास प्यारी वश मोहन मुरली के सरस बजैया ॥ ३३१ ॥

मेरी गति जानकी जीवन राम ॥ चौरासी को भटकत आयो कहीं न पायो विश्राम ॥ यही लोक परलोक हमारा चरण कमल नित ध्यान ॥ जन माधो के तन मंदिर में विराजत सीताराम॥३३२॥

राग परज ।

राघोजू महराज सांवल बनरा ॥ अजब बन्यो तिहारी अँखियन कजरा दशरथ सुत महाराज ॥ रत्न मोर केसरिया बागो और विविध मणि साज ॥ रामसखे लख रूप अटक मन तन मन रही न सम्हार ॥ ३३३ ॥

राग बिहाग ।

ऐसी मोसों कीनी री मा नंद को छैल अतिही ढीठ ॥ हौं जो गई यमुना जल भरने आज ॥ संग की जो हमरी पलमें बिछोड़ दीनी भुज भर मोहूँ गर लगावै और कहा कहूं मोहिं आवत लाज ॥ जब हौं करी पुकार इधर उधर कर निहार लपट झपट करके गह्यो मोकों डर देन लाग्यो ॥ भूषण बिखार दीने हौं तो बेहाल आली भलोरी भलो थारो व्रज को राज ॥ ३३४ ॥

राग जैजैवंती ।

कारी रैन दुख दैन पल पल तो सतावै मैन कारे बिन भैयां

कारी करो मोरी कारी ॥ आप कारे निशि कारी कांधे कामरिया कारी कोकिला पुकारी कारी पवन बंध डारी ॥ कारे भुवंग डसी रोम रोम विष राची विरहों की मरोर डाढी हाय हाय करन लागी ॥ सूरदास यों विचारी कारे कृष्ण हो बिहारी कारेजी सों कहियो जाय बंदना हमारी ॥ ३३५ ॥

ऐसी तो व्याकुल बाजी जियामें उपाधि लागी ऐसी आवत मनमें लीजिये वनवासरी ॥ नादकी सरोद सुनी सुध बुध न रही मोरी बांस की बँसुरिया सोतो भरन लागी श्वास री ॥ कुश हूं की लाज गई लाज हूं की लाज गई सूख गयो माँस मेरो निकस आई पाँसुरी ॥ ढूंढके कटाय डारूं सभी बांस वनके उपजेंगे न बांस फेर बाजेगी न बांसुरी ॥ ३३६ ॥

राग पीलो।

मोहना चलो चलो कदमकी छैयां रे कदमकी छैयां ॥ मोरे डारो गलेमें बैयां ॥ राधा रानीजी तोरे हार हिये में सोहे री हिये में सोहै ॥ थारी चितवन मेरा मन मोहै ॥ मोहना तूतो यमुना निकट भयो ठाढ़ोरे निकट भयो ठाढ़ो ॥ मोसे नेहा लगायो अति गाढ़ो ॥ राधा रानीजी तूतो यमुना निकट भई ठाढ़ी री निकट भई ठाढ़ी ॥ मोरी लागी प्रीति अति गाढी ॥ मोहना तोरे कान कुंडल गल माला रे कुंडल गल माला ॥ दोऊ नैना बने विशाला ॥ राधा रानीजी तूतो बड़ी ब्रजकी सखियां री ब्रजकी सखियां ॥ मोरी लागी निमानी अँखियां ॥ मोहना तूंतो चंद्रसखीको प्यारो रे सखीको प्यारो ॥ नंदजूको राज दुलारो ॥ ३३७ ॥

राग सोरठ।

महाराज धनधनकुवरी ॥ इस कुवरीने जादू कीना मेरा श्याम वश करलीना ॥ सोलांसौं गोपी सुंदर इकते इक कहांगई उनकी बुधरी ॥ ईख छोड़ प्रभु आक चचोरत करीम कहत वृषभानुकी सुतारी ॥

राग कान्हरा।

गही दाम श्याम मथन देत नाहिं दहियां ॥ यशुदा दधि मथन

लागी लालजीको भूख लागी महरि थन उमग आये दूध धार बहियां ॥ नंदलाल मथनी गही नंदनारि मगन भई देख देख लालजीको प्रेम आंशू बहियां ॥ श्याम सुंदर गोद लिये अंग अंग मग्न भई दीनी जब चूँची मुख आनँद हो रहियां ॥ जाको शिव ध्यान लावें ब्रह्मा नहिं पार पावें धन्य धन्य मयाराम गोकुलकी सैयां ॥ ३३९ ॥

राग सोरठ ।

रघुनाथ नाथ मेरे ॥ मैं वर्ण न सकों गुण तेरे ॥ प्रथम मीन रूप प्रभु धारयो ॥ शंखासुर गर्व निवारयो ॥ ब्रह्माको वेद जो दीने ॥ सब काज सुरनके कीने ॥ प्रभु कच्छप रूप बनायो ॥ मंद्राचल पीठ धरायो ॥ शूकर नरहरि प्रभु धारा ॥ प्रहलाद भक्त उबारा ॥ तुमहो बलि वामन स्वामी ॥ तुम परशुराम अभिमानी ॥ तुम हो रघुवंश उजागर ॥ भये कृष्ण नंदजूके नागर ॥ बुध लंक स्वरूप तुम्हारा ॥ सभ संतनके रखवारा ॥ अद्भुत गति नाथ तुम्हारी ॥ भज रामसखे बलिहारी ॥ ३४० ॥

राग कान्हरा ।

गाइये महारानी श्री राधे ॥ जाको नाम नेक मुख निकसत विनशत कोटि कोटि अपराधे ॥ जाको ध्यान धरत योगी जन शिव विरंचि रहे लाय समाधे ॥ याहीते ब्रजराज युगल वर लागो रहत नेह निशिदिन राधे ॥ ३४१ ॥

राग देश ।

श्रीवृंदावन वास दीजिये यही हमारी आशा है ॥ यमुना तीर छाय माधुरी जहां रसिकों का बासाहै ॥ सेवा कुंज मनोहर सुंदर इक रस बारोंमासा है ॥ ललित किशोरीको दिल बेकल युगल रूप रस प्यासा है ॥ ३४२ ॥

राग सोरठ ।

मोहिं लगेरी श्यामके नयन बान ॥ मानो तिरछी कर भौंहैं कमान

भई घायल विसर गयो खान पान ॥ वाके मोर मुकुट गर गुंज माल॥ अधरन पै बंशी रसाल ॥ नेक सुख न रही वाकी सुनत तान ॥ वा दिनते नहीं मेरे दिलको चैन ॥ वाकी साँवरी सूरत बसी मोरे नैन ॥ कहे सूरदास कब मिलोगे कान्ह ॥ ३४३ ॥

देखो आली ठाढे कदमकी छैयां ॥ नँदनंदन वृषभानु नंदिनी दोउ देरहे गलबैयां ॥ भूल गयो उन गगर उठाइबो विसर गई इन गैयां ॥ ललित किशोरी प्रीति बढ़ी अति दोउ जन लेत बलैयां ॥

बसंत ।

देखके जाना फाग मोहन प्यारे बंशी वारे ॥ पीत वसन सब सखी बनी हैं सब विध पीत सुभाग ॥ कंचनकी पिचकारी बनी हैं भरी रंग रस भाग ॥ उडत गुलाब अबीरके बादर गावत बहु विध राग ॥ नाचत सकल उमंग प्रेम रस बढ्यो जात अनुराग ॥ दास गुलाब देहु चतुराई निज पद में अनुराग ॥ ३४५ ॥

राग कान्हरा ।

मैं तुमरी शरणागत प्यारे ॥ परमानंद मुकुंद परातम दीना नाथ सकल भय टारे ॥ दामोदर अच्युत अघनाशक पाप हरन तव नाममुरारे॥ व्यापक एक अखंड अगोचर नाम न रूप प्रकाशन वारे॥दास गुलाब बसो चित हमरे चार पदारथ याहि मँझारे॥३४६॥

ग़ज़ल ।

दिला यक दम नहो गाफिल य दुनिया छोड़ जाना है ॥ बगीचे छोड़ कर खाली जमीं अंदर समाना है ॥ वदन नाजुक गुलों जैसा जो लेटे सेजफूलों पर ॥ होगा एक दिन मुरदा यही कीड़ों ने खानाहै ॥ न बेली होयगा भाई न बेटा बाप ना माई ॥ क्या फिरता है सैदाई अमल ने काम आना है ॥ फरिश्ते रोज करते हैं सुनादी चार कुंटों में ॥ महल्ला ऊचियों वाले जहां को छोड़ जाना है ॥ प्यारे नजर कर देखो पड़ी जो माड़ियां खाली ॥ गये सभ छोड़ यह फानी दगाबाजी क बाना है ॥ गलत फहमी यहै तेरी

नहीं आराम इस जग में ॥ मुसाफर बेवतन है तू कहां तेरा ठिकाना है ॥ प्यारे नजर कर देखो न खेशों में कोई तेरा ॥ जनो फरजंद सभ कूकें किसे तुझको छुड़ाना है तमामी रैन गफलत में गुजारें चारपाई पर ॥ गुजारें रोज खेलों में वृथा आयू गवाना है ॥ य होंगे सर बसर लेखे हशरके रोज ऐ गाफिल ॥ घ दोजख बीच वद अमली से तन अपना जलाना है ॥ ३४७ ॥

राग देश ।

माल जिन्होंने जमा किया बनजारे हारे जाते हैं ॥ भाई बंधु कुटुंब कबीला दावा करकर खाते हैं ॥ जभी मुसाफर मारा जायगा सभी अलग हो जाते हैं । तू क्या जाते साईं का रस्ता बाटर मार ग बहुत से हैं ॥ इस रस्तेके बीच मुसाफर अकसर मारे जाते हैं ॥ ऊंचे नीचे महल बनाये बैठ रहे चौबारे में ॥ जागत रहना सोना नाहीं हाथ पसारे जाते हैं ॥ अग्नि पलीता राज दंड अरु चोर मूछ ले जाते हैं ॥ राम नाम पर कभी न दीना माल जवाई खाते हैं ॥

भाई बंधु संबंधी सारे सभी अलग होजाते हैं ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो अपने हाथ जलाते हैं ॥ ३४८ ॥

जरा टुक सोच ऐ गाफिल क्या दमका ठिकानाहै ॥ निकल जब यह गया तन से तो सभ अपना बिगाना है ॥ मुसाफर तू है और दुनिया सरा है भूल मत गाफिल ॥ सफर परलोक का आखर तुझे दरपेश आना है ॥ लगाता है अबस दौलत पै क्यों तू दिल को अब नाहक ॥ नजावे संग कुछ हरगिज यहीं सभ छोड जानाहै ॥ न भाई। बंधु है कोई न कोई आशना अपना ॥ बखूदी गौर कर देखा तो मतलब का जमानाहै ॥ रहो लग याद में हकके अगर अपनी शफा चाहो ॥ वली दुनिया के धंधों में हुआ तू क्यों दिवाना है ॥ ३४९ ॥

राग माँझ ।

दुनिया झूठी ते साईं सच्चा पर दुनिया प्यारी लग्गे ॥ सच्च छोड के झूठ ग्याझे न्याउं प्या तेरे अग्गे ॥ घर जिंहिदे विच दुशमन

होवन ओह किचरक ताईं तग्गे ॥ संतरैन ओह कदी न मिलसन जो दुनिया दे ठग्गे ॥ ३८० ॥

दुनिया झूठीं ते लोकभी झूठे सब झूठे दावे करदे ॥ सेई दुनिय जेढी साथ नजावै तिस पिच्छे लड लड मरदे ॥ खास खजाना अंदर तेरे ढूँढे हर दर दर दे ॥ संतरैनि ओह कदीं न मिलनी जो दुनिया दे बरदे ॥ ३८१ ॥

बांकियां पग्गां ते टेढीयां चालां राह न छडड़े कदाईं ॥ आप छड्डे तां सब कुछ पावैं ओड़क एन्हां रहना नाहीं ॥ मुडकेदे तूं पच्छोतासीं जद ताण न रहसी बाहीं ॥ संतरैन तूं समझ सवेरे नहीं रोसे देंदे छाढाईं ॥ ३८२ ॥

एह जुवानी तेरी मस्त दिवानी कुछ अग्गे दा करी तोसा ॥ कई जुवानियां तैं अग्गे छड्डियां हुण इसदा कौन भरोसा ॥ मिल सतगुरु कम्म करले झबदे पकड़ वहीं कोई गोशा ॥ संतरैन ढिल्ल तेरी वल्लों रब्ब नहीं तेरे नाल रोसा ॥ ३८३ ॥

अज्जदा कम्मन घत्तीं कलहते की जानां कलह केहा ॥ संतां नाल गुजरान जो थीवे भावें खाके बेहा त्रेहा ॥ हुणदियां भुल्लयां नूं ठौर न कोई ना कोई सुख सुनेहा ॥ संतरेन हुण ढिल्ल त करिये तैंनू लक्खां दी गल्ल एहा ॥ ३८४ ॥

राग बिहाग ।

टुक बूझ कवन छिप आयाहै ॥ इक नुकते में जो फेर पडा तब अैन गैन का नाम धरा जब मुरशद नुकता दूर किया तब ऐनों ऐन कहाया है ॥ तुसीं इलम किताबां पढ़देहो केहे उलटे मैने करदेहो बेमूजब ऐवें लडदेहो केहा उलटा वेद पढ़ाया है ॥ दूई दूर करो कोई शोर नहीं हिंदू तुरक सैयद कोई होर नहीं सब साधु लखो कोई चोर नहीं घट घट में आप समायाहै ॥ ना मैं मुल्लां ना मैं काजी ना मैं सुन्नी ना मैं हाजी बुल्हा शौह नाल लाई बाजी अनहद शब्द बजाया है ॥ ३८५ ॥

राग गौरी ।

राम भज गूजरिये ऐसा दही बरोल ॥ मन कर मटुकी तन कर मथानीया पालै प्रेमकी डोर ॥ राम नाम का माखन कढले छाछ छाछ दे छोड़ ॥ यह वेला तेरे हाथ न आवे खरचेंगी लाखो करोड ॥ दुनीदास बड़भागन गुजरी साध संगत ना छोड ॥ ३९६ ॥

ग़ज़ल ।

कल्ह हवस इस तरह से तरगीब देतीथी मुझे ॥ खूब मुलके रूम है और सर जमीने रूस है ॥ इतने में इबरत पुकारी इक तमाशा मैं तुझे ॥ चल दिखाऊं तू जो सैदे आज का महबूस है ॥ मैंने जानाथा कि लेजावेगी बुस्तां की तरफ ॥ या किनारे आबे खुर्रम या बियाबां की तरफ ॥ ले गई इकबारगी गोरे गरीबां की तरफ ॥ जिस जगा जानो तुमन्ना हरतरह मायूस है ॥ मरकदे दोतीन दिखलाकरलगी कहनेमुझे॥यह सिकंदरहै य दाराहै य कैकाऊसहै॥ यह वो है जिसको कि हफ़त अकलीम का उतरा था ताज ॥ ये वो है जिनका फरिश्तों से न मिलताथा मजाज ॥ पूछ तू इनसे कि मालो मिकनते दुनिया से आज ॥ कुछ भी इनके पास गैर अज़ हसरतो अफसोस है ॥ ३९७ ॥

राग आसा ।

चले गये सभ अजलके मुँह में खुश्की रही ना तरी रही ॥ सभ निशान मिट गये तिन्हांदे नाभ न नामावरी रही ॥ यह दो-दिन जीवन दुनिया का क्या शाह अमीर वजीर बने ॥ कंगाल करी गुजरान जगत में दोदिन चरचा खरी रही ॥ पल छिन में कूच नगारा है कोइ जुलम करो कोइ अदल करो ॥ जब मौत ने आकर पकड़ लिया तब मनकी मनमें धरी रही ॥ ३९८ ॥

राग धनाश्री ।

मिल लेहुनी सहेलडियोनी मैं साहुरड़े घर जाणानी ॥ एथेरहन किसीदा नाहीं चलना वारो वारी ॥ चंगी चंगेरी पकड़ मंगाइया मैं

किसदी पनिहारी ॥ जिन्हांदे पल्ले वारी खर्च घनेरा सोइयो शौह नूंप्यारी ॥ बाबल मेरे दाज रंगाया इक चोली इक चुन्नी ॥ दाज बाबलदा देखके मैं आंसू भर भर रुन्नी ॥ इक बिछोड़ा मैनूं सैयां वाला मैं डारों कुंजबिछुन्नी ॥ रंगरंगीले सूलां मोढे चहुंवल पैंदियां झोकां ॥ एथेंदे दुख नाल चलनगे मैं अगले किसनूं सौंपां ॥ सास ननंद मैंनूं मारन ताने बनी मुसीबतमैंनूं ॥ बुल्लेशाह दातार सुनींदा वेला अटक न जाइये ॥ अदल करे तां ठौर न कोई फजलों बखरा पाइये ॥ ३५९ ॥

पढ़ले इशक किताब मेरा बीबा हुण केही तोबा तोबा ना कर मेरा यार ॥ सांवें देकर लवें सवाये डेउढेयां चक लेखे लाये कूड किताबां सिर पर चाइयां एहो तेराइतबार ॥ डूघीयां नदीयां तुला पुराना सिरपर गठरी भारी ॥ अमलां वाले लंघ २ जांदे मैं रहगई औगुनहारी ॥ तारूड़े तर वन्ने लग्गे डुब्बे जिन्हां सिरभार ॥ हत्थी सी महिंदी चोटी सी माखन कपड़े रंगालये तेले ॥ स्याही गई सुफ़ेदी आई लगड़ा इशक कवेले ॥ दिलदा महरम कोई न मिल्या जेढ़ा साथ करे उसवेले ॥ कर कर सिदक बड़ां बिच वेढ़े रब्ब मिलावे मेरा यार ॥ सुपनेदे अंदर जम्या जाया सुपने पलना पाया ॥ सुपनेदे अंदर चोला सीता सुपने पाड़ हंढाया ॥ सुपनेदे अंदर व्याह कराया सुपने लै गल लाया ॥ बुल्लाशाह दिवाना होया पल पल करे दीदार ॥ ३६० ॥

राग कान्हरा ।

सँभलके नेहु लगावे दिलबर आखर नूं पछतावेगा ॥ जांदा यार न आवे फेर ओथे बेपरवाहियां ढेर ओथे दहल खलोवन शेर बहिंदा तूं भी जावेगा ॥ कललां दे घर पासे ओथे आवन मस्त प्यासे ओथे भर भर देंदे कासे तेरा जीउ ललचावेगा ॥ इकनांदे पोश लहाइंदे इक आरयां नाल चराईदे इक सूली चाइ चढ़ाई दे तेरादिल कतरावेगा ॥ बुल्या गैर शरा नाहो सुखदी नींद न भर भर सो ऐनल हक्क तूं रिदय बगो चढ़ सूली ढोला गावेगा ॥ ३६१ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी फरियादहै महाराज ॥ यहतो मायासिंहनी रोक रहीहै चारों धाम ॥ मेरे भागनेकी ठौर नहीं संकट से लेहु निवाज ॥ हाथ खड्ग लिये यम खड़ा घड़ी दो को लगा मार ॥ मेरा साहिब मचला हो रह्या मैं किहिं दर करों पुकार ॥ हमसों कारज बिगड़या प्रभु तुमहीं लेहुगे सँवार ॥ जे मैं मनों बिसारया प्रभु तूं न अंत बिसार ॥ ईहांतो दुःख बहुतेरे हैं किसनूं सुनावां रोय ॥ गरीबजन की विनती मैं फिर न आऊं इस लोय ॥ ३६२ ॥

राग गौरी ।

उड़रे पखेरू दिन तो रहगया थोड़ा ॥ उड़त्यां उड़त्यां जन्म गवाँया जहां शहर तहां डेरा ॥ चुन चुन कंकर महल बनाया मूरख कहे घर मेरा ॥ ना घर तेरा ना घर मेरा चिड़ियां रैन बसेरा ॥ शाह हुसेन फ़कीर साईंदा जंगल होगया डेरा ॥ ३६३ ॥

राग धनाश्री ।

धृग धृग नर नारी नाम विना ॥ नाम विना हरिके भजन विना ॥ विधवा नारि जैसे करत शिंगार ॥ शोभा न पावे विन भरतार ॥ तेग विना कैसे रजपूत ॥ नाम विना कैसे अवधूत ॥ जिस कुल में नहिं हरिको दास ॥ सो कुल जानो साधो भूत पिशाच ॥ कहे कबीर सुनो अटल प्रताप ॥ तन मन धन संतन परवार ॥ ३६४ ॥

राग प्रभाती ।

एक घड़ी में नाम न जप्या ऐवें सारी उमर विहानी ॥ रल मिल सैयां पनिये नूं चलियां जिन्हां ने भरया सिर पर धरया मैं तां कुचज्जी डोले हत्थ नलाया खाली घड़ा लेकै घर नूं सिधानी ॥ रल मिल सैयां तिजन लाये जिन्हा कत्ते दाज रँगाये मैंतां कुचज्जी चरखे तंद नपाया ना मेरा पेटा ना मेरी तानी ॥ रौले में आये रौले में चल्ले समझ कुचज्जिये तूं होजा स्यानी ॥ बुल्लेशाह रलमिल सैयां पत्तन मल्ले जिन्हांने मल्ले कर्म सवल्ले इकतां लंघ गैयां कर कर हल्ले मैं तां खड़ी हां विच्च न मानी ॥ ३६५ ॥

माये खेलन दे दिन चारनी फेर खेलन तेरे किन आवना ॥ चरखा भन्न परोटरे जारूं पूनियां रुलियां बजार ॥ कोटी सुरेश ब्रह्मा बीत गयेहैं सरग अपार ॥ रावण मरत मानधातासे राजे मरे हजार ॥ जे सुर नर मुनि देखन आवें गिरेंगे सभ सिर भार ॥ चंद सूर सरिता पति नाशें हमरो कौन बिचार ॥ दास गुलाब विराग भयो मन झूठो सभ संसार ॥ ३६६ ॥

राग देश ।

भाई तैंने सितम गुजारा रे ॥ दिल से राम विसारा ॥ बालापन औ तरुण अवस्था जब नहिं राम सँभारा ॥ बृद्ध भया कफ बायने घेरा थकत भया हंकारा ॥ महल माडियां छिनमें छीने बांध घाट पर डारारे ॥ शाह से सभ भये बटेऊ लुटन लगा घर बारा रे ॥ धरे ढके को पूछन लागे कुटुँब कवीला सारा रे ॥ मर्म कर्म की कोइ न पूछे दगाबाज संसारारे ॥ नंगे पैर कटीला रस्ता ज्यों खांडे की धारा रे ॥ विश्वामित्र महबूब साहिब को भजले वारंवारा रे ॥ ३६७ ॥

राग कालिंगडा ।

जोतूं राम नाम चित धरतो ॥ अबको जन्म आगलो तेरो दोऊ जन्म सुधरतो ॥ नफा होत साधकी संगत मूल सांठ ते न टरतो ॥ तंदुल घृत सँवार हरजूको संत परोसो करतो ॥ यमको त्रास सभी मिट जाती भगत नाम तेरो परतो ॥ सूरदास वैकुंठ पंथ में कोउ न फेंट पकरतो ॥ ३६८ ॥

राग गौरी ।

श्यामकी वंशी ना दूंगी ॥ श्यामकी वंशी पाई जो बनमें राख छपाऊं अपने तनमें कुवरी सोच करेगी मनमें कहु कुवँर मैं क्या नकरूंगी ॥ हटो सखी मोहिं जिन समझावो नहीं तो विष मैं खाय मरूंगी ॥ अपनेतनको घायल करूंगी एककी लाख करोडकहूंगी ॥ प्रीति छिपाई छिपत न मोहन अब लागे कुबरी सँग सोहन तुमतो लागे हमको कोहन हर के द्वार पुकार करूंगी ॥ इत ते आवत

उत चमकावत इत उत कछु दर्श दिखावत जैसा नाच नचाया हमको तैसा नाच नचा छोड़ूंगी ॥ मुराद अलीकी सांची बात ना कोई छल बल ना कोई घात प्रभुको पाया अपने हाथ कहो सखी मैं क्या करूंगी ॥ ३६९ ॥

ग़ज़ल ।

दरश अपना जो तुम रघुवर दिखादोगे तो क्या होगा ॥ जो तुम भानु सो कुल भानु तेरा भानुका सा मुखडा ॥ सकुचा है मन कमल मेरा खिलादोगे तो क्याहोगा ॥ अबइस संसार सागर में मेरी नैया जो बहती है ॥ निकट तटके जो तुम रघुवर लगादोगे तो क्या होगा ॥ इसी संसार रजनी में मुझे आते बड़ेस्वपने ॥ सोयेगफलतमें मुझको तुम जगादोगे तो क्या होगा ॥ लगीहै प्यास खुशदिल को तेरे दर्शन की है भगवन् ॥ वरसाकर स्वाती की बूंदें मिटा दोगे तो क्या होगा ॥ ३७० ॥

राग होरी ।

मनमोहन रिझवार री तेरे नयन सलोने ॥ तूअलबेली आन गाम की अबहीं आई है गोने ॥ सिखवन देहों सिखावन लेहों पग जिन धरत अगोने ॥ अबकी होरी तेरे नगर में केते कौतुक होने ॥ दया सखी या ब्रज में बसिकै नेह निभायो कौने ॥ ३७१ ॥

राग कान्हरा ।

भूर भाग भाजनभई ॥ रूपराशि अवलोकि बंधु दोउ प्रेम सुरंग रई ॥ कहा री करूं किहि भांति सराहूं नहिं करतूत नई ॥ विन कारण करुणाकर रघुबर किहिं किहि गति न दई ॥ करिबहु विनय राख उर मूरति मंगल मोद मई ॥ तुलसी ह्वै विशोक पति लोकहिं प्रभु गुण गणत गई ॥ ३७२ ॥

कवित्त ।

पढ़ वेद सारे जप तप व्रत धारे करे गंगा औ प्रयागन की सेवा मन लायके ॥ कंचन और नारी गज बाजी असवारी दान करे कुरु-क्षेत्र माहिं पंडित को पायके ॥ करे हयमेध कन्या दान सर्वस्व देत

श्रोत औ समारत की नीकी विधि भायके ॥ ईश नाम गान सम होत ना गुलाब अंग वेद औ पुरान व्यास कही समुझायकै ॥३७३॥

गज़ल ।

सोच कर चलना मुसाफिर यां ठगों का गाम है ॥ इस सरा के बीच आके बहुत से मारे गये ॥ अब कदम बढ़ाके रखना होने वाली शामहै ॥ पांचोचोर बसें नगरीमें सोते को लूटाकरें ॥ जागना तुमको मुनासिब पल्ले तेरे दामहैं ॥ दोस्त सभ दुश्मन तुम्हारे इनसे बचना तमाम है ॥ बाजीगर पुतली नचावे काठ अपना काम है ॥ यादोपति जजमान हमारे तिनके घर जाना हमें ॥ जाति का ब्राह्मण गावे खुशदिल जिसका नाम है ॥ ३७४ ॥

दीजिये दर्शन मुझे बंशी के बजानेवाले ॥ दूधकेखानेवाले माखनके चुरानेवाले ॥ गजने टेर करी द्वारकासेधाये ॥ सभामें द्रौपदीके चीर बढ़ानेवाले ॥ चौंक सुपने में पड़ी देख राधे मोहन को ॥ डार गलबैयां गये छोड जगानेवाले ॥ कुब्जा को राज दिया हमको बैराग बताया ॥ क्या और नहीं हैं संत भसम रमाने वाले॥ ३७५ ॥

राग जंगला ।

नामको आधार तेरे नामको आधारा ॥ मेरी मेरी करत जात दिन ही रैन सारा ॥ नजर भरके देख प्राणी धुंधका पसारा ॥ यमुना में गेंद गिरी ग्वाल बाल हारा ॥ कालीनाग नाथ लेनो कृष्ण भयो कारा ॥ राजा बलि के द्वारे ठाढे वामन रूप धारा ॥ बीस भुजा रावन की छिन में काट डारा ॥ मथुरा में जन्म लीनो गोकुल सिधारा ॥ कंसको निरवंस कीनो मोर मुकुटवारा ॥ ३७६ ॥

गोविंदा नहीं गाया तैंने गाया क्या नर बावरे ॥ आहिरन की चोरी करें करें सुई का दानरे ॥ कोठे चढ़के देखन लागे आवत कहां विमानरे ॥ महल चुनाये माड़ी चुनाई और चुनाया दलानरे ॥ इक दिन तुम पर ऐसा होगा पड़े रहो मैदानरे ॥ माटी का पुतला बनाया धर्‌यो आदमी नामरे ॥ आपही बैठ राह मुसाफर कहा बसाया मामरे ॥ पतिव्रता भूखी मरें बेश्या चाबें पानरे ॥ साधू

खावें सूखे टुकड़े माल मसखरे खानरे ॥ पाथर की तैं नाव बनाई उतरा चाहें पाररे ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो डूबेगा मँझधाररे ॥

राग कालिंगड़ा ।

मुखड़ा क्या देखे दर्पन में ॥ तेरे दया धर्म नहिं मन में ॥ आंब की डाल कोयलिया बोले सुअना बोले बन में ॥ घर बारी तो घर में राजी फ़क्कर राजी बन में ॥ ऐंठा धोती पाग लपेटी तेल चुआ जुलफन में ॥ गली गली की सखी रिझाई दाग लगायो तन में ॥ पाथर की इक नाव बनाई उतरा चाहे छिन में ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो यह क्या चढ़ेंगे रन में ३७८ ॥

राग जंगला ।

श्रीरामचंद्र दशरथ सुत नंदन यह पद भज मन मोरा रे ॥ बालापन में खेल गँवाई ज्वानी योवन जोरा रे ॥ वृद्ध भयो चिंता तब उपजी अब क्या करत निहोरा रे ॥ पांचों चोर समझ कर पकड़ो चढ़ो प्रेमरस घोड़ा रे ॥ ज्ञान खड्ग से मार गिरावो यह मुजरा नर तोरा रे ॥ भूला भूला कहा फिरत हैं जग में जीवन थोरा रे ॥ धरे रहें सभ रंग महल तेरे जंगल होत बसेरा रे ॥ भव सागर की धार कठिन है वहां तोरा नहिं मोरारे ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो समझ देख मन भोरारे ॥ ३७९ ॥

राग देश ।

ब्रजराजके सखि इश्क का मेरे दिल में तीर समागया ॥ वो जो दर्द था सो बना रहा न बताके कोई दवा गया ॥ मुझे आज वह ब्रजमोहना मिला नंदरायके द्वार पै ॥ नई नई तरह की वो सैन से पिया प्यारा जादू चला गया ॥ मैं तो ढूंढती उन श्यामको चहुँ ओर ब्रज कुंजन गली ॥ पिया हँसके बंशी बजा बजा नई सिरसे नेह लगा गया ॥ इक पल में होश हवास को लिया लूट कुंज विहारीने दिखलाके बांकी सी अदा मन हरके बनको चला गया ॥ कहँ रह सके भला इंद्रमाणि मेरे दिल को सबरो करार अब ॥ नई छैल श्याम लचक २ मुझे बांकी झांकी दिखा गया ॥ ३८० ॥

रेखता देश ।

वो झलक जो मोर मुकुट कीथी मुझे लखके श्याम लखा गया ॥ बसी जबसे चितवन चित में आ चितचोर हीं में समागया ॥ वो सरूप रूप था जलवागर लजे कोटि रवि शशि दृष्टिकर ॥ भौंहें कुटिल शोभा श्यामकी दृग देख मृग शरमागया ॥ कानों में कुंडल की दमक दो नागिनी छूटीं अलक ॥ विसियर है विष में विष भरा डसा मन मेरा लहरा गया ॥ कटि पीत पट शिर पै मुकुट तिरछी लटक निर्तत मटक ॥ मुरली मधुर अधरन धरी रस भीनी तान सुनागया ॥ इच्छा शरण आया तेरी रख लाज अब गिरिधर मेरी ॥ मनमें कसक बाकी रही सुपने में दरश दिखागया ॥ ३८१॥

राग काफी ।

बागों ना जारे तेरी काया में गुलजार करनी । क्यारी बोयकेरे रहनी कर रखवार ॥ दया पोद सूखे नहींरे क्षमा शील जल डार ॥ मन माली प्रबोध केरे संयम की कर बार ॥ दुर्मत काग उडाय के रे देखे क्यों न बहार ॥ मनगुलाब चितके बड़ारे फूलरही फुलवार ॥ मुक्त कली खिल रही सदा गूंथ पहरे क्यों न हार ॥ लोभलहर गहरी नदीरे लख चौरासी धार ॥ निगुरे निगुरे बहगयेरे संत उतर गये पार ॥ अष्ट कमल दल ऊपरेरे माया अपरंपार ॥ कहत कबीरा चित चेतलेरे आवागौन निवार ॥ ३८२ ॥

बसोजी म्हारे नैनन में सियराम ॥ जनकनंदनी जगत वंदनी रघुनायक घनश्याम ॥ कनक मंडप तले रत्न सिंहासन युगल मूरति अभिराम ॥ सरयू के तीर अयोध्या नगरी चित्रकूट निजधाम । तुलसीदास प्रभुकी छवि निरखत लजत कोटि शत काम ॥ ३८३ ॥

कवित्त ।

बैठिये न जहां तहां संगति कुसंगति में कायर के संग शूर भागे पै भागे ॥ फूलकी सुवास जैसे वासना में भोय रही कामिनीके

संग काम जागै पै जागै ॥ अरे अरे घर बसे घर ही घर कैसो वैरागी काम क्रोध लोभ मोह पागै पै पागै ॥ काजर की कोठरी में कैसहू चतुर घुसो एक रेख काजर की लागै पै लागै ॥ ३८४ ॥

ग़ज़ल ।

हमन हैं इश्क के माते हमन को दौलतां क्यारे ॥ नहीं कछु मालकी परवा किसीकी मिन्नतां क्यारे ॥ हमनको खुश्क रोटी बस कमरको इक लँगोटी बस ॥ सिरे पर एक टोपी बस हमन को इज्जतां क्यारे ॥ कबा शाला वजीरों को जरी जरबफ्त अमीरों को हमन जैसे फकीरों को जगत की नेमतां क्यारे ॥ जिन्होंके सुख न स्याने हैं उन्हींको खलकमानेहैं ॥ हमन आशिक दिवानेहैं हम न को मजलसां क्या रे ॥ कियो हम दरद का खाना लियो हम भेसका वाना ॥ वलीबस शौक मन माना किसीकी मसलतांक्यारे ॥३८५॥

लावनी ।

मोहिं विसरत नाहिं सुध सनम घडी पल तेरी ॥ श्रीकृष्ण खबर ना लई आज तक मेरी ॥ तेरे इशक में सहा श्याम रंज बहुतेरा ॥ कूचे में देते हरदम सौसौ फेरा ॥ नहिं लगा पता कहुँ यार ठिकाना तेरा ॥ किसजगा लगाया हमें बतलाना डेरा ॥ हम चाकर होरहे बदिल निगाह कित फेरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ कर प्रीत बढ़ा परतीत कहा डरतेहो ॥ उलफ़त का कदम पाछे को कहा धरतेहो ॥ आंखों में असर जादू का विकल करतेहो ॥ मारे नयन अदा तिरछी सों कतल करतेहो ॥ मेरे मार विरह शमशीर किया तन ढेरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ दिन रैन तसव्वुर ही में गुज़र सब जाती ॥ दर्शन विन देखे नैन धड़कती छाती ॥ काबू से निकल गये कृष्ण बड़े तुम घाती ॥ तकदीर बिना तदबीर काम नहिं आती ॥ क्या विपरीत कृष्ण तुम भोले पन पर गेरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ सहताहूं कृष्ण सब रंज सबर नहिं मुझको ॥ अब सहूं कहांतक कृष्ण सुनाऊं तुझको ॥ कथ गावत कवि प्रभु दयाल ख्याल रँग रँग

को ॥ हर वक्त भरोसा राख कृष्णके सँगको ॥ अब दे हमको दीदार करी क्या देरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ ३८६ ॥

राग भैरवी ।

सो जन मस्ताना मस्ताना जिन पायो पद निर्वाना ॥ मगनहोय चढ गयो गगन पै अधर धार धर ध्याना ॥ लगन लाय विसराय विश्व को अनहद शब्द पछाना ॥ पर्म सुन्न में पर्चा हूआ चेतन चरण समाना ॥ निर्गुणसेज तेजकी नगरी यहि अविगतअस्थाना ॥ लक्ष कला लिये चंद्र प्रकाशे कोटिकला लिये भाना ॥ जगमग लगी महलके भीतर देखत दरश दिवाना ॥ बरसे पदम दामिनी दमके हर हीरों की खाना ॥ गम से दूर अगम से आगे अद्भुत अजब ठिकाना ॥ खुलगयो कमल नवल बर पायो नित प्रति अमृत पाना ॥ अमरकंद दुख भंज व्यापी जिस घर भर्मभुलाना ॥ स्तुति निंदा दोऊ त्यागो खोजो पद निर्वाना ॥ हर्ष शोक से रहे अतीता तिन जग तत्त्व पछाना ॥ पांच पचीस पुरी तज भागे जीत लियो मैदाना ॥ नितानंद महबूब स्वामी अब निश्चय कर जाना ॥३८७॥

राग आसावरी ।

रेमन समझ सोच विचार ॥ ढार पांसा साधु संगत फेर रसना सार ॥ राख सतरह सुन अठारह नरद पांचो मार ॥ डारदे तू तीन काणे चतुर चौक निहार ॥ मानुषा यह देह फिर नहिं आवे बारंबार सूरदास गोविंद भजन बिन चले दोउ कर झार ॥ ३८८ ॥

राग जंगला ।

जन्म तेरो बातों में बीत गयो ॥ तैंने कबहूं न कृष्ण कह्यो ॥ पांच बरस का आला भोला अषतो बीस भयो ॥ मकर पचीसी माया कारण देश विदेशगयो ॥ तीसबरसकी अबमति उपजी लोभ बढे नित नयो॥माया जोरी लाख करोरी अजहुँ न तृप्त भयो॥ वृद्ध भयो तब आलस उपजी कफ नित कंठ रह्यो ॥ साधु कि संगति कबहुँ न कीनी विरथा जन्म गयो ॥ यह संसार मतलब का लोभी झूठा ढाठ रच्यो॥कहतकबीर समझ मन मूरख तू क्यों भूलगयो ॥

राग परज ।

दूर रहो रघुवीर खरे मम नावन नाँहि सो पाद छुवावो ॥ दारन में पुनि शैलन में कछु अंतर होय तो नाथ बतावो ॥ मानुष चूरन नाव लगाय सो दीनदयाल न काज गवांवो ॥ राजकुमार पखार लेहों पद तब मम नावनके ढिग आवो ॥ ३९० ॥

राग होरी ।

झटक्यो मोरा चीर मुरारी॥गागर शीश रंग की झटकी वेसर मुड गई सारी ॥ रेशम बंद वसनके टूटे झड़गइ कोर किनारी ॥ ब्रज में अनोखा खिलारी ॥ लेकर चीर कदम चढ़ बैठे हौं जल माँझ उघारी ॥ संमकी सखी मेरी बगर परोसन कर विनती सब हारी अरज मानो गिरिधारी ॥ अगर सुने मोरी बगर सुनेगी सास सुने देवे गारी ॥ कंत सुने मेरो धूम मचावे और सुने सखी सारी ब्रज वसना मोहिं भारी ॥ ३९१ ॥

नाचत देदे तारी ग्वाल मोहना संग खरे ॥ इत ब्रजनारी भरत पिचकारी उडत अबीर गुलाल कंचन कलश भरे ॥ इत मुरली डफ बाज रहीहै बीन पखावज ताल ॥ कृष्णदास प्यारी रँग छिड-कत लपट झपट ब्रजबाल लालन लाल गरे ॥ ३९२ ॥

रँगीली रघुवर की होरी ॥ तुम देखोरी भर नैन रैन दिन प्रेम रंग बोरी ॥ छबीली खेलें दोउ जोरी ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन बोलें होहोरी ॥ उमँग नहिं मनमें कछु थोरी ॥ उडत अबीर गुलाल लाल भइ अवध नगर खोरी ॥ उमड धुन चली चहूँ ओरी ॥ डफ मृदंग मुहचंग झांझ झालर कल घनघोरी ॥ लोक कुल लाज कान छोरी ॥ गावत गारि धमार सभी मिल रही न कछु चोरी ॥ देव देखन आये दौरी ॥ छाये व्योम विमान बाम कर वरषैं रँग ओरी ॥ मगन भई अवध नगर गोरी ॥ रत्नहरी बलिहार राम छवि निरखत तृण तोरी ॥ ३९३ ॥

प्रिया प्रेम नगर में आज खेल ले होरी॥ हरियश अतर अबीर उडाले कायाकी करले झोरी ॥ श्वास श्वास हरिनाम सुमिर ले सीख

मानले मोरी ॥ मानस जन्म अमोलक पायो थिर ना रहत चकोरी॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो लागी प्रीत न तोरी ॥ ३९४ ॥

राग खमाच ।

छबि पर वारियां प्यारे तेरी मैं छबि पर ॥ कोटि मदन दशरथ के कुवँरकी मारत अलकां कारियां ॥ तीखी सजल लाल अंजन युत लागत अँखियां प्यारियां ॥ राम सखे दृग ओट न करि हों करों न छिन भर न्यारियां ॥ ३९५ ॥

राग देश ।

सखीरी मोहन मुसकाने लागी सोई पै जाने ॥ रातमोहन सुपने में देखे शिथिल भये मोरे प्राने ॥ विरहों हूक लागी पसरी में नैन नीर बरसाने । सखी जिउरा घबराने ॥ हौं जो चढीथी अपनी अटा पर वह झट निकस्यो आने ॥ मंद हँसन मुख देख कृष्णको क्या हौं कहे बखाने ॥ सखी कोइ पीर न जाने ॥ हौं घायल मृगी ज्यों घूमत परी धरणि पर आने ॥ मंत्र यंत्र औषध घिस लाये बिसरे सभी उपाव सखी कोई लोग स्याने ॥ और उपाव नहीं कोउ दूजो श्याम मिलावो आने ॥ जानतहैं पिया पीर हमारी सूरदास के प्राण सखी कोइ और न जाने ॥ ३९६ ॥

राग ध्रुपद ।

सोलहूं शृंगार वारों नील मेघन सों कारो आवत प्रमोद बन सजनी यह को हैं ॥ चंदन सुगंध पान फूल तेल जुलफन अंजन लगाये नैन सैनन कर जोहै ॥ बंदन कसन भूषण मोती मणि माणिक धनुष बाण तरकश लिये करन अतिही सोहै ॥ पाँयन पनहीं लाल साजे जनु काम जाल रामसखे बाँको रूप सभको मन मोहै ॥ ३९७ ॥

शब्द ।

बंदियां नाकर गाफला मत होवे दिलगीर ॥ लोहे बांगर ताइये तेरे गल विच पैन जंजीर ॥ जां यम आवे पकड़ लेजावे कौन बंधावेगा धीर ॥ आगे तेरा संग न साथी ना भाई ना वीर ।

जे कुछ करें तां छूट सकें नहिं सौह जमांदी पीर ॥ बंदा ढेरी खाकदी कह नानक शाह फकीर ॥ ३९८ ॥

राग बरवा ।

अब मैं अपने रामको रिझाऊं॥नामध्याऊं भजनगुणगाऊं॥ पातपात में साहिबमेरा मुड़ मुड़ शीशनवाऊं ॥गंगा न जाऊं यमुना न जाऊं ना कोइ तीरथन्हाऊं॥ अडसठ तीरथ घटके भीतर तिनही में मल मल न्हाऊं॥औषध न खाऊं बूटी न लाऊं नाकोइ वैद्यबुलाऊं॥पूरन गुरू मिले अविनाशी भर्मके पुरजे उड़ाऊं॥ ज्ञान कटारा कस कर बांधों सुरति कमानचढ़ाऊं ॥ पांचोंचोर बसें घटभीतर उनको मार गिराऊं॥ योगीहोय न जटा बढ़ाऊं न अंग विभूतिरमाऊं॥जोरँग रँग्यो आप विधाता और क्या रंग लगाऊं॥ डाली न छेडूं न पत्ता तोडूं ना कोइ जीव सताऊं॥देहरा न पूजों न देवल पूजों परम ज्योति मिल जाऊं॥ चंद्र सूरज दोऊ सम कर राखों सुखमन सेजबिछाऊं॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो आवागौन मिटाऊं॥ ३९९ ॥

शब्द ।

जब पलाश फूलन पर आवै ॥ पात पात कर आप लुटावै काला मुँह कर जगदिखलावै ॥ तबलालन की लाली पावै ॥४००॥

कवित्त ।

की कुछ भेट सुदामे आंदी बीज की पाया धन्ने ॥ बक्कुलियां दी टिंड चबाई और चुपाये गन्ने॥ रोटी उत्ते साग खुलाया छाह पलाई छन्ने ॥ तिन्हां नाल शरी कत केही साहिब जिन्हां दी मन्ने४०१

राग भैरवी ।

अंगुरी पै गिरि धारचो गोकुला बचाव लीनी विपति तो सुदामाजू की छिन में मिटाई है ॥ द्रौपदीकी लाज कीनी भरी सभामें न जान दीनी पारथकी भारत में कीनी सहाइहै॥ जहां जहां भीर परी तहां तहां रक्षा करी कहत कवि मार्कंडे ऐसी होत आई है॥ बार बार कर पुकार कहों सुनो दीनानाथ मेरी बेर एती देर काहेको लगाई है॥ ४०२ ॥

सवैया ।

लाय समाधि रहे ब्रह्मादिक योगी भये पर अंत न पाये ॥
सांझ के भोरहिं भोरके सांझहि शेष सदा नित नाम जपाये ॥
ढूंढ फिरे त्रैलोकी में साखी नारद लेकर बीण बजाये ॥
ताहि अहीर की छोहरियां छछियाभर छाँछको नाच नचाये॥४०३॥

राग तिलंग ।

दीनानाथ अब बार तुम्हारी ॥ पतित उधारन विरद जानके बिगरी लेहु सँभारी ॥ बालापन खेलत ही खोयो युवा विषय रस माते ॥ वृद्ध भये सुध प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते ॥ सुतन तज्यो त्रिया ना तज्यो भ्रात तज तनु ते त्वचा भई न्यारी ॥ श्रवण न सुनत चरण गति थाकी नैन भये जल धारी ॥ पलित केश कफ कंठ बरूध्यो कल न पडै दिन राती ॥ माया मोह न छांडै तृष्णा यह दोऊ दुखदाती ॥ अब यह व्यथा दूर करबेको और न समरथ कोई ॥ सूरदास प्रभु करुणासागर तुमते होय सो होई ॥ ४०४ ॥

रेमन मूरख जन्म गँवायो ॥ कर अभिमान विषय सों राच्यो श्याम शरण नहिं आयो ॥ यह संसार फूल सेमरको सुंदर देख लुभायो ॥ चाखन लाग्यो रुई ऊड़गई हाथ कछू नहिं आयो ॥ कहा होत अबके मन सोचे पहिले नाहिं कमायो ॥ सूरदास भगवंत भजन बिन शिर धुन धुन पछितायो ॥ ४०५ ॥

राग देश ।

कहां लगाई एती देर ॥ अरे अरे सांवरेरे ॥ हों गुजराती शिव को उपासी पूजों सांझ सबेर ॥ भक्ति मर्मकी सार न जानों हांसी कराई मेरी ढेर ॥ ऊंचे चढके टेर सुनाऊं अब सुनियो म्हारी टेर ॥ क्या कहीं काज सवाँरे भगतनके क्या निद्रा ने लिये घेर ॥ नरसी के प्रभु अधम उधारन राखिये अबकी बेर ॥ ४०६ ॥

राग खमाच ।

कैसी बँसिया बजाय जादू डारारे ॥ श्रवण सुनत नहिं परत चैन

तन मन धन तुमपे वारारे ॥ बांकी छबि दिखलाई चित चपल चलाई ऐसी बातें बतलाइ मेरा जिया ललचाई कर तिरछी नजर भर मारारे ॥ जाकी मधुरी हँसन मुसकान तकन झमकन झुमकन कर मुरली लसन धर ध्यान दुलारे मन थारारे ॥ ४०७ ॥

राग तिलंग ।

जाग जानी कछु मसलत करले जांदी रैन विहानी ॥ तेरे कोलों लख चल चल जांदे तैं मन एक न आनी ॥ एक घड़ी हरि भजन न कीता दिसदा काल सिरानी ॥ शाहहुसैन फ़कीर साईंदा आखर दुनिया फानी ॥ ४०८ ॥

राग बरवा ।

मन मस्ताइयां छड हो यारा ॥ यह दिन जांदे गिणवें ॥ आगे मंज़लां भारियां गौरे भार न लद वो यारा ॥ मनमंगदा बादशाहीयां मनदे आँखे न लग होय यारा ॥ शाहहुसैन फ़कीर साईंदा मन मुर-शिद विच लभ षो यारा ॥ ४०९ ॥

राग विहाग ।

घूंघट चक सज्जना हुन शरमां केहीयां रखीयां वे ॥ जे जानां तूं ऐवें करनी मैं मूल न छांदी अखियां वे ॥ दो नैनां दा तीर बनाया मैं आजज़ दे सीने लाया घायल करके मुख छपाया यह घातां किन दसीयां वे ॥ जुलफ़ कुंडल ने घेरा पाया बिछुअर बनके डंग चलाया कहुखां तेरे की हथ आया एह प्रीतां कित्थों सिखीयां वे ॥ मैं अयाणी नेहुड़ा की जाणां तिजन बैठी मौजां माणां इशक तेरा मैनूं सौण न देंदा मैं डरदी आख न सकीयां वे ॥ हस रस के मैं लाइयां आपे रोशन होई नूं झिड़कन मापे एस इशक दे बड़े स्यापे तूं भुवा बैठो अखीयां वे ॥ मैं बंदी दा जे तूं साईं कदां तां आवीं फेरा पाईं मिहर करीं ते मुख दिखलाई मैं काग उडांदी थकीयां वे ॥ बुल्हे शाह नूं ना तर सावां करां अनायत मैं बल आवां शाह अनायत घल नाल लावीं मैं तेरी हो हो नच्चीयांवे ॥ ४१० ॥

ग़ज़ल ।

श्यामकी ऊधो जुदाई अब सही जाती नहीं ॥ चैन दिनको रातको आंखों में नींद आती नहीं ॥ बेवफा हमसे खफा हो जादिया सौतनको दिल ॥ क्या खता मेरी खबर भेजी कोई पाती नहीं ॥ दिल दिया गैरोंको हमदम गमदिया हमको सनम् ॥ अब कोई मिलनेकी सूरत हमको दिखलाती नहीं ॥ छोड कर माखन औ मिसरी वह गये पीनेको छाँछ ॥ ताब जुगनू की कहीं महताब को पाती नहीं ॥ क्या कहें गोकुल के तुमसे हाल बरसाने क हम ॥ कुंजकी कोई गली हरगिज हमें भाती नहीं ॥ उनकी उलफत में हमेशा गोपियां गातीथीं राग ॥ वह गये जबसे कोई गाती हैं पर भाती नहीं ॥ कानो में मुद्रा गले सेली मले तनुमें विभूत ॥ होवें हम योगिन उन्हें कहते शरम आती नहीं ॥ मार कर आसन लिये माला करों कुंजन भजन ॥ यह सखुन लिखते तबीअत तरस कुछ खाती नहीं ॥ आइये गोकुल मनोहर आरजू करते गणेश ॥ है कोई दाना सखी हमदमको समझाती नहीं ॥ ४११ ॥

कबित्त ।

दास तो तिहारे जो उदास तो तिहारे दूर पास तो तिहारे आस खास तो तिहारे हैं ॥ दीन तो तिहारे मतिहीन तो तिहारे जो नवीन तो तिहारे प्राचीन तो तिहारे हैं ॥ क्रूर तो तिहारे गुण पूर तो तिहारे राचे नूर तो तिहारे सांचे शूरतो तिहारेहैं ॥ भायक तिहारे यशगायक तिहारे हो सहायक हमारे हम पासक तिहारे हैं॥४१२॥

सुदामा तन हेरे तो रंक हूं ते राव कीने विदुर तन हेरे तो राजा कीने चेरे ते ॥ कूबरी तन हेरे तो सुंदर स्वरूप कीने द्रौपदी तन हेरे तो चीर बाढ़े टेरे ते ॥ कहत छत्रशाल प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी हरनाकुश मारचो का नेक नजर फेरे ते ॥ कामी अभिमानी गुनी ज्ञानी भये कहा होत नामी नर होत गरुड़-गामी के हेरे ते ॥ ४१३ ॥

राग धनाश्री ।

जन्म गँवायो ऊआ बाई ॥ भजे न चरण कमल यदुपतिके रह्यो विलोकत छाई ॥ धन यौवन मद ऐंडो ऐंडो ताकत नारि पराई ॥ लालच लुब्ध श्वान जूंठन ज्यों सोऊ हाथ न आई ॥ रंचकांच सुख लाग मूढ़ मति कंचन राशि गवांई ॥ सूरदास प्रभु छांड सुधारस विषय परम विष खाई ॥ ४१४ ॥

राग सोरठ ।

नहीं ऐसो जन्म वारंवार ॥ क्या जानूं कछु पुण्य प्रगटे मानसा अवतार ॥ बढ़त पलपल घटत छिनछिन चलत न लागेवार ॥ विरछ के ज्यों पात टूटे लगें नहिं पुनिडार ॥ भवसागर अति जोर कहिये विषम औखी धार ॥ सुरत का नर बांध वेड़ा वेग उतरोपार ॥ साधु संतां ते महंतां चलत करत पुकार ॥ दास मीरां लाल गिरिधर जीवना दिन चार ॥ ४१५ ॥

राग देश ।

कहि न जाय छबि राधाबरकी ॥ चटकीली उरमाल विराजे मटकीली गति श्याम सुँदर की ॥ मोती लोल चारु नासा में चंदन खोर आड़ केसरकी ॥ अटकरह्यो मन ललित माधुरी निरख लटक वा मुरलीधर की ॥ ४१६ ॥

रेखता ।

फरजंद नंदजूका मन बीच भामदा ॥ वर पायोहै कहांसे सुंदर सुहामदा ॥ लटकों की चाल चलता प्यारा मेरे आमदा ॥ गल जामा है जरी का कटि काछनी बनी ॥ पीले दुपट्टे वाला बीड़े चबामदा ॥ कुंडल झलकतेहैं दरुस्त गोशे में ॥ आवाज बांसुरी की शीरीं बजामदा ॥ कांधे कमरिया सोहै गैयां चरामदा ॥ मीर माधो बलिहारी यश तेरा गामदा ॥ ४१७ ॥

राग सिंध ।

दसीयो मोहन किस दानी ॥ आवंदा जावंदा नजर न आवे

अजब तमाशा इसदानी ॥ दधि मेरो खायो मटुकिया फोरी लोभी यह गोरस दानी ॥ मात यशोदा दही बिलोवे माखन लेले नसदानी ॥ मीरां के प्रभु गिरिधर नागर लूंलूं दे बिच रसदानी ॥ ४१८ ॥

राग सिंधडा ।

क्या कहें आलम में हम इन्सान या हैवान थे ॥ खाक थे क्याथे गरज इक आनके महिमान थे ॥ कररहेथे अपना कब्जा गैरों के इमलाक पर ॥ छीनली जब उसने तो जाना कि हम नादान थे ॥ एक दिन इक उस्तख्वाँ पर जापडा मेरा जो पाउँ ॥ क्या कहें उस वक्त मेरे दिलमें क्या क्या ध्यान थे ॥ पाउँ पडतेही गरज उस उस्तख्वाँ ने आह की ॥ अरकहा ज़ालम कभी हमभी तो साहिब जान थे ॥ दस्तो पा जानूँ शिरो गर्दन शिकम पुश्तो कमर ॥ देखने को आंख और सुन्नेकी खातर कान थे ॥ अबरू ओ बीनी जबीं नक़्शो नगारे खालो खत ॥ लाल मरवारीद से बिहतर लबो दंदान थे ॥ रातके सोनेको क्या क्या नरमो नाज़ुक थे पलँग ॥ दिनकी खातर बैठनेको ताक ओ ऐवान थे ॥ लगरहाथा दिल कहीं चंचल परीजादोंके साथ ॥ कुछ किसीसे अहद थे और कुछ कहीं पैमान थे ॥ गुलबदन और गुलअजारों से कनारो बोस्ता ॥ कुछ निकालथे हवस कुछ औरभी अरमान थे ॥ होरहीथी चहचही और मचरहीथी कहकही ॥ साकी औ सागर सुराही अतर फूल और पान थे ॥ एकही चक्कर अजल ने आनकर ऐसा दिया ॥ नतो हम थे न वह सारे ऐश के सामान थे ॥ ऐसी बेरहमी से मत रख पाउँ हमपे ऐ नजीर ॥ ओ मियां हमभी कभी तेरी तरह इन्सान थे ॥ ४१९ ॥

राग पहाड़ी ।

गोविंद लीना मोल ॥ कोई कहै महँगा कोई कहै सस्ता लिया तराजू तोल ॥ ब्रजके लोग करैं सभ चर्चा लिया बजाके ढोल ॥ सुर नर मुनि जाको पार न पावें ढक लिया प्रेम पटोल ॥ जहर प्याला रानाने भेज्या पिया मैं अमृत झोल ॥ मीरा प्रभुके हाथ बिकानी मैं सर्वस दीना घोल ॥ ४२० ॥

राग पीलो ।

ब्रजमोहन आयेरे ग्वारन मिलन चली ॥ सोहनी विरहों विराजेरे शिरपर झूल रही ॥ गल नरमेदा जामेरे मोतियां तनी ओ तनी॥राधे शिर धर मटुकी रे वेचां मैं दूध दही ॥ केहा चेटक लायोवे भुल गया दूध दही ॥ पुत्र नंदे षाला वे कीता मैं आज सही ॥ लक पेटीया सोहे वे हीरीयां जड़त जड़ी ॥ श्यामा मैं नहीं रहना वे तेरीया ब्रज नगरी ॥ विच मथुरा नगरीया वे कान्हा जगात लई ॥ यश केवल गावेरे चरनी मैं लाग रही ॥ ४२१ ॥

राग पहाड़ी ।

श्यामा तेरी बंशी सितम करेंदी ॥ यंत्र मंत्र जादू टोना पढ़ पढ़ मन वश करलेंदी॥जब सोऊं तो नींद न आवे आँखियाँ जल बरसेंदी ॥ कृष्णदास हित प्रीत रीत वश चरण कमल चित देंदी ॥ ४२२ ॥

राग जंगला ।

आली मोहिं लागत वृंदावन नीको ॥ घर घर तुलसी ठाकुर पूजा दर्शन गोविंद जीको ॥ निर्मल नीर बहत यमुनाको भोजन दूध दही को ॥ रत्न सिंहासन आप विराजें मुकुट धरयो तुलसी को ॥ कुंजन कुंजन फिरत राधिके शब्द सुनत मुरली को ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर भजन विना नर फीको ॥ ४२३ ॥

राग रामकली ।

निरख सखी शोभा श्रीराम की ॥ मग्न भई लग्न लागी हीयरा में सुध न रही तन मन धन धामकी॥साँवरे वरण मनके हरण मनासिज मन मोह करण अरुण वरण सुंदर अभिराम की ॥ पीत वसन कुंद दशन मंद हसन लसन फसन अलक कुंडल वर वाम की॥ रत्न हरी कर विचार पल पल पर प्राण वार छवि निहार दशरथ सुत श्याम की ॥ ४२४ ॥

ग़ज़ल ।

हमन से मत मिलो लोगो हमन खफती दिवाने हैं ॥ खुशी का

राह छोड़ा है कठिन में जा समाने हैं ॥ तजी खिदमत वजीरी की पाई लज्जत फकीरी की ॥ चढ़े किश्ती सबूरीकी फकरेक यह मकाने हैं ॥ हमन दिन रैन रोतेहैं गमों से जान खोते हैं ॥ शूलों की सेज सोतेहैं विरहोंके यह निशाने हैं ॥ हमारा यार ओ जानी पीवे हरि नामका पानी ॥ कि आखर होवना फानी वली रामे समानेहैं ॥

राग पहाड़ी ।

यशोदाजी के द्वारे पर नीमाये मैं बार बार ज्ञानीयां ॥ गिरिधर मैंनूं नजर न आवे सौ सौ फेरा पानीयां ॥ लाजकी मारी मैं कुछ नहीं सकदी दूतां थीं शरमानीयां ॥ कृष्ण सखी प्यारे दर्शन बाझों कूंज वांगूं कुरलानीयां ॥ ४२६ ॥

राग जंगला ।

रघुवर चरण शरण सुखदायक क्यों न गहो मन मेरे ॥ कोटि जन्म के संचित सगरे पाप विनाशें तेरे ॥ जिन चरणन की शरण गही ते उधरे पतित घनेरे ॥ अजामील गणिका गज गीधन हरिपुर किये बसेरे ॥ जिन चरणन की रेणु परस मुनि पत्नी तरी सबेरे ॥ भालु भील रजनीचर वानर काट गये भव फेरे ॥ कोटि कलंक मिटे कुमतिन के जिन चरणन के हेरे॥रत्नहरी हम जान भयेहैं इन चरणनकेचेरे॥

राग देश ।

मैंने थारा काईं बिगारचो काज ॥ मोसे क्यों रूसे महराज ॥ लोक लाज कुल कान गवाँई तज कुटुंब शरणागत आई कीनी प्रीत नंद के नंदन छाँडत न आई तोकों लाज ॥ कुब्जा कूड कंसकी दासी जां मुख देखत आवत हांसी ऊंच नीच तुमने कछु न विचारी चेरी करी शिरताज ॥ इतनी विनती मानो हमारी जन्म जन्म की मैं दासी तिहारी श्रीब्रजनिधिके कुंज विहारी आन उधारो मोहिं आज ॥

राग सिंध ।

आज अति बाढ्योहै अनुराग ॥ पूत भयोरी नंद महरके बड़े बैस बडभाग ॥ दई सवच्छ लच्छ धेनू अरु नंद बढ़ायो त्याग ॥ गुणी

गण बंदी जन सब मांगत पायो अपनो लाग ॥ कूदें ग्वाळ मनो रण जीते आनद फूले बाग ॥ गोपी गोप ओप सबके मुख गावत मंगल राग ॥ हरद दूध दधि माखन छिड़कत मच्यो बधैया फाग ॥ परमानंद दास भक्तनके भयो सो परम सुहाग ॥ ४२९ ॥

राग पीलो ।

आज माई गोकुल भयोरी आनंद ॥ रानी यशोमति बालक जायो प्रगट्यो पूरण चंद ॥ ब्रज वनिता सब बन ठन आई गावत नाना छंद ॥ सूरदास प्रभु पूरण प्रगटे मेट दिये दुख द्वंद ॥ ४३० ॥

राग जंगला ।

कोई असां नाल चल्ले मेरीयो सैयो नी ॥ असां तां मुलक अडिठड़े नूं जावनां ॥ अडिठड़े देशके महरम नाहीं खर्च नहीं कछु पल्ले ॥ दूर गयां दी खबर न आइया कोई सुनेहड़ा घल्ले ॥ कतने कारन गोहडे आंदे चर्खा मूल न हल्ले ॥ हार सिंगार सभी कुछ देनीहां दस्तां दे देनीहां छल्ले ॥ एथोंदा खटिया एथे रहजानां झाड पल्लू उठ चल्ले॥शाहहुसैन फकीर साईंदा आखर जानां इकले॥

राग पहाड़ ।

हमरी प्रणाम बांके बिहारी को ॥ मोर मुकुट माथे तिलक विराजे कुंडल अलकां कारी को ॥ अधर मधुर धर वंशी बजावे रीझ रिझावे राधा प्यारी को ॥ यह छबि देख मग्न भई मीरां मोहन गिरिवर धारी को ॥ ४३२ ॥

शब्द ।

हर हर हर भज मेरया मनां मह औसर नहिं पावेगा ॥ अधम कर्म ते बाज न आवे बांध्या यमपुर जावेगा ॥ साईंयो तेरे संग चलेगा संत जना भुगतावेगा ॥ गाढ़े काम न कर मेरे जीउड़े फेर जन्म नहिं आवेगा ॥ नाथ नवल गुरु मिहर करे भव सागर तर घर जावेगा ४३३

राग प्रभाती ।

इक रामें नूं नहीं संभालदा ॥ नर देह अमोलक पाइया विशयां

संग लाग गवाँइया चंगा औसर एवें तूंटालदा ॥ मिल गोविंद प्रीत नमानिया तेरी जिंद अजाई जानिया भय करिये जमदे जालदा ॥ तेरे शिरपर लेखा लेखिये जग कूड़ पसारा पेखिये सुपने ज्यों बाजी देखिये कुछ तोशा करलै नालदा ॥ हरिनाम गुनाहीं बखूशदा यम संकट तें प्रभु रखदा सच्चा नाथ सुनिहड़ा आखदा तैनूं भय न व्यापे कालदा ॥ ४३४ ॥

आनंद मंगल गावो मोरी सजनी भई प्रभात बीत गई रजनी ॥ उदर निरंतर फूली फुलवारी । तहां मेरी मनसा करे रखवारी ॥ बरखे अमी नाना फल लागे । कही नजाय कछु अचरज वाके ॥ बिरछा एक अमृत फल लागे । पावें ग कोइ संत सभागे ॥ कहत कबीर गूंगे की सैना ॥ सतगुरु शब्द परख कर लैना ॥ ४३५ ॥

भला जागरे सारी रैन बिहानी ॥ जात जन्म अंजली को पानी ॥ घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावे ॥ चंद सूरज तुझे कह समुझावे ॥ पल पल औध घटत नित जावे ॥ गया श्वास कभी हाथ न आवे ॥ वहता पानी तरुवर छाया ॥ छिन छिन काल ग्रसे तेरी काया ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई ॥ भर ज्वानी कछु काम न आई ॥ सत्गुरु सेवा यह धन माया ॥ दास कबीर चरण लपटाया ॥ ४३६ ॥

कवित्त ।

सेवक गुणी जनके चाकर चतुरके हैं कबिनके मीत चित हित गुण गानी के ॥ सीधन सों सीध महा बांके हम बांकन सों हरी चंद नकद दमाद अभिमानी के ॥ चाहबे की चाह काहूकी न कछु परवाह नेही नेहके दिवाने सदा सूरत निवानी के ॥ सर्बस रसिक के सुदास दास प्रेमिनके सखा प्यारे कृष्णके गुलाम राधा रानी के

सवैया ।

धूत कहो अवधूत कहो रजपूत कहो जुलहा कहो कोऊ ॥
काहूकी बेटी सों बेटा न ब्याहन काहूकी जात बिगार न सोऊ ॥
तुलसी सरनाम गुलाम है राम को जाके रुचै सो कहो कछुओऊ ॥
मांगके खैबो मसीतको सोयबो लेबेको एक न देबेकोदोऊ ४३८॥

कवित्त ।

लाजको जहाज डूब्यो शीलको समुद्र सूख्यो दयाके खजाने की ताली कोऊ लैगयो ॥ सत्यहू की कोठी लूटी धर्म की धुजाही टूटी पाप घर घर घट घट बीच छे गयो ॥ संतनको दोष कहा होत कोऊ देत नाहीं नाहीं को नकीब घर घर में कह गयो ॥ संत कहैं चेतरे तू चेतरे अचेती नर पुण्य धर्म दया बीज अंश कहूं रह गयो ॥

राग झूलना ।

दुनियाके परपंचों में हम मजा नहीं कछु पायाहै ॥ भाई बंधु पिता माता सुत सबसों चित अकुलायाहै ॥ छोड छाँड घर गाम नाम कुल यही पंथ मन भायाहै ॥ ललित किशोरी आनँद घन सों अब हठ नेह लगायाहै ॥ ४४० ॥

क्या करनाहै संतति संपति मिथ्या सब जग माया है ॥ शाल दुशाले हीरा मोती में क्यों मन भर्मायाहै ॥ माता पिता पुत्र बंधू सब गोरख धंध बनाया है ॥ ललित किशोरी आनँदघन हरि हिरदे कमल बसाया है ॥ ४४१ ॥

राग होरी ।

राधाबर खेलत होरी ॥ नंदगामके ग्वाल इते उत बरसाने की गोरी ॥ डफ करताल बजावत गावत केशर कुंकुमघोरी ॥ पररूपर रंग में बोरी ॥ दशहूं दिशान गुलाल घुमंड में काहू कछु लख न परोरी ॥ उचक आय धाय चंद्रावल ललितादिक लै दौरी ॥ गह्यो हरिको बरजोरी ॥ गारी गावत नारी सभी मिल नागरी योवन जोरी ॥ नंदके लाल बड़े रसिया हो करो इनसों बरजोरी ॥ फाग में कौन की चोरी ॥ छीन लई बनमाल मुरलिया पीत बसन लियो छोरी ॥ नागरी वेष बनाय कहत देखो नंदराय की छोरी ॥ बनी छबि काम करोरी ॥ तारी देदे नचावत ग्वालिनि अपनी अपनी ओरी ॥ वा दिनकी सुध भूली लला यमुना तट चीर हरोरी ॥ आज यह दाँव परोरी ॥ कृष्णरंग मन भावत फगुवा लेकर बहुत

निहोरी ॥ हौं अधीन वृषभानुसुताके विनय करों कर जोरी ॥ लाज कछु रहीहै न थोरी ॥ ४४२ ॥

सवैया ।

आपनी ओर की चाहें लिखी लिखी जात कथा उत मोहन ओर की ॥ प्यारे दया कर वेग मिलो सही जात व्यथा नहिं मान मरोर की ॥ आपहिं बांचत अंग लगावत अहो किन आनी चिठी चितचोरकी ॥ राधिके मौन रही धर ध्यान औ ह्वैगई मूरति नंद किशोरकी ४४३॥

कवित्त ।

मुनि मख राख्यो मार ताड़का सुबाहु वीर चरण छुवाय जिन शिला तार दीना है ॥ सो कवि रसीले आय मिथिला शहर माहिं नर अरु नारिनको मन हरलीना है ॥ सोई यह सलोने सुकुमार दशरत्थजूके राजत निहार कोटि काम छबि छीनाहै ॥ मेरीमहारानी तीन लोक में प्रमानी सिया सोने की अँगूठी राम साँवरो नगीना है ॥

राग झूलना ।

जंगल में अब रमतेहैं दिल बस्ती से घबराताहै ॥ मानुष गंध न भाती है सँग मर्कट मोर सुहाता है ॥ चाक गरेबां करके दमदम आहीं भरने भाताहै ॥ ललित किशोरी इश्क रैनदिन यह सब खेल खिलाता है ॥ ४४५ ॥

राग झिंझोटी ।

तेरी खातर श्यामां वे मैं योगिन होइयां ॥ अंग अंग छाई श्यामां वे मैं मल मल रोइ प्रीत लगी तन वारी ॥ केधर जावां श्यामा वे मैं केन्हू आखाँ ॥ प्रीत लगी श्यामा दिल अंदर राखाँ ॥ बिरहों दी अग्नि करके मैं जारी ॥ तैंताँश्यामाँ मेरी सुधहूं न लीनी ॥ व्याकुल करके वे मैं कमली कीनी ॥ चंद्रसखी बलिहारी ॥ ४४६ ॥

छैला मोको यमुना जान न देय नंद महर दा छूकरू ॥ बालूड़ा तोड़े मेरा चोलूड़ा फाड़े छैलावे मैकी हँस हँस गारियाँ देय॥चोलूड़ा फाड़े मेरा तालूड़ा तारे छैलावे सानूं हस्से गलाँदा केय ॥ जित

मिलदा तित करे मसूरताँ छैला वे साडा धिगे लगाँदानेह ॥ कीकर बसना गोकुल नगरी छैलावे एहनूं कोई समझावोएह ॥ मयाराम असीं देखी देखी जीवना छैलावे साड़े मन तन बस रह्या एह ॥ ४४७ ॥

राग बिलावल ।

ऊधो इतनी कहियो जाय ॥ अति कृश गात भई हैं तुम बिन बहुत दुखारी माय ॥ जल समूह वर्षत अँखियन ते हूंकत लैलै नाउँ ॥ जहाँ जहाँ गउ दोहन करते ढूंढत सोइ सोइ ठाउँ ॥ परत पछार खाय तेही छिन अति व्याकुल ह्वै दीन ॥ मानो सूर काढ डारी हैं बारि मध्य ते मीन ॥ ४४८ ॥

राग सोरठ ।

मेरी कौनगति ब्रजनाथ ॥ भजनविमुख अरु शरण नाहिन फिरत विषयनसाथ ॥ हौं पतित अपराध पूरण भर्यो कामविकार ॥ काम कुटिल अरु लोभ चितवन नाथ तुमन बिसार ॥ उचित अपनी कृपा करहो तऊ जान्यो जाय ॥ सोऊ करहो जे चरण सेवे सूर जूँठन खाय ॥ ४४९ ॥

राग होरी ।

ऊंचो गोकुल गाम जहां हरि खेलत होरी ॥ चल सखि देखन जाहिं पिया अपने की जोरी ॥ बाजत ताल मृदंग और किन्नर की जोरी ॥ गावत देदे गारि परस्पर भामिनि गोरी ॥ बूका सुरँग अँबीर उड़ावत भर भर झोरी ॥ इत गोपिन के झुंड उत हार हलधर जोरी ॥ नवल छबीले लाल तनी चोलीकी तोरी ॥ राधा चली रिसाय ढीठ सों खेले को री ॥ खेलत कैसो मान सुतो वृषभानु किशोरी ॥ सूर सखी उर लाय हँसत भुज गह झकझोरी ॥ ४५० ॥

राग सोरठ ।

प्रभु हो कबलौं नाचनचैहो॥अपने जनके निलज तमाशे कबलौं जगहिं दिखैहो ॥ कबलौं इन विमुखनके मुख सों निज गुण गणहिं लजैहो ॥ कबलौं जिनपै सतत हँसत यम तिनसों हमहिं हँसैहो ॥

छिन छिन बूडत जात पंक लख मोहिं कब चित्त द्रवैहो ॥ जन्म जन्म के निज हरिचंदहिं फिरिके कब अपनैहो ॥ ४५१ ॥

कुंडलिया ।

प्राण पुत्र दोऊ बडे चारों युग परमान ॥ सो दशरथ नृप परिहरचो वचन न दीनो जान ॥ वचन न दीनो जान बडेन की बूझ बडाई ॥ बात रहे सो काज और बरु सर्वस जाई ॥ कह गिरिधर कविराय भये दशरथ प्रणवाना ॥ वचन कहे नहिं तजे तजे निजसुत अरु प्राना ॥ ४५२ ॥

रही न रानी कैकयी अमर भई यह बात ॥ कौन पूर्वले पाप ते वन पठयो जग तात ॥ वन पठयो जग तात कंत सुरलोक सिधारचो । जिहिं सुत काजहिं मरचो राउ नहिं वदन निहारचो ॥ कह गिरिधर कविराय भई यह अकथ कहानी ॥ यश अपयश रहि गयो रही नहिं केकयि रानी ॥ ४५३ ॥

साईं वैर न कीजिये गुरु पंडित कवि यार ॥ बेटा वनिता पौंरिया यज्ञ करावन हार ॥ यज्ञ करावनहार राजमंत्री जो होई ॥ विप्र परोसी वैद आपको तपै रसोई ॥ कह गिरिधर कविराय बात चतुरन के ताईं॥इन तेरह सों तरह दिये बनि आवै साईं ॥ ४५४ ॥

दौलत पाय न कीजिये सुपने में अभिमान ॥ चंचल जल दिन चार को ठाउँ न रहत निदान ॥ ठाउँ न रहत निदान जियत जग में यश लीजै ॥ मीठे वचन सुनाय विनय सबही की कीजै ॥ कह गिरिधर कविराय अरे यह सब घट तोलत ॥ पाहुनि निशिदिन चार रहत सबहीके दौलत ॥ ४५५ ॥

गुणके गाहक सहस नर बिन गुण लहै नकोय ॥ जैसे कागा कोकिला शब्द सुने सभ कोय॥शब्द सुने सभ कोय कोकिला सबहिं सुहावन॥दोऊ एकै रंग काग सभ भये अपावन॥कह गिरिधरकविराय सुनो हो ठाकुर मन के॥बिन गुन लहै न कोय सहस नर गाहक गुनके॥

चूके कबहुँ न चुगुल नर अरु चूके सभ कोय॥वरकंदाज कमानियाँ चूक उन्हींसे होय ॥ चूक उन्हींसे होय जे बांधें बरछी गुल्ला ॥ चूक

उन्हींसे होय पढ़ें पंडित अरु मुल्ला ॥ कह गिरिधर कबिराय कला हूं ते नट चूके ॥ चुगुल चौकसीदार ससुर कबहूं नहिं चूके ॥ ४५७ ॥

नैनां की नोकें बुरी निकस जात जस तीर ॥ हेरे घाव न पाइये वेधा सकल शरीर ॥ वेधा सकल शरीर वैद क्या कर बैदाई ॥ करिहो कोटि उपाव घाव नहिं देत दिखाई ॥ कह गिरिधर कविराय विरहनी देतहै चोकें ॥ समझ बूझके चलो बुरी नैननकी नोकें ॥ ४५८ ॥

विना विचारे जो करे सो पाछे पछताय ॥ काम बिगारे आपना जग में होत हँसाय ॥ जग में होत हँसाय चित्त में चैन न आवे ॥ खान पान सन्मान राग रँग मनहि न भवि ॥ कह गिरिधर काबिराय दुःख कछु टरत न टारे ॥ खटकत है जिय माहिं कियो जो विना विचारे ॥

बीती ताहि विसार दे आगेकी सुध लेहु ॥ जो बनिआवे सहजही ताहीमें चित देहु ॥ ताही में चित देहु बात जोई बनि आवे ॥ दुर्जन हाय न कोय चित्त में खता न पावे ॥ कह गिरिधर कविराय यही कर मन परतीती ॥ आगे को सुख होय समझ बीती सो बीती ॥ ४६० ॥

साईअपने चित्तकी भूल न कहियेकोय ॥ तबलग मनमें राखिये जबलग काज न होय ॥ जबलग काज न होय भूल कबहूं नहिं कहिये ॥ दुर्जन हँसे न कोय आप सियरे हो रहिये ॥ कह गिरि धर कबिराय बात चतुरनके ताईं ॥ करतूती कहदेत आप कहिये नहिं साईं ॥ ४६१ ॥

साइं अमर उजार में जरत महा पछताय ॥ गुण गाहक कोऊ नहीं जाहि सुबास सुहाय ॥ जाहि सुबास सुहाय शून्य विन कोऊ नाहीं ॥ कै गीदर कै हरिण सोतो कछु जानत नाहीं ॥ कह गिरिधर कविराय बड़ा दुखयहीगुसाईं॥अगर आक की राखभई मिलएकैसाईं॥

पटपद ।

दया चट्ट होगई धर्म धँसि गयो धरनमें ॥ पुण्यगयो पाताल पाप भयो बरन बरन में ॥ राजा करे न न्याव प्रजाकी होत खुवारी ॥ घर घर भे बेपीर दुखित भये नर अरु नारी ॥ उलट दांन गज पति लहे शील संतोष कितेगयो ॥ वैताल कहै सुन विक्रम तो अब कलियुग परगट भयो ॥ ४६२ ॥

कुंडलिया ।

कीच पीछले धोयके आगे नाहिं लगाव ॥ ऐसा तुझको फेर रे मिले न जलदी दाव ॥ मिले न जलदी दाव भनत गुरु सुने न बहरे॥ सर्व समग्री हुंदयां भूल्यो सिखर दुपहरे ॥ कह गिरिधर कविराय धँसो मत कर्दम बीच ॥ ऊंचे मारग चलो जहां फिर लगे न कीच ॥

रकम भुलाई बदबखत ऐसा भयो बेहोश ॥ हिसाब न समझे अकल में देत औरको दोश ॥ देत औरको दोश यहीतो बडी खराबी ॥ तकब्बर मदिरा पान कियो बनरह्यो शराबी ॥ कह गिरिधर कविराय धोखे चंदनके ल्यायो बकम ॥ घर में पेड मलयागिरि नाहिं पछाने रकम ॥ ४६५ ॥

झगडा तैंने पाइया तूही इसे निबेर ॥ औरन से निबडे नहीं यही अटपटो फेर ॥ यही अटपटो फेर तुही सुरझाये तो सुरझे ॥ और लगावे हाथ तो उलटो दूनोंउरझे ॥ कह गिरिधर कविराय भाँति का पटको पगडा ॥ अहंब्रह्म जप सदा तभी मिटिहै यह झगडा॥४६६॥

जंगल में मंगल तुझे जो तू होवे फकर ॥ खिदमत तेरी सभ करें जब दिलके छोडे मकर ॥ दिलके छोडे मकर फकीरी का रँग लागे ॥ मूल सहित संसार रोग सगरो भ्रम भागे ॥ कह गिरिधर कविराय कुफरके तोडे संगल ॥ जहँ इच्छा तहँ रहो नगर हो अथवा जंगल ॥ ४६७ ॥

कथा यथा शुकदेव की कहत सुनत भये पार ॥ शम दम आदि विराग बिन कर खावो रुजगार ॥ कर खावो रुजगार मोक्ष पद नाहीं पैये ॥ सुनी सुनाई बात कहूं साधू पद लहिये ॥ कह गिरिधर कविराय दुखावो काहे मत्था ॥ इक प्रत्यक बोध विहीन निरर्थक है सब कत्था ॥ ४६८ ॥

बेटा बेटी भार्या भाई सुत संसार ॥ पिता पितामह आदि जो सब शरीर के यार ॥ सब शरीरके यार नाहिं इनमें कोउ तेरो ॥ भयो तुझे परमाद जो बन रह्यो उनको चेरो ॥ कह गिरिधर कविराय सभन का झगड़ा मेटो ॥ ना तूं बाप किसीका तेरा कोइ न बेटो॥ ४६९ ॥

रोना तेरा तब मिटै जब होवे निष्काम ॥ सकल वासना नाश बिन होय न तुझे अराम ॥ होय न तुझे अराम समझ मन तू दिल अंतर॥ काटे महा भुजंग पढ़ै बिच्छूके मंतर॥कह गिरिधर कविराय अविद्याका तजो कोना ॥ आओ अपनी तरफ जहाँ फिर रहे न रोना।

किरपा देह अध्यासकी अविद्याको मताप ॥ बेमुख भये सरूपते जपै अनातम जाप॥ जपैअनातम जाप न सार असारविचारें॥ लौकिकशब्द विचित्र पररुपर बैठ उचारें ॥ कह गिरिधर कविराय आपको मान्योसिरपा॥ भयो मलिन संकलप देह अध्यासकी किरपा॥४७१॥

कबित्त ।

पूंछ पूंछ वदन राखें पूँछनके केशनाखें मधुर मधुर बैन भाषें कहैं हम ज्ञानी हैं ॥ देहको असत्य कहैं विषयन में मन बहैं भोगन को चित्त चहैं यही तो हैरानी हैं ॥ जब आपको जाना तनु मिथ्या कर माना फेर चहैं खूब खाना तो जानिये तूफानी हैं ॥ शकल औलियाओं की काम शैतानों के जंबुककी चाल चलैं सिंह जैसी बानीहैं॥

सवैया ।

तिल तैलके संग लहे दुखको रस संगहि ते जग ईख पेड़ाये ॥
फलसंग ते पादप ईंट सहै अरु गंधके संग ते फूल तपाये ॥
करतंदुल संगति को जग में पुनि शीश विषे तुष मूशल खाये ॥
तिल ईख समं कर खोटन संगत या जग में दुख कौन नपाये॥४७३॥

जिनके रथ नेमि दरारन के सत सागर हैं अबलौं जग माहीं ॥
जिन चापन गोशनके बल ते सभ शैल बटोर धरे धर माहीं ॥
सुर राज डरे जिनके बलते यमराज जिते जिहिं ने जग माहीं ॥
मनते जस भीतर नाहिं रहे अब और रहे कहु को जग माहीं॥४७४॥

नादके लोभ तजे मृग प्राण सो बीन सुने अहि आप बँधाये ॥
मीन सो त्याग अगाध जलै उर लोभ जगे गल लोह पढ़ाये ॥
कागज़ की पुतली करिनी वश मत्त गयंद सों अंकुशखाये ॥
या भुविमंडल माहिं सुनो उर लोभ करे दुख कौन न पाये ॥४७५॥

नभमें सुरलोक रचे हरजी अरु भूमि विषम निधि क्षीर बनाये
मणि हीरन की गिरि कूट रचे फल फूलनके वन कोटि उपाये ॥
सब लोकनको प्रभु पोषतहो सभभूख मिटे तुम में मनलाये ॥
बिन प्रेम कहा फल फूल दिये बिन ते पद पंकज की रज पाये॥४७६॥
वर कौन मँगों तुमते हरिजी थिर नाहिं रहे जग भीतर कोई ॥
नहिं राज रहे गज वाजि रहे तनुलौं मिटिजाय पिखों जग जोई ॥
बिन ते पद कंज लहे न कहूं सुख जो नर दूर फिरे तिहुँ लोई ॥
पद मंजुल जो सनकादि भजें तिनकी प्रभु सेव दिजे मम सोई॥४७७॥
विधि एक अनीति रची जग में शुभ संतनके तन पेट लगायो ॥
मुख चार न फेर विचार कियो तृण पल्लव नाहिं अहार बनायो ॥
अति दीन मलीन दुखी नर जो तिनके घर भीतर भीख मँगायो ॥
मनके अनुसार रचे जग को विधि जानत हों नहिं सीख बनायो४७८॥
खान मिला अरु पान मिला बहु मान मिला धन धाम रहाई ॥
कुल मोट मिला गढ़ तोप मिला पृथ्वीराज मिला सैना बहु पाई ॥
पुत्र मिला और पौत्र मिला बहु मित्र मिला दिन दिन अधिकाई ॥
गज वाजी मिला बहु ताजी मिला सबही सुख धूर समान कहाई४७९॥
प्रेम लग्यो परमेश्वर सों तब भूल गयो सगरो घर बारा ॥
ज्यों उन्मत्त फिरे जितही तित नेक रहे न शरीर सँभारा ॥
श्वास उसाँस उठे सभ रोम चले दृग नीर अखंडित धारा ॥
सुंदर कौन करे नवधा विधि छाक पर्‌यो रस पी मतवारा ॥४८०॥

कवित्त ।

नीर बिन मीन दुखी क्षीर बिन शिशु जैसे पीरकी औषध बिन कैसे रह्यो जात है ॥ चातक ज्यों स्वाति बूंद चंद को चकोर जैसे चंदनकी चाहकर सर्प अकुलातहै ॥ निर्धन ज्यों धन चाहे कामी- नी को कंत चाहे ऐसी जाकी चाह ताहि कछु न सुहातहै ॥ प्रेमको प्रवाह ऐसे प्रेमतहां नेम कैसे सुंदर कहत यह प्रेमहीकी बातहै४८१॥

कुंडलिया ।

वानी बहुत प्रकार है ताको नाहीं अंत ॥ जोई अपने काम की

सोइ सुने सिद्धांत ॥ सोइ सुने सिद्धांत संतजन गावत होई ॥ चित्त आन के ठौर सुने जो नित प्रति सोई ॥ यथा हंस पय पिये रहै ज्यों को त्यों पानी ॥ ऐसे लहे विचार शिष्य बहु विधि है बानी॥४८२॥

सवैया ।

जानु भुजा कटि केहरि के सम कंज प्रभा दृग हैं मदमाते ॥
कोटि सुरागण नाचत हैं अरु गंधर्व आय सभी पुर गाते ॥
भौन भँडार अपार भरे धन या विधि आप रचे सो विधाते ॥
यों विध याहि भई तो कहा जब जानकीनाथ के रंग न राते४८३॥
दश चार सो भवन रचे जिनके इक आहि बली भूमंडल माहीं ॥
जिनके दशचार सो भवन बली इक त्याग गये तृण ज्यों धरमाहीं ॥
दशचार सो भवन को भोगत है इक एकहि राज करे जग माहीं ॥
दश बीस ग्रामको राज लहे नर क्यों गरबे अपने उर माहीं ॥४८४॥
धन ईश दियो जग भीतर जो विन बुद्धि गयो न कछू फलपाये ॥
शुभ संतनकी नहिं सेव करी अरु विप्रन ते नहिं यज्ञ कराये ॥
नहिं कूप खने जल हेत कभी धर भीतर ना जल ताल बनाये ॥
बल हीनन को सुख दान दिये नहिं दीननको दुख दूर मिटाये ॥
अपने हित त्याग करे परको हित ते नर उत्तम हैं जग माहीं ॥
अपने हित संग करे परको नर आहि समान वही भव माहीं ॥
अपने हित नाश करे परको हित राक्षस हैं नर ते जग माहीं ॥
विनही अपने हित नाश करे पर को हित ते नर कौन कहाहीं४८६
जो सुख है सतसंगति में चतुरानन में सुख नेक नपायो ॥
सो सुख इंद्रके लोक नहीं अरु सो सुख शंभु के ध्यान न आयो ॥
सो सुख जाप न ताप किये अरु सो सुख योग न ज्ञान दृढ़ायो ॥
सो सुख है सत संगति में अविनाशी के रूप में जाय समायो ॥४८७॥

राग प्रभाती ।

आपे खेल खिलारी सतगुरु आपे लीला धारी है ॥ आसमान तैं तंबू बनाया जमीं गलीचा भारी है ॥ चंद्र सूर्य्य दोउ मिसल बनाये तेरी कुदरत न्यारी है ॥ राम नाम का चौपड़ मांड्या तू पाँसा जग

सारी है ॥ पाँसा चाहे तिसे जितावे सारी कौन विचारी है ॥ पंजो छिकयों नरद बचावें वाजी कठिन करारी हैं ॥ जिसकी नरद पक्की घर आवे सोइयो सुघड़ खिलारी है ॥ शृंगी जैसे वनमें लूटे शंकर नेजा धारी है ॥ बड़े बड़े हंकारी लूटे रैयत कौन विचारी है ॥ जिनको बल है सतगुरु पूरा तिनका जगत भिखारी है ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो अबके जीत हमारी है ॥

धन धन केशवा कटत कलेशवा गावत शेश महेशवा रे ॥ गज के कारण धाये प्यादवा नाम धरायो हरि संगवा रे ॥ प्रह्लाद दास प्रह्लाद वाके कारण रघवाके भये अब बघवा रे ॥ ४८८ ॥

शब्द ।

रास फकीरी उन्हांदी थींदी बाग़ जिन्हांदा हरया ॥ अंद्रो शादी बाहरों बादी इशक नगारा धरया ॥ शूरा ठिल्ल बड़या बिच रणदे मौतों मूल न डरया ॥ हरगोविंद ओही शूरमां जो पंज जित घर बड़या

पंजे मेरे बीर प्यारे नाउँ पंजांदा छेया ॥ पंजे मैनूं एउं लगरहे ज्यों कमली नूं लेहा ॥ पंजे उठके करन तगादा इक्को पंजां जेहा ॥ हरगोविंद इक बस्य न हुंदा दोस पंजां नूं केहा ॥ ४८९ ॥

यह मन लोभी लालची आखे मूल न लग्गे ॥ कन्नीं सुणदा आंखी देखे वाणी मूल न लग्गे ॥ श्रीभागवत गीता पढ़दे देखे पोण हुलारे वग्गे ॥ हरगोविंद सभ रुढ़दे देखे काम लहर अग्गे४९०

श्वासो श्वासीं कर गुजारा तेरा साहिब भला करेसी ॥ छड तकब्बर ढेह पौ बूहे तेरी कदीं तां कूक सुनेसी ॥ सत संतोष न छड्डीं बंदे होनी होय सो होसी ॥ हरगोविंद उठ भजन करो प्रभु बिरद की लाज रखेसी ॥ ४९१ ॥

सवैया ।

नाहिं फले जग माहिं निशेश दिनेश फले जग में कहु काहीं ॥
पुण्य विना फल आहि कहा विधि लोक सो भूमि रसातल माहीं ॥
नाहिं सुरेश फले जग में सो महेश फले जगमें कहु काहीं ॥
और फले नहिं को जग में कृत पुण्य फले द्रुम ज्यों ऋतु माहीं४९२

इक देवहिं वंदत हों भुव में जोइ चातुर ते खल सेव कराये ॥
जग भिक्षुकको छिन एक भये महि मंडल राजको सूख भुगाये॥
महि मंडल के पति को छिन एक दरही दर मांहिं सो भीख मँगाये॥
भूमांहिं अगाध गती तिनकी सभ हार परे गति कोय न पाये ॥४९३॥
ढिग बैठ धनी नरके हरिजी निज प्राणन रोक सु बैन उचारे ॥
नहीं बैठ तपोवन में हरिजी फल खाय सदा तव नाम सँभारे ॥
धन पावन को निशि नींद तजी हरि पावन को नहिं नैन उघारे ॥
जग में शुभ काज बिसारत हों विधि कौन सुधा सुख पाऊं मुरारे ॥
तातको आयसु मान चले जिनके पद पंकज पूजत लोई ॥
राज विभूति तजी छिन में बनको निकसे जननी बहु रोई ॥
तोन फिरे पुर को हरजू जब भ्रात गहे कर में पद दोई ॥
धर्म बराबर राज नहीं यह सूचक राम सनातन जोई ॥ ४९५ ॥
रघु भूप दिलीप तजी क्षितिमें अरु जाय बसे सो तपोवन माहीं ॥
अज नाभिको नंदन त्याग विभूति गयो वनको न रमे पुर माहीं॥
महि मंडल राजको त्याग दियो पुर मंडल त्यागन में श्रम नाहीं॥
अब और न बात कहा कहिये रघुवीर बिभूति तजी छिन माहीं४९६॥
जे चतुरानन के सुत चार गही न विभूति रमे हरि माहीं ॥
यद्यपि है हरि पूरण ते अबलौं रति है शुभ संतन माहीं ॥
शेष समीप सुने हरिको यश शंभु समीप सदा चल जाहीं ॥
होवत हैं गुण उत्तम नाश कुसंगतिते सनकादि डराहीं ॥ ४९७॥
शेशधरे धरनी शिर में अरु सूर फिरे सो सदा नभमाहीं ॥
धार गदा अबलों हरिजी बलि द्वार रहे सो पतालके माहीं ॥
वेरहलाहल लोक चरे दृढ़ शंकर नीठ धरे जग माहीं ॥
प्राणसमान धरे व्रत को दुख भूरि भये व्रत टारत नाहीं ॥ ४९८ ॥

कवित्त ।

एक ब्रह्म मुख सों बनाय कर कहतहै अंतःकरण तो विकारन सों भरयोहै ॥ जैसे ठग गोबरको कूपो भर राखत है सेर पंच घृत लेके ऊपर ज्यों करयो है ॥ जैसे कोई भांडे माहिं प्याज को छिपाय

राखे चीथरा कपूरको ले मुख बांधि धरचो है ॥ सुंदर कहत ऐसे ज्ञानी हैं जगत माहिं तिनको तो देख कर मेरो मन डरचोहै ॥४९९॥

देह सों ममत्व पुनि गेह सों ममत्व सुत दारा सों ममत्व मन माया में रहत है ॥ थिरता न लहे जैसे कंदुक चौगान माहिं कर्मन के वश मारचो धका को बहतहै॥अंतःकरण सदा जगत सों रच रह्यो मुख सों बनाय बात ब्रह्मकी कहत है ॥ सुंदर याहीते मोहिं अधिक अचंभो आहि भूमि पर परचो कोऊ चंद्रको गहत है ॥ ५०० ॥

एकनके वचन सुनत अति सुख होय फूल से झरत हैं अधिक मन भावने ॥ एकनके वचन तो असि मानो वरषत श्रवनके सुनत लगत अलखावने ॥ एकन के वचन कटुक कटु विष रूप करत मरत छेद दुख उपजावने ॥ सुंदर कहत घट घट में वचन भेद उत्तम मध्यम अरु अधम सुहावने ॥ ५०१ ॥

प्रथम हिये विचार ढीम सों न दीजे डार ताहीते सु वचन सँभार कर बोलिये ॥ जाने न कुहेतहेत भावे तैसी कहे देत कहिये सो तब जब मन माहिं तोलिये ॥ सबहीको लागे दुख कोऊ नहीं पावे सुख बोलके वृथाही ताते छाती नहीं छोलिये ॥ सुंदर समझ कर कहिये नीकी बात तबहीतो वदन कपाट गृह खोलिये ॥ ५०२ ॥

और तो वचन ऐसे बोलत हैं पशु जैसे तिनके तो बोलबे में ढंग हूं न एक है ॥ कोऊ रात दिवस बकत ही रहत ऐसे जैसी विधि कूपमें बकत मानो भेक है ॥ विविध प्रकार कर बोलत जगत सब घट घट प्रति मुख वचन अनेक हैं ॥ सुंदर कहत ताते वचन विचार लेहु वचन तो वही जामें पाइये विवेक है ॥ ५०३ ॥

वचन ते आन मिले वचन विरोध होय वचन ते राग बढे वचन ते दोष जू ॥ वचन ते ज्वाल उठे वचन शीतल होय वचन ते मुदित वचन ही ते रोष जू ॥ वचन ते प्यारो लगे वचन ते दूर भगे वचन ते मरजाय वचन ते पोष जू ॥ सुंदर कहत यह वचन को भेद ऐसो वचन ते बंध होत वचन ते मोष जू ॥ ५०४ ॥

देख तो विचार कर सुने तो विचार कर बोले तो विचार कर

करे तो विचार है ॥ खाय तो विचार कर पीवे तो विचार कर सोवे तो विचार कर जागे तो न टार है ॥ बैठे तो विचार कर उठ तो विचार कर चले तो विचार कर सोई मतिसार है ॥ देय तो विचार कर लेय तो विचार कर सुंदर विचार कर याही निरधारहै ॥५०५॥

सवैया ।

जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत तो नित संत समागम कीजे ॥
अंतर मेट निरंतर ह्वैकर ले उनको अपनो मन दीजे ॥
वे मुख द्वार उचार करें कछु सो अनयास सुधारस पीजे ॥
सुंदर सूर प्रकाश भयो जब और अज्ञान सभी तमछीजे ॥ ५०६ ॥

कवित्त ।

धूल जैसो धन जाके शूल सो संसार सुख भूल जैसो भाग देखे अंत जैसी यारी है ॥ पाप जैसी प्रभुताई शाप जैसो सन्मान बडाई बिच्छुन जैसी नागिन सी नारी है ॥ अग्नि जैसो इन्द्रलोक विघ्न जैसो विधि लोक कीरति कलंक जैसी सिद्धि सी ठगारीहै ॥ वासना न कोई बाकी ऐसी मति सदा जाकी सुंदर कहत ताहि वंदना हमारी है ॥ ५०७ ॥

जिन तन मन प्राण दीने सभ मेरे हेत औरहूं ममत्व बुद्धि आपनी उठाई है ॥ जागत हूं सोवत हूं गावत हैं मेरे गुण करत भजन ध्यान दूसरो न काई है ॥ तिनके मैं पीछे लग्यो फिरतहों निशि दिन सुंदर कहत मेरी उनते बडाई है ॥ वेहैं मेरे प्रिय मैंहूँ उनके अधीन सदा संतनकी महिमा तो श्रीमुख सुनाई है ॥ ५०८ ॥

साँचे उपदेश देत भली भली शिखदेत समता सुबुद्धि देत कुमति हरतहैं ॥ मारग दिखाय देत भावहूं भगति देत प्रेमकी प्रतीत देत अभराभरतहैं ॥ ज्ञान देत ध्यानदेत आतम विचारदेत ब्रह्मको बताय देत ब्रह्म में चरत हैं ॥ सुंदरकहत जग संत कछु लेत नहीं संतजन निशि दिन देबोही करत हैं ॥ ५०९ ॥

सवैया ।

प्रीत की रीत कछू नहिं राखत जाति न पाँति नहीं कुल गारो ॥

प्रेमको नेम नहीं कहुँ दीसत लाज न कान लग्यो सब खारो ॥
लीन भयो हरिसों अभ्यंतर आठोंही याम रहै मतवारो ॥
सुंदर कोउक जानसके यह गोकुल गामको पैंडो ही न्यारो ॥५१०॥
है दिलमें दिलदार सही अँखियां उलटी कर ताहि चितैये ॥
आबमें खाकमें बादमें आतश जानमें सुंदर जानजनैये ॥
नूरमें नूरहै तेज में तेजहिं ज्योति में ज्योति मिले मिल जैये ॥
क्या कहिये कहते न बनै कछु जो कहिये कहतेही लजैये ॥५११॥

कवित्त ।

जाहिके विवेक ज्ञान ताहि के कुशल भयो जाही ओर जाय वाको ताही ओर सुख है ॥ जैसे कोई पायँन पैजारको चढ़ाय लेत ताको तो न कोऊ कांटे खोबरे को दुख है ॥ भावे कोऊ निंदा करै भावे तो प्रशंसा करै वे तो देखे आरसी में अपनोहीमुखहै ॥ देहको ब्योहार सभ मिथ्याकर जानतहै सुंदर कहत एक आत्माही रुखहै ॥

सवैया ।

सूरके तेजते सूरज दीसत चंद्रके तेजते चंद्र उजासी ॥
तारे के तेजते तारे हूं दीसत बीजुली तेजते बीज चकासी ॥
दीपके तेजते दीपक दीसत हीरेके तेजते हीरोही भासी ॥
तैसेही सुंदर आतम जानहुँ आपके ज्ञान ते आप प्रकासी ॥५१३॥

कवित्त ।

एक तो श्रवण ज्ञान पावक ज्यों देखियत माया जल परसत बेगि बुझि जात है ॥ एक है मनन ज्ञान बिजली ज्यों धन मध्य माया जल बरषत तामें न बुझातहै ॥ एकनिदध्यासन ज्ञान बडवा अनल जैसे प्रगट समुद्र माहिं माया जल खात है ॥ अनुभव साक्षात ज्ञान प्रलैकी आगिनि सम सुंदर कहत द्वैत प्रपंच बिलात है५१४ ॥

भोजनकी बात सुन मनमें मुदित भयो मुखमें न परै जौलौं मोलिये न ग्रासहै ॥ सकल सामग्री आन पाकको करन लागो मनन करत कब जेवों यह आस है ॥ पाक जब भयो तब भोजन करन

बैठो मुख में मेलत जाय यह निदध्यासहै ॥ भोजनपूरण कर तृपित भयो है जब सुंदर साक्षातकार अनुभव प्रकास है ॥ ५१५ ॥

जबहीं जिज्ञासा होय चित्त एक ठौर आन मृग ज्यों सुनत नाद श्रवण सों कहिये ॥ जैसे स्वाति बूंद हूंको चातक रटत पुनि ऐसेही मनन करै कब बूंद लहिये ॥ रात्रिको चकोर जैसे चंद्रमाको धरै ध्यान ऐसे जान निदध्यास दृढ़ कर गहिये ॥ यही अनुभव यही कहिये साक्षातकार सुंदर पारे ते गल पानी होय रहिये॥५१६॥

काहूको पूछत रंक धन कैसे पाइयत कान देके सुनत श्रवण सोई जानिये ॥ उन कह्यो धन हम देख्योहै अमुक ठौर मनन करत भयो कब घर आनिये ॥ फेर जब कह्यो धन गाड़्यो तेरे घर माहिं खोदन लग्यो है जब निदध्यास ठानिये ॥ धन निकस्योहै जब दारिद गयोहै तब सुंदर साक्षातकार नृपति बखानिये ॥५१७॥

सवैया ।

ऋषि नारि तरी कपि रीछ तरे सो लँगूर तरे जिहिं नाम उचारे ॥
बन भील सुता जिहिं नाम तरी सो जटायु विहंगम जाहिं उधारे ॥
अब चेतन बात कहाकहिये जड भूधर नाम तरे निधि खारे ॥
अब औसर राम भजो मनरे दुख मेट तरो भवसागर पारे ॥ ५१८ ॥

भव हारकके चित नेम कहे यम है भव हारक और बखाने ॥
इक त्याग्र कहै इक दान कहै इक योग सो साधन कै उर ठाने ॥
यज्ञ एक कहे तपसा परसाधन तीरथबास सो एक प्रमाने ॥
ब्रज है भवहारिक एक भने हमतो इक रामहिं नाम पछाने ॥५१९ ॥

जग मानव देह मिलै त सदा नर राम भजो जिहिंते सुख पावो ॥
जग भोय बराटकके बदले न अमोलक लाल अकाज गँवावो ॥
लरकापन जाठर में बल छीन सो यौबन में दृढ़ पुण्य कमावो ॥
शुभ सीख इहै जन मान चलो जिहिंते नहिं अंत समय पछतावो ॥

जम रूखन सूखन भोजन कै फल फूलन कै तनु पालन कीजे ॥
जग बैठ जहां तहँ ठौर भली प्रभु पावनको उर जाप जपीजे ॥

तृण कोमल बीन बिछाय भले दृग नींद भरे घर माहिं सोईजे ॥
धूरत मूढ़ दियाकुल बैन सो भूपति के नाहिं पास बहीजै ॥ ५२१ ॥
शैल शिला तल सेज करे गिरि कंदर ही गृह है वन माहीं ॥
पादप छाल सो चीर धरे अरु मीत सखा मृग हैं वन माहीं ॥
भोजन पादपको फल है जलपान करे गिरता गिरि माहीं ॥
पेट के हेत न सेव करे नर ते नर ईश गिने भव माहीं ॥ ५२२ ॥
धन्य भई तिनकी जननी किरतारथ सो जग वेदन गाई ॥
कुल पावन ताहि करी सगरी जग धन्य भई तिन मीत सखाई ॥
पद कंजन तासु पुनीतधरा रज पावन ते जन पाप मिटाई ॥
जो भूमंडल माहिं भजे छिन एक एकागर राम सहाई ॥ ५२३ ॥

कुंडलिया।

बादल दौरे जातहैं दौरत दीसत चंद ॥ देह संग ते आत्मा चलत कहे मतिमंद ॥ चलत कहे मतिमंद आत्मा अचल सदाही ॥ हलत चलत यह देह थापले आतम माहीं ॥ सुंदर चंचल बुद्धि समझ तातें नहिं बौरे ॥ दौरत दीसे चंद जात हैं बादल दौरे ॥ ५२४ ॥

सब कोऊ ऐसे कहें काटत हैं हम काल ॥ काल नाश सब को करै बृद्ध तरुण अरु बाल ॥ बृद्ध तरुण अरु बाल शाल सबहिन को भारी ॥ देह आपको मान कहत हैं नर अरु नारी ॥ सुंदर आतम अमर देह मरिहै घर खोऊ॥ काटत हैं हम काल कहत ऐसे सभ कोऊ॥

राग माली गौड ।

हरि नाम ते सुख ऊपजै मन छांड आन उपायरे ॥ तनु कष्ट कर कर जो भ्रमे तो मरण दुःख न जायरे ॥ गुरु ज्ञानको विश्वास गह जिन भ्रमे दूजी ठौर रे ॥ योग यज्ञ कलेश तप व्रत नाम तुल्य न और रे ॥ सब संत यूंहीं कहत हैं श्रुति सुमृति ग्रंथ पुराण रे ॥ दास सुंदर नाम ते गति लहे पद निरवाण रे ॥ ५२६ ॥

राग मारू ।

सोई जन रामको भावैहो ॥ कनक कामिनी परिहरे नाहिं आप

बँधावे हो ॥ सबही सों निरवैरता काहू न दुखावैहो ॥ शीतल वाणी बोलके रस अमृत प्यावै हो ॥ कै तौ मौन गहेरहे कै हरि गुण गावै हो ॥ भर्म कथा संसारकी सब दूर उडावै हो ॥ पांचो इंद्रिय वश करै मन मनहिं मिलावै हो ॥ काम क्रोध अरु लोभको खन खोद बहावै हो ॥ चौथापदको चीन्हके ता माहिं समावैहो ॥ सुंदर ऐसे साधके ढिग काल न आवैहो ॥ ५२७ ॥

राग बरवा ।

मानती ना प्यारी सखियां सब हारी हारी ॥ जब हरि वेष कियो युवतीको पहिन कुसुमरी सारी ॥ मुकुट उतार गुही शिर बेनी नख शिख मांग सवाँरी ॥ कुंडल त्याग तरोना पहिरे कंकण नूपुर वारी॥ काजर नैन कठिन कुच कंचुकि बेसर चूरी सवाँरी ॥ नखन महावर तिलक आडदे भये कपट नट नारी ॥ प्रण कर चले संग ललिता के मोहे देत हितकारी ॥ कृष्णदास आली करसों पकर लिये मिले कुंज पिय प्यारी ॥ ५२८ ॥

राग परज ।

रघुवर तेरोही दास कहाऊं ॥ तुमरोही नाम जपों निशि वासर तुम रेही गुण गाऊं ॥ तुमहीं मेरे प्राण जीवन धन तुम तजि अनत नजाऊं ॥ तुमरे चरण कमलको मधुकर रत्नहरी सुख पाऊं ॥५२९॥

राग भैरवी ।

डरदा डरदा अर्ज इक करदा ॥ सुन तैंनू दरियाउ मिहरदा ॥ तू लाडला दशरथ रघुवर दा ॥ कर बरदा मैंनू अपने घरदा ॥ रत्न हरि हुण केहा पड़दा ॥ ५३० ॥

राग होरी ।

मैंतो तुमसों होरी खेलों कान्ह सांवरे॥अबीर गुलाब भरेभर डारों यह मेरे मन चाव रे ॥ केसर रंग भिजोवों तोको भाग कहां अब जाव रे ॥ सब दिनकी अब कसर निकारों कहा करोगे रावरे ॥ रत्नहरी प्रभु या होरी में लाग्यो हमरो दाव रे ॥ ५३१ ॥

राग कालिंगड़ा ।

होरी नंद नंदन खेलें अब कैसे लाज रहे ॥ जो कोउ जाय यमुन जल भरने वाहीपै रंग बहे ॥ बाट चलत वह ढीठ लँगरवा बरजोरी वैयां जोगहे ॥ रत्नहरी या व्रजको बसिवो अब कैसे निबहे ॥५३२॥

राग केदार ।

पूरी न परत प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी खंभ हूं से निकस नरसिंह देह धारी है ॥ द्रौपदीकी लाज काज द्वारका से धाये आली संकट बिडार गज दीन हितकारीहै ॥ सुदामा गरीबके मंदिर कनक कियो गौतमकी नारी चरण छुइ उभारी है ॥ विनती करों रामचंद्र सुनिये दशरथके नंद एते काज कियो प्रभु मेरे काज भारी है ॥५३३॥

कवित्त ।

गर्व ते सुलख जाय सूमता ते यश जाय कुलाल हूं ते कुल जाय योगजाय कुसंगते ॥ लाड़किये पुत्र जाय शोकते शरीर जाय भूख मरयादा जाय बुद्धिजाय भंगते ॥ कपटकिये मित्र जाय लोभ ते बड़ाई जाय मांग हूं ते मान जाय पाप जाय गंगते॥ नीति विना राज जाय क्रोध ते तपस्या जाय रजपूती जाय जब मुड़े जात जंग ते ॥

राग गौरी ।

कदम चढ़ लाल बुलावत गैयां ॥ बंशी टेर सुनी जब श्रवणन जहँ तहँ ते उठ धैयां ॥ आवोरे सब सखा संगके कर पावो इक ठैयां ॥ गोविंद प्रभु बलदाऊ से कहत हैं अब घरको बगदैयां ५३५॥

राग बिलावल ।

सखीरी मुझे आज मिले नँदलाल॥मोरमुकुट मकराकृत कुंडल गल वैजंती माल ॥ पीत वसन घनश्याम मनोहर घूंघरवाले बाल ॥ देख देख मोहनकी छबिको तनक न तनकी सँभाल ॥ लक्ष्मी नारायण को जाने आगे कौन हवाल ॥ ५३६ ॥

राग सोरठ ।

डगर में प्यारी आज मिले कहीं श्याम ॥ लट पट पाग सोहे पचरंगी पीतांबर अभिराम ॥ नख शिख अमित आभरन मनोहर वंशीधर गुणधाम ॥ देख जाय पद नखकी शोभा कोटि लजावत काम ॥ लक्ष्मी नारायण दर्शन बिन तलफूं आठों याम ॥ ५३७ ॥

सवैया ।

लालहीं लालके लालही लोचन लालनके मुख लालही बीरा ॥
लाल बनी कछनी कटि लालके लालके शीश सुलालही चीरा ॥
लालही बाग बने अति सुंदर लाल खड़े यमुनाजुके तीरा ॥
गोविंद प्रभुकी शोभा वरणी लालके कंठ विराजत हीरा ॥ ५३८ ॥
पीरो कुंडल पीरो नूपुर पीत पीतांबर ओढ़े ठाढ़ो ॥
पीत बनी कटि काछनियां अरु पीरो खोर बन्यो चहिं गाढ़ो ॥
पीरो मुकुट लालको सोहे पीरो खोर बन्यो पटुकाको ॥
गोविंद प्रभुकी शोभा वरणी पीरो लकुट लियो हथ गाढ़ो ॥ ५३९ ॥
धौरे मोहन धौरे सोहन धौरे चंदन खोर विशाल ॥
धौरे कडे कर हाथन सोहें धौरे सोहें गल फूलनहार ॥
धौरा दधि बेंचन को निकसी रोकत मोहिं नंदको लाल ॥
गोविंद प्रभुकी शोभा वरणी धौरी सोहे गल मोतियन माल ॥५४०॥
कारे मोहन कारे सोहन चल कालिंदी के तट आयो ॥
कालि कलिंदी कारी नागिन कारो नागन जाय जगायो ॥
कारे नाथ लियो छिन में जब शीशके ऊपर निरत करायो ॥
गोविंद प्रभुकी शोभा वरणी कारो नाथके नाथ कहायो ॥ ५४१ ॥

राग सोरठ ।

चल हरि तोहिं बुलावे श्रीराधे ॥ तोरे संग है प्रीत श्यामकी और त्रिया नहिं भावे ॥ राधा राधा करत रहत हैं खान पान नहिं भावे ॥ कृश तनु भयो वियोग तुम्हारे वंशी नाहिं बजावे ॥ सूर श्याम पै चलो सखीरी काहेको मिनत करावे ॥ ५४२ ॥

राग पीलो ।

प्यारी लाल तोरेरी आधीन ॥ सुन सजनी हम सांची बखानें तुम जल हो वह मीन ॥ तोरे रस वश श्याम सुंदर मन जो वर चाहत दीन ॥ विठ्ठल विपुल विनोद विहारन होत मनावत लीन ॥

प्यारीलाल तोरे ललित गुण माने ॥ सुन सजनी हम सांची बखाने चल सुन अपने काने ॥ जो तुम श्याम होवे वह श्यामा तो तुम वेदन जाने ॥ विठ्ठल विपुल विनोद विहारन वादही रूसा ठाने ॥

राग बरवा ।

लाडिली प्यारिये दर्शन देहु लाडिली प्यारिये ॥ ललिता कहे सुनिये प्यारी राधे मानले अर्ज हमारिये ॥ यहतो बातें तोहि कोन सिखावे मान तजो मिलो कुंज विहारिये ॥ विठ्ठल विपिन विनोद विहारन श्रीवृषभानु दुलारिये ॥ ५४५ ॥

आपन चालिये महाराज लाला न कीजिये लाज ॥ मैंतो तिहारी आज्ञाकारिन कहा कहो ब्रजराज ॥ मोसी जो तुम कोटि पठावो प्यारी नहीं मानत आज ॥ सूरदास बड़जन जो कहगये आप काज महाकाज ॥ ५४६ ॥

राग विहाग ।

प्यारी नेक निरखो नवरंग लालहिं ॥ तोहि पद पंकज तल रज वंदत तिलक बनावत भालहिं ॥ तेरे वर्ण वसन आभूषण उर चंपेकी मालहिं॥श्री विठ्ठल विपिन विनोद विहारन भुज भर वाहि विशालहिं ॥

राग सोरठ।

श्री राधे नामकी वलिहारी ॥ जाके नाम लिये दुख नाशें सुखके हो अधिकारी ॥ शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक मुनिजन नर औ नारी ॥ हित आनंद पर कृपा कीजिये श्रीवृषभानु दुलारी ॥ ५४८ ॥

राग कान्हरो ।

श्रीराधे राधे राधे हो श्री राधे राधे राधे ॥ वृषभानु नंदनी जगत वंदनी अद्भुत रूप अगाधे ॥ जाको रूप जगतको मोहे सुख संपति

लिये साधे ॥ रूप रसिक चितवन में बस भयो प्राण पपीहा बाधे ॥

राग सोरठ ।

मैं न जाऊं हरी पास री सजनी मैं न जाऊं हरी पास ॥ श्याम रचे अब और त्रियन सँग हमसों भये उदास ॥ करोरी कपटी अब हम चीनो आगे था विश्वास ॥ सूरश्याम पै मैं न जाउँगी आली तासम पठहैं पचास ॥ ५५० ॥

राग पीलो ।

चलरी नई कुंज बुलाई राधे ॥ तुम बिन व्याकुल कुँवर कन्हाई कहा मानजिया ठान रही अरु तुमसों चतुर न कोय ॥ छांडदेय निठुराई इतना कहा हमारा मानो नवनागर ब्रजबाल ॥ मनमोहन आधीन तिहारे बिहरो दे गल बाहिं कारण कौन रुसाई ॥ या सुन प्रीति किशोरी किशोरी उर बाढ़ी नंदलाल ॥ वेग उठी मिलि धाय पिया सों मदन खुशाल मनाई बहुत भांति समुझाई ॥ ५५१ ॥

राग बसंत ।

देखो देखो ब्रजबासिनके भाग ॥ मोहन सँग होरी खेलत फाग जाको निगम उचारें बारबार॥कछु कहि न सकें महिमा अपार॥ब्रह्मादिक जाको पावें न अंत ॥ सो ग्वारिन सँग खेलत बसंत ॥ एक कहैं मोरे बैठो आय ॥ एक कहे मुरली बजाय ॥ एक पीतांबर लेत छिनाय ॥ अद्भुत लीला लखी नजाय ॥ एक परस्पर करें बात ॥ एक माला गुंध ल्याई अनेक भांत ॥ एक बीड़ी विमल बनाय देत ॥ कर जूठे अपने हरिको देत॥एककहै चलो कुंज ओर॥जहाँ गुंजत कोकिल नचत मोर॥एक कहै कंधे उठाय॥परमानँद स्वामी रहे लुभाय५५२

नवल बसंत नवल श्रीवृंदावन नवलै फूले फूल ॥ नवलै कान्ह नवल सब गोपी निर्तत एकै तूल ॥ नवल कुमकुमा केसर नवलै नवलै बसन अमोल ॥ नवल यमुना जल पल्लव शाखा नवल पवनकी झूल ॥ नई नई छींट लगी केसरकी मेटत मनको शूल ॥ नये नये बाजे बाजत श्रीभट कालिंदीके कूल ॥ ५५३ ॥

देखो वृंदावनके कैसे भाग जहाँ राधा माधो खेलत फाग ॥ कई कोटिक ब्रह्मादिक कई कोटि इंद्र कई कोटिक आदित्य कोटि चंद्र जाको ध्यान धरत मुनिरहेहैंहार ॥ ताकोसकल गोप मिल देत गार जाके मोर मुकुट माथे तिलक भाल ललित माल लोचन विशाल ॥ जाको शेश सहस मुख लहे न अंत ताको गुण गावत नारद बेअंत जाको अगम निगम ते अगम पुंज सो तो हाहा करत फिरत कुंज कुंज ॥ सूरदास मैं तुमरो दास कबहूं न पावों यमकी त्रास ॥५५४॥

ऐसो बालक खेले नंद द्वार तीन लोक जाके मुख मँझार ॥ कान कुंडल जाके पदम पाउँ वसुदेव पिता देवकी माउ कोटि भानु जाका दिव्य शरीर सोतो धेनु चरावे यमुना तीर ॥ जाको निगम कहतहैं नेत नेत सोतो गोपनके सँग हेरी देत पाउँ पताल जाका शिर अकास ताको जानतहै कोउ हरिको दास ॥ शिव सनकादिक करत सेव ब्रह्मादिक जाको लहैं न भेव कहत कबीर जाको गुण अपार ताको सुमर सुमर नर उतरे पार ॥ ५५५ ॥

राग सोरठ।

देखोरी या बेनी गूंथी नंदके कुमार ॥ कर कोमल फूलनके गजरे औ पहराये हार॥तू बड़भागिन भानुनंदनी वश किये कृष्ण मुरार॥ उठ बखतावर मिल चल अबहीं छिन छिन होत अबार ॥ ५५६ ॥

राग बिलावल।

मोहन छबीला मन भामदा सैयो मैनूं ॥ मृदु मुसकामदा चित ललचामदा नाहक जी तरसामदा ॥ तान नमानी ने घायल करयां मन विच फंदा पामदा ॥ दिल विच उपजी आतश विरहोंदी ब्रजनिधि सैन चलामदा ॥ ५५७ ॥

सवैया।

बलि बासव जीतबको मत राख भली विधि सों उन यज्ञ पढ़ी ॥ सन्मानके दान दिये द्विज देवन नेकहूं नाहिन भौंह चढ़ी ॥

लकुटी पकडे हरि आये तहाँ मही मांग लई करवेको मढ़ी ॥ तहँ बावन के कर अंगके संग सुखी लकडी विन पात बढ़ी ॥ ५५८ ॥

राग झंझोटी ।

जादिन मन पंछी उड जैहै ॥ ता दिन तेरे तनु तरुवरके सबै पात झरि जैहै ॥ घरके कहे वेग ही काढो भूत भये कोउ खैहै ॥ जा प्रीतम सों प्रीति घनेरी सोऊ देख डरैहै ॥ कहँ वह ताल कहाँ वह शोभा देखत धूर उडैहै ॥ भाई बंधु कुटुंब कवीला सुमर सुमर पछितैहै ॥ विना गुपाल कोउ नहिं अपना यश कीरति रहजैहै ॥ सो तो सूर दुर्लभ देवनको सतसंगति में पैहै ॥ ५५९ ॥

राग बसंत ।

होये री त्यार वसंत खेलनको दशरथके सुतचार ॥ रामते लक्ष्मण भरत शत्रुहन चारों राजकुमार ॥ पहरे पीत पीतांबर बस्तर तुरियनके असवार ॥ उडत गुलाल लाल भये बादर केसर पडत फुहार ॥ घनियर गरजे वादर वरसे बिजलीकी चमकार ॥ या छबि निरख श्रीराम दूल्होकी अग्रदास बलिहार ॥ ५६० ॥

राजत राम जानकी जोरी ॥ चतुरनारि डारत तृण तोरी ॥ श्याम सरोज जलज सुंदर वर दुलहिनि तडित वरन तनु गोरी ॥ मंडप में दोउ ओर मनोहर गठत चूनरी पीतपिछोरी ॥ कनक कलश सज देत भाँवरी देख रूप शारद भइ बोरी ॥ ब्याह समय शोभित वितान तर उपमा कौन कहै मति थोरी ॥ मनो मदन मंजुल मंडप तर छबि शृंगार शोभा इक ठोरी ॥ सतानंद वाशिष्ठ आदिदै वंश प्रशंस करैं दोउ ओरी ॥ गान निशान वेद धुन सुन सुन सुर मुनि वर्षत सुमन झकोरी ॥ नैननको फल लेत मुदित मन सखि अशीश दे ईश निहोरी ॥ तुलसिदास छबि देख मगन भये क्या वरणों रसना इक मोरी ॥

राग भैरवी ।

सुन मैया मेरी तू जननी यह मोहिं बहुत खिझावैं ॥ ग्वाल बाल लेये संगहि खेलूं खेलन मोहिं न पावैं ॥ गह गह बाहिं लेजातीहैं घर

को करसों तालबजावैं ॥ मोहिं कहैं घर नाचरे छोरा माखन तोहिं खिलावैं ॥ नाचों तो नवनीत न देवें पीत पछोरीलावैं ॥ कोऊ कछनी छीन लेत है मुरली कोउ चुरावैं ॥ भागजाउँ पाछे पड़ मोको पुनि गह कंठ लगावें ॥ यह अनीति कैसे कर सहिये और ठौर उठजावैं ॥ मया राम सुन हँसी यशोदे झूठी चोरियां लावैं ॥ ५६२ ॥

राग कान्हरो ।

या मोहनके मैं रूप लुभानी ॥ हाटबाट मोहिं रोकत टोकत यस रसियाकी म सार नजानी ॥ सुंदरवदन कमलदललोचन बांकी चितवन मंद मुसकानी ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावें वंशी में गावें मीठीवानी॥तन मन धन गिरिधरपर वारूं चरणकमल मीरां लपटानी॥

राग होरी ।

होरीको छैल मोहिं ढूंढ़त डोलै अब कित्थे जाय छिपों मोरी दैया ॥ लाजभरी गारी वंशी में मेरो नाम लेले गावै कन्हैया ॥ सास सदा मेरे वैर पड़ी है ननद निगोरी करे लड़ैया ॥ कृष्ण जीवन लच्छी रामके प्रभु प्यारे फागन मास बड़ो दुखदेया ॥ ५६४ ॥

राग भैरवी ।

तू न भयो अपना रे लोभी मन ॥ यह संसार ओसको मोती जैसे रैनका सुपना ॥ जैसे आगको रोकत धूआं ज्यों दर्पण ढकना ॥ ऊधोदास दास यह गावे राम नाम जपना ॥ ५६५ ॥

राग गौरी ।

बांको छैल गुमानी मैया तेरो ॥ संग लिये लरिकनको डोले बोले अटपटी वानी ॥ वाट घाट दधि खोसही खावे और फोड़े जो मथानी ॥ दधि मेरो खायो घनेरो नायो भाजनको पछितानी ॥ आवे पौर दौर कर पकरों तू घर जाहि सयानी ॥ दामोदर घर दूध घनेरा नंद महरि मुसकानी ॥ ५६६ ॥

राग जंगला ।

मैंतो थारे दामन लगी जी गोपाल ॥ किरपा कीजो दर्शन दीजो सुध लीजो ततकाल ॥ गल बैजंती माल बिराजे दर्शन भई छे निहाल । मीराके प्रभु गिरिधर नागर भक्तनके रछपाल ॥ ५६७ ॥

जिन पायो ऊधो प्रेमहूं से पायोरे ॥ बिना प्रेम कछु हाथ न आयोरे ॥ घस घस चंदना लगावे मधुसूदना कहो काह योग उस कूबरी कमायोरे ॥ तुम जो कहत ऊधो प्रेम तज योग लीजे प्रेम कौन घाट योग कौन बड़ो आयोरे ॥ सूरश्यामजीके आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो तुम जो पठायो योग पानी में बहायोरे॥ ५६८॥

नेह जुरचो नँदनंदन सों अब कैसे लाज रहे मेरी सजनी ॥ यह अँखियां अब रह न सकत हैं देखे विना व्रजराज री सजनी ॥ अटके नैन माधुरी मुसकन भूल गये सभ काजरी सजनी ॥ देह ग्रेहकी सुध विसरानी रहो गिरो भावे आज री सजनी ॥ लोक लाज कुल कान छूटमई लवा निरख ज्यों बाजरी सजनी ॥ मयाराम अब ओट न कोऊ ज्यों खग सिंधु जहाज री सजनी ॥ ५६९ ॥

राग विहाग ।

मैंनूं अयानी संदेशा श्यामदा सुनो व्रजनार भला ॥ योगकी पतियां पठाई मोपे रल मिल करोरी विचार ॥ ऐसी करी जैसी देखी न सुनीरी हम सँग नंदकुमार ॥ सूर श्याम विन तरफत निशि दिन जाने त निपट गवाँर ॥ ५७० ॥

राग जैजैवंती ।

बहुत तुम कहत सभ चलो या मात पै तात रस मत्त यशुमत्त रानी ॥ देख लई लच्छ कर पुत्रकी पच्छ कर अच्छ भर बात हमरी न मानी ॥ चलो सब बाम गृह काम तज ढूंढ़िये घेर कर पकर कुल छाँड कानी ॥ देहिंगी धाम सन्मान सों कान्हको बांध कर देहु भये नये दानी ॥ लेगये श्याम वन धाम

सब सखिनको झपट पट ओट वंशी बजानी ॥ निज मुख आपही बोल उठे बाजी कहूं बाजी कहे या दिशा बजत जानी ॥ ८७१ ॥

गज़ल ।

यशोदा ढीठ है तेरो किशोरी ॥ झपट गह चट मेरी बैयां मरोरी ॥ गई दधि बेचबे मैं ब्रजकी खोरी ॥ कह्यो मुसकायके कहँ जात गोरी ॥ अचानक टार घूंघट पट कन्हाई ॥ लगायो कंठ मोतिन माल तोरी ॥ भरी शिरसे गगरिया धरणि पटकी ॥ बहुत हटकी न मानी एक मोरी ॥ कियो मोहिं बावरी चितवन मिलाके ॥ न जानूं कौनसी डारी ठगोरी ॥ महरि तैंने अनोखो पूत जायो ॥ फिरे वन वन करे माखन कि चोरी ॥ बसेंगी जायके कहिं अंत ठौरें ॥ युगल चरणों में मैं करती निहोरी ॥ ८७२ ॥

राग देश ।

चलोरी आली वंशीबट तीरें ॥ रट लागी श्रीराधे राधे नागर नटवर श्याम शरीरें॥कहूं लकुट कहुँ मुकुट पीत पट शिथिल अंग मन विरह अधीरें ॥ ललित किशोरी सुन व्याकुल गति चल मिल मेटो मदनकी पीरें ॥ ८७३ ॥

सवैया ।

शैल कपीचर पार परे यहि भाँति सुन्यो हरिजी बल तोरा ॥
है मन चंचल वानर सों अरु शैल समान सो चित्त कठोरा ॥
नाहिं करी तपसा तुमरी बल औसर बैन सुनो प्रभु मोरा ॥
नाथ भले बलवान हुते मम दासकी बेर भयो बल थोरा ॥ ८७४ ॥
गह तंदुल ब्राह्मणके करसे तब आपदा ताकी दूर निवारी ॥
गज कंज दिये तब ग्राह कटे फल खायके भील सुता सों उधारी ॥
फल फूलन माल गही कुब्जा तब कूबरीकी कटि नाथ सवाँरी ॥
बिन मूल नकाम करो हरिजी जग लोगन की मति तैं उर धारी ॥
गुण थोरेहि ते प्रभु रीझ रहो वह भूल गई अब बानि तुम्हारी ॥
फल फूलन ते वन भील सुता मथुरा पुर में हरि कूबरी तारी ॥

मणिका गजराज उधार करे तब दयालु हुते सुमुकुंद मुरारी॥
अबकै करुणा हरि पीठ दई अरु कै फारचो कर कागज कारी ५७६
कब आवैंगे मम ऊपर ते दिन देह रटे मम गंग किनारे ॥
सबही जगते पुनि शांत लहे सुख नाम सो शीश गंगोदक धारे ॥
पुनि बैठ शिला तल में हरिकी पदवी दृग मेलके नीत चितारे ॥
हरि ध्यान समय तनु मोहिं गिरे जल मात समान सो गंग सँभारे५७७
जा जलको विधि पाल करचो पुनि पावन बावन पाद पखारे ॥
शंकर पावन हेर उरे पुनि शीश निरंतर सो जल धारे॥
भूप भगीरथ के तपसा पुनि जा जल सों कुल भूपति तारे ॥
सो जल पावन मैं परसों सो पिवों उर में बड़भाग हमारे॥५७८॥
कुंचित हैं अलका श्रुति ऊपर कुंडल हैं शुभ कानन माहीं ॥
कुंडलके कच मेचक में लसिकै तड़िता घन मेचक जाहीं ॥
बोल समय छबि पुंज तरंग कपोलन सागर ते निकसाहीं ॥
नैन हरे मद कंजनके सम आननके शशि कोटिन नाहीं ॥५७९॥
हरिके पद पंकज प्रेम करे न करे हरि बेमुख लोकन संगा ॥
नाहिं आपन मान सो भूल चहे पुनि औरन को न करै मन भंगा ॥
सभ और तजे जग अंग महा सो रहे हरि पूरण के रूप रंगा ॥
इक ठौर अहार करै न सदा शुभ संत धरे व्रत नीर विहंगा ॥५८०॥
हरि नाम भजे जग भीतर जो जननी सुत या विधि को उपजाये ॥
अथवा जननी सुत सोई जने रण भीतर जो अरिके दल घाये ॥
सिर लौं धन दान करे जग में शुभ कै जननी सुत योनि पजाये ॥
इन तीन विना कृमिके सुत के हित योवन नाहिं अकाज गँवाये ५८१

गज़ल।

नहीं हम वेदके वादी विरागी मन हमारा है ॥ नहीं हम वेष के योगी हमारा पंथ न्यारा है ॥ रहें हम सुन्न के मंडल जहां बहु

बेशुमारा है ॥ नहीं वहँ जाय हरयककी जहां हम जीव डारा है ॥ देखा दिल दूरबीनी से जहँ तहां पीव प्यारा है ॥ करैं हम एक की सेवा वली जिसका पसारा है ॥ ५८२ ॥

राग सारंग ध्रुपद ।

बैठे हरि राधा संग कुंज भवन अपने रंग कर मुरली अधर धार सारंग वही गाई है ॥ मोहन अतिही सुजान सर्व कला गुणनिधान एक तान जानबूझ चूकके बजाई है ॥ प्यारी जब गह्यो बीन चेत्यो तब गुण प्रवीन अति नवीन अतिनवीन ओही तान गाईहै ॥ वल्लभ गिरिधरन लाल रीझ दीनी अंकमाल भले जू भले दयाल संतन सुखदाई है ॥ ५८३ ॥

ग़ज़ल ।

आशिक हुआहूं उसपै जो नज़रों से दूर है ॥ साया उसीका यह जग जो कुछ जहूर है ॥ जो है ख्याल वहम फहम सों परे सनम् ॥ मुरशिदकी सैन बैन से हाजिर हजूर है ॥ औ साफ उसकी जात का क्योंकर करूं बयां ॥ क्या ताब है किसी में अकल क्या शऊर है ॥ घायल किया है मेरे तईं उसके इश्कने ॥ दिल जान उस सजन पै मेरा चूर चूर है ॥ यह काम आशकी का सुनो राम रूप से ॥ पहिले फना जो होय तो फिर वही नूर है ॥ ५८४ ॥

राग प्रभाती ।

बन पड़े तो नेकी करना आखिर तो है मरना ॥ धन यौवन के जोर जुलुम में इतना नहीं उछलना ॥ कभी जाल में फँस जावेगो जस जंगलको हरना ॥ गनी गरीबनको हक नाहक इतना नहीं रगरना ॥ दोदिनकी हशमत है तेरी साहिब सों कछु डरना ॥ कुफल करैं अधरमकी दौलत मिसल बांस का फलना ॥ अभी तुझे मालूम न पड़ता अंत पड़ेगा भरना ॥ जान बूझ टेढ़े रस्ते पर बंदे कदम न धरना ॥ देव देव कह राम राम भवसागर पार उतरना ५८५॥

कोई सफा न देखा दिल का यंह सांचा बना झिलमिल का ॥ कोइ बिल्ली कोइ बकुला देखा पहिरे फकीरी खिलका ॥ बाहर मुख सों ज्ञान छांटते भीतर गोरा छिलका ॥ औरनके पिसबे में शूरमां पटतर लोढ़ा शिल का ॥ राम नाम में अजब आलसी जैसे मरा मंजिल का ॥ राम लखन विन जप तप झूठा झूठा तप का फजिल का ॥ क्या कहें गुरुदेव न पाया महरम आंखके तिल का ॥५८६॥

तेरी खाक फकीरी दिल सें चाह न छूटी ॥ मान बड़ाई जादिन भाई तादिन किसमत फूटी ॥ अपने में सारो जग देखत रस की लूटा लूटी ॥ या मति बिन दिन दिन तनु छीयो शिर की कूटा कूटी पूरी बिपति महंती आई प्रीति राम से छूटी ॥ सेवा पूजा सभ ठग हारी मिसल जालकी खूटी ॥ चेटक नाटक नट विद्यासे सारी खिलकत जूटी ॥ मिले नहीं वसुदेव दुलारे प्राण सजीवन बूटी ५८७॥

हरिसों लागा रहुरे भाई तोरी बनत बनत वनजाई ॥ ऐसा भजन करो घट भीतर छोंड़ कपट चतुराई ॥ सेवा बंदगी और अधीनता सहज मिलें रघुराई ॥ दुनिया दौलत मालखजाना बनियां बेल चलाई ॥ एक बात मोहिं लाग अचंभव खोज खबर नहिंपाई ॥ स्याही गई सफेदी आई अब क्या करिहो भाई ॥ राम नाम सुमिरन नाहिं कीना विरथा जन्म गँवाई ॥ ध्रुव प्रह्लाद नाम से तर गये तर गये सदन कसाई ॥ हरिकी सरवर कौन करेगो नानक बात बताई ॥ ५८८ ॥

मुख सों राधा कृष्ण बोल तेरा क्या लगेगा मोल ॥ तेरे हाथ पावँ नाहिं हलते दस बीस कोश नहिं चलते गिरहों कि गांठ नहिं खुलती तू मनकी गुंडी खोल ॥ तेरा घोड़ा है बहु रंगी घोडेकी पांच बछेरी यह पांचों फिरें लुटेरी पांचों की बाग मरोर ॥ संसार काचकी बाजी तू किस पर होया राजी यह सकली सुपन समाजी तू तिस पर मन ना डोल ॥ तोहिं बहुत गुरू समुझावे तू फिर कर जन्म न पावे साँचा हरि चरणों चित लावे झूठे जग का नाता तोड़ ॥ ५८९ ॥

राग कालिंगड़ा ।

लाल तोहिं हौंहीं आज मनाऊं ॥ झीनी स्वर सों रट मुरली में राधे राधे गाऊं ॥ नटवर वेष बनाय आपनी भामिनि तुमहिं बनाऊं ॥ अलकन छिटक अंश अपने तब वेणी शीश गुथाऊं ॥ दे तव भाल अरुण बेंदी हौं केसर खोर लगाऊं ॥ तुम बैठो गह मौन मानिनी हौं बलि विनय सुनाऊं ॥ भ्रुकुटी तान विलोको तुम हौं ठोड़ी हाथ लगाऊं ॥ अंबर झटक मोर मुख बैठो हौं नच सन्मुख आऊं ॥ कुटिल बोल बोलो घूंघट ले हौं झुकि नैन मिलाऊं ॥ ललित किशोरी नवल वधू तुम हौं नव रसिक कहाऊं ॥ ५९० ॥

प्यारी हौं कैसे कर मान रचाऊं ॥ कैसे कर नैन तरेरौं तुमपै कैसेकर भौंहचढ़ाऊं ॥ कैसेकर बैन कुटिल निकसैमुख कैसे कर दीठ दुराऊं ॥ कैसेकर झटक नील पट कर सों हाहा तुमहिं खवाऊं ॥ कैसेकर विनय ललित मुख प्यारी इन श्रवणनहिं सुनाऊं ॥ ललित किशोरी श्रमित तुमहिं क्यों देख धीर उर लाऊं ॥ ५९१ ॥

राग सोरठ ।

पिया ते मैं क्यों कीनोमान ॥ मोहन आय झरोखा झांके मैं कीनो अभिमान ॥ लागी लगन गोपाल पिया तो छाँड दई कुल कान ॥ पुरुषोत्तम प्रभु आन मिलावो नातर तजूंगी प्रान ॥ ५९२ ॥

तुम सुनियेहो बलि राजा वसुधा काहूकी न भई ॥ सतयुग में हरणाकुश राजा चारो खूट मही ॥ अतिव प्रचंड महीपति राजा बाहूके सँग न गई ॥ त्रेता में रावण भयो राजा कंचन कोट मई ॥ इक लख पूत सवा लख नाती लंकड़ी काहू न दई ॥ द्वापर में दुर्योधन राजा नौलख भीड़ सही ॥ सोरा योजन वाके छत्र झुलत रहे माटी गिधन लई ॥ सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चारों युगन सही ॥ कहत सूर वेई नर झूठे जिन यह अपनी कही ५९३ ॥

राम नाम इक सार और सब झूठो है संसारा ॥ रामको नाम अमीरस भाजन सो मोहिं अधिक पियारा ॥ भाई बंधु अरु लोक कुटुंब सब मात पिता सुत दारा ॥ अंत समय कोइ काम न आवे देखो दृष्टिपसारा ॥ यह देही सुमिरनको दीनी मिलत न बारंबारा ॥ ताको पाय वृथा क्यों खोवत भजत न एको वारा ॥ जगतसिंधु में आन फँस्योहै उठत भँवर भ्रम भारा ॥ युगल चरण की नौका कीजे उतर जाय भवपारा ॥ ५९४ ॥

राग प्रभाती ।

रामप्रताप न जाने पिता तू रामप्रताप नजाने ॥ राज पाय बौराने ॥ नरका शंखा मधु मधुकैटभ हरणाकुश बलवाने ॥ तिन तिनका तिनका कर तोरचो ऐसे शारँग पाने ॥ जाकी कृपा भई जम विजयी तासों वैर सो ठाने ॥ देखो नैन रैन कर सुपना सब तज भज भगवाने ॥ रोम रोम रम रह्यो रमापति वेद पुराण बखाने ॥ निशिदिन अज हर ध्यान धरतहैं तू कैसे रिस माने ॥ सह नहिं सकत त्रास भक्तनको भक्तन हाथ बिकाने ॥ सब कल्यान ज्ञान कर देखो युगल चरण लपटाने ॥ ५९५ ॥

लावनी ।

कैसे करूं कछु कह नहिं आवत जिय दुख कैसा भारीहै ॥ कोई जाय रावल समझावो यह क्या बात विचारी है ॥ आठ मास दश गर्भ में राख्यो शरद गर्म ऋतु न्यारी है ॥ सो कैसे जननी विष प्यावे बाजी कठिन करारी है ॥ राम नाम उर सों नहिं छोड़त हठ कर कहत पुकारी है ॥ बार बार बहु विधि समुझायो विनती कर कर हारी है ॥ ५९६ ॥

हे माता मन सोच न कीजे राम नाम पद भारी है ॥ जहँ जहँ भीर परी भक्तन पर तहँ तहँ आय निवारी है ॥ घट घट में जल

DUE DATE SLIP.
